Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi
Anand g 1

13. E. 10.

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Ānandāmṛita-varshiṇī.

Anand Amrit Barsani

आनन्दाऽमृतवर्षिणी

آنند امرت برکھنی

श्रीमत परमहंस परिब्राजस्वामी आनंदगिरि
महाराजरचित

जिसमें

पञ्चदशी वेदान्तसार, तत्त्वानुसन्धान, श्रीमद्भगवद्गीता, आत्मबोध ग्रन्थ मांडूक्य, बृहदारण्य, छन्दोप निषद्, और पञ्चीकरण वार्तिकादि श्री शङ्कर भगवान्, भाष्यकार से आदिले अनेक आचार्य्यों के रचित ग्रन्थों का सारांश विशेष श्रुति वेदवाक्य और हरिभक्तों के ज्ञानभक्ति वैराग्य के दृढ़ार्थ श्री कृष्णचन्द्र परब्रह्म की महिमा और मुक्ति का उपाय दृष्टान्त पूर्व्वक बालकों के सुखबोध और पाठ निमित्त अति सुगम और ललित वार्तिक में वर्णित है ॥

चौथीबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई

नवम्बर सन् १८८३ ई०

विज्ञाप्ति

इस महीने अर्थात् अक्तूबर सन् १८८३ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वेदान्त	प्रस्थानव स्वर्गारोहन	मानसदीपिकाकोष	शंकरचरित सुधा
योगवाशिष्ठ	पर्व्व हरिवंश पर्व्व	आदि	उपदेश चन्द्रिका
सांख्य तत्त्व कौमुदी	महाभारत पर्व्व अलेह-	रामायण तुलसी कृत	मंगल बिनोद
कैवल्य कल्पद्रुम	दा भी हैं	टीका सुखदेव कृत	विजय चन्द्रिका
ज्ञानतरंग	१- आदिपर्व्व	तथा जिल्द बंधी	सिद्धान्त संग्रह
प्रश्नोत्तरी	२- सभा पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	रामविनय शतक
	३- वनपर्व्व	मय तसवीर व क्षेपक	नवीन संग्रह
भाषा इतिहास	४- विराट पर्व्व	रामायण तुलसी कृत	कवितावली सटीक
महाभारत	५- उद्योग पर्व्व	टीका गुटका नन्य कृ०	विष्णुपुराण भाषा
१- पहिले हिस्सा में	६- भीष्म पर्व्व	रामायण तुलसी कृत	लिंगपुराण
आदि पर्व्व सभापर्व्व	७- द्रोणपर्व्व	काण्ड अलेहदा भी हैं	ब्रह्मोत्तर खण्ड
वनपर्व्व	८- कर्णपर्व्व	१- बालकाण्ड	वाराहपुराण
२- दूसरे हिस्सा में	९- शल्य पर्व्व व गदा	२- अयोध्याकाण्ड	भविष्योत्तर पुराण
विराट पर्व्व उद्योग पर्व्व	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व मय	३- आरण्य काण्ड	बाल्मीकीय रामायण
भीष्मपर्व्व द्रोण पर्व्व	ऐषिक व विशोक व	४- किष्किन्धाकाण्ड	अद्भुत रामायण
३- तीसरे हिस्सा में	स्त्री पर्व्व	५- सुन्दर काण्ड	स्वप्नप्रकाश
कर्ण पर्व्व शल्य पर्व्व ग-	१०- शान्ति पर्व्व में राज	६- लंका काण्ड	शुक्रनीति
दा पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	धर्म मोक्षधर्म व दान	७- उत्तरकाण्ड	रसवृष्टि व रसचन्द्रोदय
ऐषिक पर्व्व विशोक व	धर्म	रामायण शब्दार्थकोष	सुदामा चरित्र
स्त्री पर्व्व शान्ति पर्व्व में	११- अश्वमेध आश्र-	रामायण का इतिहास	कृष्ण गीतावली
राजधर्म आपदधर्म	म वासिक मुशल पर्व्व	रामायण मानस दीपिका	श्री अनुराग रस
मोक्षधर्म	महाप्रस्थान स्वर्गारोहन	रामायण कवितावली	सौदागर लीला
४- चौथे हिस्सा में	१२ हरिवंश पर्व्व	रामायण गीतावली स-	रास लीला
शान्ति पर्व्व दानधर्म अ-	रामायण रामबिलास	भुवनेश भूषण	**राग**
श्वमेध आश्रम वासिक	रामायण तुलसी कृत	विनयपत्रिका बा० सो०	रागप्रकाश
पर्व्व मौशल पर्व्व व बाण	रामायण सटीक मय	विनय पत्रिका बा० शि०	लावनी

सूचीपत्र पोथी के पत्रोंकी संख्या से एक यंत्र चार पत्र पर पृथक् है उसमें बहुत उदाहरण लिखे हैं॥

पृष्ट पंक्ति प्रथम अध्याय का संक्षेप॥

१ १ मंगलाचरण अर्थात् श्रीकृष्णचन्द महाराजजी कूं नमस्कार और महाराज के गुण महिमा की स्तुति और महाराज से प्रार्थना॥

३ २३ विद्वानों से प्रार्थना॥

४ १७ नाम उन ग्रन्थों का जिनका विशेष करके इस में अर्थ लिखाहै॥

४ १९ ज्ञानके उपदेष्टा जैसे गीता शास्त्र और वेद में लिखेहैं उनसे जो इस आनन्दाऽमृतवर्षिणी कूं पढ़े सुनेगा उसकूं इसका अर्थ आवेगा॥

५ ३ इस ग्रन्थकूं जो सुनेगा वो बेसन्देह अनुष्ठान करेगा इसमें दृष्टान्त॥

५ १९ उपोद्घात कथा अर्थात् यो नयाग्रन्थ जिस-लिये और जिसके लिये बनायाहै वो सब व्यवस्था॥

१० २२ ज्ञानके मुख्य साधन चतुष्टय विवेकादि और अधिकारादि चार अनुबन्ध॥

१० २५ जीवब्रह्मकी ऐक्यतामें छः प्रमाण प्रत्यक्षादिभेद उपासना कर्मवालों कूं समझना कि अहंब्रह्मास्मि इस महावा-क्यार्थ कूं वेदों की आज्ञा से मानो वेद की आज्ञा में तकरार नहीं चाहिये॥

१८ ६ वेदोंका तात्पर्य और परसिद्धान्त अध्यायकी समाप्ति पर्य्यन्त ३४ के पृष्टमें प्रथम अध्याय समाप्त हुआ॥

द्वितीय अध्यायका संक्षेप॥

१८ १८ मुक्तिके होनेमें कारण॥

१९ १७ ब्रह्मका दोप्रकार का लक्षण तटस्थ स्वरूप॥

१९ २४ तत्पदका दोप्रकार का अर्थ वाच्य लक्ष्य॥

२० २ माया जड़चैतन्य अज्ञान अविद्या प्रकृति ईश्वर जीव शुद्ध ब्रह्म सबल ब्रह्म इन शब्दों का निरूपण ॥

२२ १५ जिस प्रकार ईश्वर जगत्‌का कर्ता ॥

२४ २३ सूक्ष्म प्रपंच का निरूपण अर्थात् जैसे सूक्ष्म आकाशादि श्रोत्रादि ज्ञानेन्द्रिय वाक् आदि कर्मेन्द्रिय मन आदि प्राणादि की उत्पत्ति पंच कोश अविद्या काम कर्मादि के सहित सूक्ष्म शरीर का निरूपण ॥

२९ १० स्थूल शरीर की उत्पत्ति: और आकाशादि के लक्षण ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति: चार प्रकारके शरीर सूक्ष्म इन्द्रियों के स्थान शब्दादि विषय बोलनादि क्रिया दिक् आदि देवता इन सबका निरूपण ॥

३६ १२ पञ्चभूत इन्द्रिय विषय क्रिया देवताओं का एक यंत्रमें संक्षेप ॥

जाग्रतआदिअवस्थाओंकालक्षण ॥

उपासना का प्रसंग ३८ पृष्ट १३ पंक्ति तक अध्यारोप कहा जाता है ॥

शास्त्रयुक्त प्रत्यक्षकरके तीनप्रकार का अपवाद ॥

तत्त्वंपदार्थोंकाशोधन ॥

तत्त्वं पदोंकी लक्षणा करके और सामान्याधिकरण्य विशेषण विशेष्य भाव लक्ष्य लक्षण भाव इनतीन सम्बन्ध करके जो एकता है उसका प्रसंग अध्याय की समाप्ति पर्यन्त है द्वितीय अध्याय तत्त्वमसि महा वाक्यके अर्थमें है ४४ के पृष्ट में यो अध्याय समाप्त हुआ ॥

तीसरे अध्यायका ४४ के पृष्टमें प्रारम्भहुआ ५४के पृष्टमें समाप्त हुआ उसमें ज्ञान ज्ञानीके लक्षण निश्चय करनेमें ज्ञानी अज्ञानी का बहुत संवादहै और उत्तममध्यम कनिष्ट भेद करके जीवन्मुक्ति का लक्षण विदेह मुक्तिका लक्षण ज्ञान उपरति वैराग्य का हेतु आदि चार चार भेद करके फलके सहित लक्षण ज्ञानी ब्रह्मवित् का ब्रह्मविदादि भेद करके चार प्रकारका लक्षण है प्रथममुक्ति आदिका लक्षण लिखकर फिर ज्ञानकी सात भूमिका लिखकर फिर श्रुति स्मृति आदि प्रमाण पूर्वक और अनेक दृष्टान्त युक्ति शंका समाधान पूर्वक इस बात कूं सिद्ध किया है जो कनिष्ट

जीवन्मुक्ति किसी हेतु से संपादन न हो सके तो विदेह मुक्ति में सन्देह नहीं ॥

चौथेअध्याय का ५४ के पृष्टमें प्रारम्भ हुआ ६२ के पृष्टमेंसमाप्त हुआ उसमें अन्तरंग बहिरंग भेद करके बहुत ज्ञान के साधन लिखे हैं ॥

पांचवें अध्यायका ६२ के पृष्टमें प्रारम्भ हुआ ६९ के पृष्टमें समाप्त हुआ उसमें सतोगुण रजोगुण तमोगुण का लक्षण और यज्ञ तपसुखदान कर्मादिका सत्वादि भेदकरके तीन तीनप्रकार का भेद फलके सहित लिखाहै ॥

छठे अध्यायका ६९ के पृष्टमें प्रारम्भ हुआ ७७ के पृष्टमें समाप्त हुआ उसमें श्रुति स्मृति युक्ति दृष्टादि प्रमाण पूर्वक इसबातकूं सिद्ध किया है कि मुक्तिका साधन मुख्यज्ञान है कर्मादि परम्परा करके गौणहैं और जीव ब्रह्मकी एकता पूर्णतादि में बहुत वादी की शंकाहैं सबका श्रुति स्मृति आदि प्रमाणपूर्वक समाधान किया है ॥

सातवें अध्याय का ७७ के पृष्टमें प्रारम्भहुआ ८५ के पृष्टमें समाप्त हुआ उसमें जीवात्मा परमात्मा का लक्षण और जीव ब्रह्मकी ऐकता और ऐक्यतापूर्णता नित्य मुक्तादि सिद्धिमें बहुत दृष्टान्त हैं और जो जो वादीने शंकाकरी सबका श्रुति स्मृति आदि प्रमाणपूर्वक समाधान किया ॥

आठवें अध्याय का ८६ के पृष्टमें प्रारंभ हुआ १०० के पृष्ट में समाप्त हुआ उसमें अहं ब्रह्मास्मि इस अभ्यास करने के साधन लिखे हैं और मुख्य तात्पर्य वेद शास्त्रों का किस मतमें है और क्याहै और श्रुतियों का अविरोध और यो सब जोहम कहते हैं इसका भलेप्रकार शारीरक भाष्यमें निश्चय होसक्ताहै यो प्रसंग है और कर्म उपासनादि में जो मुख्य मुक्ति के साधन हैं उनका निश्चय और वेदान्त शास्त्र के मतसे मुक्ति संसार परमेश्वर जीवका जो लक्षण उसकूं दृष्टान्त इतिहास युक्ति श्रुति स्मृति आदि प्रमाण पूर्वक सिद्ध कियाहै और संसार मुक्ति परमेश्वर जीवका नैयायक सांख्य पूर्वक मीमांसा शास्त्रवाले औरभी बौद्धादिजैसा जैसा कहते हैं उनका मत भी किंचित् संक्षेप करके लिखा है ॥

नवें अध्यायका १००के पृष्टमें प्रारम्भहुआ १०५के पृष्टमेंसमाप्त हुआ उसमें अज्ञान का लक्षण और अज्ञान का कारण जो आ-

सुरी सम्पत् के अवगुण उनका वर्णन और कामक्रोधादि कूं ज्ञान की सिद्धिकेलिये और पीछे ज्ञानके जीवन्मुक्ति की सिद्धिके लिये त्यागना चाहिये इस बातमें गुरु शिष्यका सम्बाद है॥

दशवें अध्यायका १०५ के पृष्टमें प्रारम्भ हुआ ११९ के पृष्ट में समाप्त हुआ उसमें जीवन्मुक्तिके पांच प्रयोजन और अन्तष्करण के निरोध का प्रकार और जीवन्मुक्ति के साधन लिखेहैं फिर श्री कृष्णचन्द्र जी महाराजजीकी कृपासे आनन्दामृतवर्षिणी समाप्तहै १८० से १८२ के पृष्टमें प्रश्नोत्तराख्य लिखाहै॥

पंचदशी॥

ऐहिकामुष्मिकव्रातसिद्धैर्मुक्तेश्चसिद्धये बहुकृत्यं पुराप्याभूत्तत्सर्वमधुनाकृतं ४० तदेतत्कृतकृत्यत्वं प्रतियोगपुरस्सरं अनुसंदधदेवायमेवंतृप्यतिनित्यशः ४१ दुःखिनोऽज्ञाःसंसरन्तुकामंपुत्राद्यपेक्षया परमानन्दपूर्णोऽहंसंसरामिकिमिच्छया ४२ अनुतिष्ठन्तिकर्माणिपरलोकयियासवः सर्वलोकात्मकःकस्मादनुतिष्ठामिकिंकथं ४३ व्याचक्षतांतेशास्त्राणि वेदानध्यापयन्तुवा येत्राधिकारिणोमेतुनाधिकारोऽक्रियत्वतः ४४ निद्राभिक्षेस्नानशौचे नेच्छामिनकरोमिच हृष्टारश्चेत्कल्पयन्तिकिंमेस्यादन्यकल्पनात् ४५ गुंजापुंजादिदह्येतनान्यारोपितवह्निना नान्यारोपितसंसार धर्मानेवमहंभजे ४६ शृण्वंत्वज्ञाततत्वास्तेजानन्कस्माच्छृणोम्यहं मन्यन्तां संशयापन्नानमन्येऽहमसंशयः ४७ विपर्ययस्तोनिदिध्यासेत् किंध्यानमविपर्यये देहात्मत्वविपर्यासं नकदाचिद्भजाम्यहं ४८ अहंमनुष्यइत्यादिव्यवहारोविनाप्यमुं विपर्यासंचिराभ्यस्तवासनातोऽवकल्पते ४९ प्रारब्धकर्म्मणिक्षीणे व्यवहारोनिवर्त्तते कर्म्माक्षये त्वसौनैवशाम्येद्ध्यानसहस्रतः ५० विरलत्वंव्यवहृतेरिष्टंचेद्ध्यानमस्तुते अबाधिकाव्यवहृतिंपश्यन्ध्यायाम्यहंकुतः ५१ विक्षेपोनास्तियस्मान्मे नसमाधिस्ततोमम विक्षेपोवासमाधिर्वा मनसःस्याद्विकारिणः ५२ नित्यात्मभवरूपस्य कामेवानुभवःपृथक् कृतंकृत्यं प्रापणीयं प्राप्तमित्येवनिश्चयः ५३ व्यवहारोलौकिकोवाशास्त्रीयोवान्यथापिवा ममकर्तुरलेपस्ययथारब्धंप्रवर्त्तताम् ५४ अथवाकृतकृत्योऽपि लोकानुग्रहकाम्यया शास्त्रीयेणैवमार्गेण वर्त्तेऽहंकाममक्षितिः ५५ देवार्चनस्नानशौच भिक्षादौवर्त्ततांवपुः तारंजपतुवाकत

इत्मठित्वाम्नायमस्तकं ५६ विष्णुंध्यायतुधीर्यद्वाब्रह्मानन्देविलीयतां साक्ष्यहंकिंचिदप्यत्र नकुर्वेनापिकारये ५७ कृतकृत्यतयातृप्तः प्राप्तप्राप्यतयापुनः तृप्यन्नेवंस्वमनसा मन्यतेऽसौनिरन्तरं ५८ धन्योऽहंधन्योऽहंनित्यंस्वात्मानमंजसावेद्मि धन्योऽहंधन्योऽहंब्रह्मानन्दोविभातिमेस्पष्टं ५९ धन्योऽहंधन्योऽहंदुःखं संसारिकंनवीक्षेऽद्य धन्योऽहंधन्योऽहं स्वस्याज्ञानंपलायितंक्वापि ६० धन्योऽहंधन्योऽहंकर्त्तव्यंमेनविद्यतेकिंचित् धन्योऽहंधन्योऽहंप्राप्तव्यंसर्वमद्यसम्पन्नम ६१ धन्योऽहंधन्योऽहंतृप्तेर्मेकोपमाभवेल्लोके धन्योऽहंधन्योऽहंधन्योधन्यःपुनःपुनर्धन्यः ६२ अहोपुण्यमहोपुण्यंफलितंफलितंदृढं अस्यपुण्यस्यसम्पत्तेरहोवयमहोवयं ६३ अहोशास्त्रमहोशास्त्रमहोगुरुरहोगुरुः अहोज्ञानमहोज्ञान महोसुखमहोसुखं ६४ ॥

इति ॥

---o---

[illegible]

श्रीगणेशायनमः ॥

आनन्दाऽमृतवर्षिणी ॥

मूल ॥

श्रीसच्चिदानन्दस्वरूप जो इन्दिरेश्वर ॥

टी० । श्री लक्ष्मी और शोभा और माया कूं कहते हैं तीनों करके अर्थ लगताहै सच्चिदानन्द लक्ष्मीपति शोभावान् मायाके स्वामी माया करके युक्त परंतु बिशेष योंहै सच्चिदानन्द माया के स्वामी सच्चिदानन्द में तीन पद हैं सत् चित् आनन्द अबयों देखनाचाहिये कि तीनपद क्योंकहे इसका यों कारणहै जोकेवल सत् कहते तो न्याय शास्त्रवाले आकाशकूंभी सत्कहतेहैंसो वह जड़है इसलिये चित्भी कहा वहदुःख रूप वा आनन्द रूपहै इस लिये आनन्द भी कहा और सत्ता दो प्रकार की हैं व्यावहारिकी पारमार्थिकी ब्यावहारिक सत्ता वहहै जो देहादिमें है औरपारमार्थिकी सत्ताजो सच्चिदानन्द ब्रह्ममें है इस जगे पारमर्थिकी सत्तासे प्रयोजनहै इसीप्रकार चैतन्यता आनन्दता भी ब्यावहारिकी पारमार्थिकी भेदसे दो प्रकार की है ॥

मू० । इन्दीबर इन्द्र मणी की सदृश जो सुन्दर रमा करके लालितहै पाद पंकज जिन्हों के ऐसे जो ॥

टी० । इन्दीबर इन्द्रमणी दो बिशेषण देने का यो प्रयोजन है भक्तोंके लियेतो इन्दीबर की सदृश कोमल और दुष्टोंके लिये इन्द्रमणी की सदृश कठिन हैं ॥

मू० । रामेश्वर और बन्दीकियेहैं इन्द्रके रिपोंके वृन्द जिन्होंने ऐसेजो सुरेश्वर और आनन्द है बीर्य्य जिन्हों का येमें जो

परमेश्वर और मन्द मुसुकान करके आनन्दकियेहैं लोकोंकेवृन्द जिन्होंने ऐसे जो नन्दजीके नन्दन और आत्मरूप करके चिंतवन करतेहैं जिन्होंकूं सनत्कुमार सनातन सनक सनन्दन और चंद्रबंश में भक्तोंके लिये अवतारहै जिन्होंका ऐसे जो श्रीकृष्णचन्द्र बसुदेवजीके नन्दन उन्होंकोमैं बन्दन करताहूं हे अमरबर आपके गुणोंके अन्तका नहीं जाननेवाला ॥

टी० । परमेश्वरके गुण दो प्रकारके हैं प्रथम में दो भेद हैं ऐसे जैसे अजअव्यक्त अद्वैत अमरादिजो निषेध करकेकहेजाते हैं दूसरे सत्चित् आनन्दादि जो प्रतिपाद करके कहे जाते हैं और दूसरेराम कृष्णादि सगुण ब्रह्मके गुण श्याम शान्ताकार करुणाकर भक्त वत्सलादि ॥

मू० । जो नरउसकी स्तुति जो आपके सदृश न हो तो क्या आश्चर्य है क्योंकि ब्रह्मादिकी भी स्तुति आपके सदृश नहीं है और जो यों कहो यथा मति स्तुति करने वालेसब निर्दोषहैं तो हे दीनार्त्तिहर मेराजो इस आनन्दामृतबर्षिणी के लिखने में यो परिकरसोभी निर्दोष है हे भगवन् आपकी महिमा मनबाणीका तो बिषय नहीं है और बेदभी अतद्व्यावृत्ति करके चकित हुये आपकी महिमा कूं कहते हैं सो ॥

टी० । अतद्व्यावृत्तिका अर्थयों है कहेकूं आवृत्ति बिशेषकहेकूं व्यावृत्ति औ अतत्के बारम्बार कहेकूं अतद्व्यावृत्ति कहते हैं अतत् का अर्थ योंहै नहीं है तत्सो नहींहै तत् ब्रह्मकूं कहते हैं तात्पर्य्य यो है श्रुति ने कहकह कर जो निषेध कियाहै सोनहीं है इसीकूं अतद्व्यावृत्ति कहते हैं शास्त्र की रीतिसे अतत् का अतद्बोला जाताहै ॥

मू० । महिमा किसके स्तुति करने योग्य है और आप के कितने गुणहैं यों कौन कहसके फिर आप किसका बिषय हो सक्ते हैं परन्तु अर्वाचीन पद के अर्थात् अवर पदके ॥

टी०। जिसकरके जाना जावे उसको पद कहते हैं ब्रह्मकेदोपदहैं एकअवर अर्थात् उरलासगुण दूसरा पर अर्थात् परलानिर्गुण ॥

मू०। बिषयमें किसकामन नहीं लगताहै और किसकीबाणी यों नहीं चाहतीहै कि परमेश्वर का कीर्तन करना चाहिये परन्तु बिना आत्म हत्यारे के संसारमें तीन प्रकारके पुरुषहैं युक्त१ मुक्तिकी इच्छा वाले २ बिषयी ३ मुक्तो शुक सनकादि ज्ञानी जन सदा आपके गुणोंका कीर्तन करते रहते हैं मुक्तजन ब्रह्मा नन्द कूं अनुभव करते हुये स्मरण करतेहैं कि यों ब्रह्मा नन्दपरमेश्वर की कृपाहै और मुक्तिकी इच्छा वालोंकूं संसार रूप रोग की योहीं परमेश्वर का कीर्तन करना परम औषधि है २ और बिषयी जनोंकूं आपके चरित्र बिहारादि परमप्रिय लगतेहैं हे भक्तप्रिय वृहस्पति आदिकी जो स्तुति क्या आप कूं आश्चर्य्य है तात्पर्य्य कुछ आचश्र्य्य नहीं है क्योंकि समस्त परम अमृत रूप मधुर कोमल कोमल बाणी सब आपही की कहानीहैं और जोयों कही फिर तुम्हारीबाणी क्या आश्चर्य्य होगी हेपरमेश्वर मेरी बुद्धि में तो यों अर्थ निश्चय कियाहै अपनी बाणीकूं आपके गुणोंका कथन करके पवित्र करताहूं प्रार्थना यों है हे कृष्णचन्द्र मेरीयों बालक कीसी हठ जानकर आपने सर्व प्रकार क्षमाकरनी ग्रन्थके आदि मध्य अन्त में निर्बिघ्न समाप्ति के लिये और आस्तिक मार्ग प्रवृत्ति के लिये शिष्टा चारानुमित्त और श्रुति बोधित जो तीन प्रकारका मंगल नमस्कार आशीर्बाद बस्तुनिर्देश होताहै सो यहां तक मंगला चरण है ॥

बिद्वान्जनों से प्रार्थना यों है जो यो मेरा भाषामें लिखाहै जो श्रुति स्मृति बेदान्त शास्त्र से बिरुद्ध हो तो अंगीकार नहीं करना और जो किसी जगे प्रकरण सगति पुनरुक्तिआदि दोष प्रतीत होतेहोंतो बनादेने और जो यो भाषा अच्छी न होवे और तात्पर्य्य बक्ता का भले प्रकार न प्रतीत होता हो तो जैसी

बिद्वान् पसन्द करें वैसीही लिखदेनी और परमेश्वर के स्वरूप का जो इसके बिचारने में चिंतवन करने में आता है इस गुण करके अंगीकार करना योग्यहै कुछ बाणीकी चतुराई तो इस में है नहीं और जो कहीं बुद्धिके भ्रमसे अन्यथा लिखागया हो उसको बना देना तात्पर्य्य सब प्रकार आपने भी क्षमा करनी योग्यहै मेरे अभिप्रायकूं बिचारना चाहिये बक्ता का इस के लिखने में क्या अभिप्राय है सो सुनो मैंहीं लिखेदेताहूं श्रीकृष्णचन्द्रने गीता शास्त्र में कहाहै इस गीता शास्त्रकूं जो मेरे भक्तोंकूं धारण करावेगा तो मेरे बिषय परम भक्ति करके मुझकूं प्राप्त होवेगा और स्वामी बिद्यारण्यभारती तीर्थजीने पञ्चदशी में कहा है किसी उपाय करके ब्रह्मका सदा चिन्तवन करना जो एकान्तमें बैठना तो ब्रह्महो का चिन्तवनकरना और जो दूसरेसे परस्पर बात करनी तो ब्रह्महो की करनी औरजो किसीकूंकथन करना तो ब्रह्महीका करना यों जो एकपर होनाहै इसीकूं बिद्वान् ब्रह्माऽभ्यास कहतेहैं सो मुझकूंयो उपाय ब्रह्मके चिन्तवन करने का अच्छा प्रतीत होताहै॥

मू०। पञ्चदशी वेदान्त सार तत्वानुसन्धान श्री भगवद्गीता टीके सहित और आत्म बोधादि पोथी समीप रखकर जितनी मेरी बुद्धि थी उन्होंकूं बिचार बिचार जो सीधा खुलासा अर्थ बालकों की समझमें आवे सो अर्थ आनन्दामृतबर्षिणीमें लिखा है बुद्धिमान से इस आनन्दामृतबर्षिणी कूं एक बेर श्रद्धा भक्ति करके और चित्त कूं एकाग्र करके कुतर्क के बिना सद्गुरू से जैसे गुरु बेदगीतामें लिखे हैं तात्पर्य्य वेदशास्त्र के तात्पर्य्यकूं जानने वाले और ब्रह्मनिष्ठ उन्हों से सुनना योग्य है जो केवल वेद शास्त्रार्थ के जानने वाले हैं और ब्रह्मनिष्ठ नहीं वे विज्ञान अनुभव नहीं कहसकेंगे और जो केवल ब्रह्मनिष्ठ हैं वे युक्ति दृष्टांत शंका समाधान पूर्वक नहीं कहसकेंगे इस लियेवेद शास्त्रार्थ के

जानने वाले और ब्रह्म निष्ठ गुरोंसे सुनना योग्य है जो इस में अनुष्ठान कहाहै उसकूं सुनने वालेकी इच्छा होकरो वा मतकरो तात्पर्य्य योहै जो सुनेगा तो अपने आनन्द के लिये आपही अनुष्ठान करेगा दृष्टांत कहतेहैं एक राजाथा कभी पण्डितोंकूंकुछ न देताथा न कभी कथा सुनताथा किसी बिद्वान्‌ने सबपण्डितों से कहा कि तुम राजासे कहो हे राजन् आप हमारी कथासुनो धनदो वानदो पण्डितों ने कहा महाराज वृथा अनधिकारी से कौन माथा मारे प्रयोजनके बिनातो मन्दभी नहीं प्रवर्त होताहै बिद्वान्‌ने उन्होंकूं दृष्टान्त दिया जो केलीगेहकी देहलीमें तरुण स्त्री दूध पीहुई किसी प्रकार प्राप्त होजावो फिर मैथुनकी इच्छा करो वा मतकरो अब दृष्टान्त और दार्ष्टान्त विचारो क्या ओ राजा पाषाण है जो पण्डितोंकी कथा सुनकर मुक्तिके लियेधर्म दानादि नहीं करेगा और क्या वो स्त्री पत्थर है कि उसकूं ऐसी जगे अपने आनन्द के लिये कामका आविरभाव नहीं होगा ऐसेही क्या इस ग्रंथका सुनने वाला पाषाण है जो निरतिशय आनन्द के लिये अनुष्ठान न करैगा॥

टी०। जिससे सिवाय और किसी जगे ब्रह्मलोकादि में आनन्द नहीं॥

मू०। जो अर्थ इस आनन्दामृतवर्षिणी में लिखना है उस की संगति के लिये जहां यों लिखेंगे प्रथम ज्ञानके चार साधन हैं यहां तक उपोद घात कथाहै सो सुनो॥

टी०। वाञ्छित अर्थ कूं मनमें रखकर प्रथम और प्रसंग कहना॥

मू०। जो एक चैतन्य महानंद शुद्धब्रह्म नित्यमुक्त सो मायो पहित हुआ ईश्वर १ और ओही चैतन्य समष्टि सूक्ष्म उपाधि करके उपहित हिरण्यगर्भ २ और वोही चैतन्य समष्टि स्थूल उपाधि करके उपहित बिराट ३ इन तीन भावोंकूं प्राप्त होता

भया और ओही चैतन्य अविद्योप हितहुआ प्राज्ञ १ और व्यष्टि सूक्ष्म उपाधि करके उपहित तैजस २ और व्यष्टि स्थूल उपाधि करके उपहित बिश्व ३ इनतीन भावोंकूं नाना प्रकार का जीव होता भया फिर ईश्वरजीवोंके धर्म अर्थ काम मोक्ष के लिये सृष्टि स्थिति संहार कूं करते भये धर्मादि में मोक्ष मुख्यहै और तीनि धर्मादि गौणहैं औरधर्मादि तीनके दोदोफलहैं मुख्य फल परम्परा करके तीनोंका मोक्षहै और स्वर्गादिगौणहैं धर्मकामुख्य फल मोक्षहै और स्वर्गादि गौणहैं स्वर्गादि फल जो बेदोंमें कहे हैं वे ऐसेहैं जैसे बालककी शोभाके लिये कानछेदन करानाऔर मोदकादि को फल कथन करदेना अभिप्राय तो उन्होंका जो है सोहै श्रुतिमाताके सदृश हित ॥

टी० । परिणाम अन्तमें सुखहो जिसके ॥

मू० । चाहनी वालीहै जैसे किसी का पुत्र रस्ते की मृत्तिका खायाकरताथा उसकी माताने उसकूं बहुत बरजा उसने न माना हारकर माताने कहा हे पुत्र यों गगाजीकी मृत्तिका खायाकर बहुत सुन्दरहै बिचारो माताका अभिप्राय गंगाजीके मृत्तिका के खिलाने में नहीं है रस्तेकी मृत्तिका के बर्जने में उसका अभिप्राय है ऐसेही यो मूर्खजीव रस्तेकी मृत्तिका की नाईं शब्दादि बिषयोंकूं इष्ट जानताहै श्रुतिने यों समझा इनबिषयोंसेतो स्वर्गादिअच्छे हैं तात्पर्य्यतो श्रुति का मुक्तिमें है इसीहेतुसेमोक्ष मुख्यहै और उपासना इसलिये है किसी का पुत्र जगे जगे वृथा फिरता था समेसिरनहीं हाथआताथा उसके पिता ने बिचार करपुत्रसे कहा कि तू इस मकानपर बैठारहाकर कुछ उसकूं लालचदेदिया तात्पर्य्य जब काम पड़ैगा यहांसे बुलालूंगा वैसेही यो मन कहीं यज्ञदानादि के फल स्वर्गादि में कहीं शब्दादि बिषयों में मृग तृष्णावत् भूला भागाभागा फिरताथा कभीश्रम नहींहोता था जो आत्म स्वरूप का बिचार करे इसलिये श्रुति में एकाग्र

चित्तके लिये उपासना कही है बिचारदेखो एकाग्रचित्त के बिना श्रवण मननिदध्यासन ये जो मुख्य साधन मुक्तिके हैं सोनहीं होसक्तेहैं १ इसी प्रकार अर्थजोअशरफी रुपयादि करकेजगत् में प्रसिद्धहोना और जगत् के सुख सम्पादन करने गौणहैं और रुपयादि खर्चकरके धर्म करना कथा श्रवण करना सन्तोंकासंग करना तीर्थों का सेवन करना मुख्यफल उन्हों का भी परम्परा-करके मोक्षहै २ ऐसेही काम अपने सुखके लिये खानापीना और आनन्दके लिये स्त्रीका संग और स्थान बस्त्रादिमें जो सुख बुद्धि सो गौण और भोजनादि वास्ते धर्मके और श्रवणादि के लिये शरीरकी रक्षाकरनी और स्त्रीकासंग वास्तेपुत्रकी उत्पत्तिके वोभी किसी अंशमें मुक्तिका हेतुहै इसका भी परम्परा करके मुख्य फल मोक्ष है ३ तात्पर्य्य संसारमें पुरुषार्थ मुख्य मोक्षहै वे जो अवि-द्योपहित जीव उन्होंमें से श्रुतिस्मृति जो परमेश्वर की आज्ञा है उन्होंकू जो करते भये उन्होंकी उपासनाके लिये जैसी उन्होंकूं मूर्त्ति परमेश्वरकी बांछित हुईवेही मायोपहित ईश्वर ब्रह्मा बिष्णु महेश सूर्य्य शक्ति गणेशादि मूर्त्ति कूं धारण करते भये सो मूर्त्ति कैलास बैकुण्ठादिमें और भक्तोंके हृदयमें सदा बासकरती रहती हैं वे जो बिष्णु भगवान् हैं सो भक्तों के उद्धार के लिये जो ऐसे भक्तहैं कि सदा जो परमेश्वरकी आज्ञा उसकूं करके शुद्ध किया है अन्तःकरण जिन्हों ने और शम दमादि साधनों करके युक्त मोक्षकी इच्छावाले परन्तु बहुत गंभीर जो ऋग् यजुर साम अथ-र्वण वेद उनके बिचारने में असमर्थ और बिना बिचार के ज्ञान नहींहोता है जैसे पदार्थका भानुबिना प्रकाशके इसलिये उनकूं ब्रह्मतत्व बिचारने के लिये श्रीकृष्णचन्द्र अवतार लेकर चारों वेदों का अर्थजो कि मुख्य मोक्षका साधन है अर्जुनके निमित्त करके गीता शास्त्र रचते भये और वेही बिष्णु ब्यासदेव अवतार लेकर भगवतादि पुराण भारतादि इतिहास रचते भये जिन्होंमें

कर्म उपासना ज्ञान तीनोंहैं प्रसंगसे गीतकूंभी महाभारत के बीचमें लिखा औरजो वेदान्त वेदोंका सिद्धान्त जिसकूं वेदोंका मस्तक कहते हैं उस सिद्धान्तकूं फिर सूत्रोंमें कथन करते भये तात्पर्य्य कईकई श्रुतियोंका अर्थ एक एक सूत्रमें संक्षेप करके कहा वे जो सूत्र और गीता शास्त्र उनका जो अर्थ सोभी बहुत गम्भीर और परमेश्वरका अभिप्राय परमेश्वर जानें या जिसपर उनकी कृपाहो वोजानै पीछे उनके कलियुग के जीवन ने हठ करके पण्डिताई के बलसे अपने अपने मतमें ब्याससूत्र और गीताजीका अर्थ बनालिया जो अभिप्राय श्रीकृष्णचन्द्र और ब्यासदेव जीकाथा वह सिद्ध न हुआ ज्ञानकाण्ड जो साक्षात् मुक्तिका हेतुथा लोप होगया तबसब देवता विष्णु ब्रह्मादि जुरकर श्रीमहादेवजी के पास गये सारी ब्यवस्था कही महादेव जीने कहा हम वेदमार्ग की प्रवृत्ति के लिये अवतारलेंगे आपभी सब ब्रह्मा इन्द्रादि अवतारलो फेर महादेवजी महाराज तो श्रीशंकराचार्य्य नाम करके और बिष्णुजी सनन्दन नाम करके और ब्रह्माजी मण्डनमिश्र नाम करके सरस्वतीजी के सहित और इन्द्र सुधन्वा राजा नाम करके तात्पर्य इसी प्रकार बहुत देवता अवतार लेतेभये क्योंकि जब ज्ञानकाण्ड का लोप होताहै तब महादेवजी अवतार लिया करते हैं और सब मतवालों से शास्त्रार्थ करके सबझूठे मतोंका खण्डन करके जो सार सिद्धान्त वेद भगवान्का है उसकूं स्थापन किया करते हैं राजाका अवतार इसलिये हुआ जो शास्त्रार्थमें झूंठी कुतर्क और हठ करेगा और शास्त्रार्थ होकर उसका मत खण्डन होजावे फिर दुराग्रहसे न माने अथवा बहुत जुरकर सामना करें तो राजा उनकूं दंड देंगे पीछे अवतार के ५। ६ बर्षकी अवस्थामें श्री शंकराचार्य्य जीने सन्यास लेकर १६ बर्षकी अवस्थामें १६ भाष्यरचे १० उपनिषद्पर ११ भाष्य ब्यास सूत्रोंपर एक शारीरक भाष्य

विष्णुसहस्रनामभाष्य गीता सनत सुजात भाष्य नृसिंहतापिनी भाष्य तात्पर्य उपनिषद् गीतादिका अर्थ भले प्रकार श्रुति स्मृति युक्तिदृष्टान्त प्रमाण देदेकर सिद्धकिया और जो गीता भाष्यादि के विचारनेमें असमर्थ देखे उनकेलिये आत्मबोधादि छोटे छोटे प्रकरणोंमें वोही अर्थ संक्षेपकरके लिखतेभये फिरसबबादियोंकूं शास्त्रार्थमें जयकरके दिग्विजय करतेभये जो वेदोंका सार सिद्धान्तथाउसकूं प्रकट प्रचारकरतेभये ऐसा ऐसाशास्त्रार्थ हुआ चालीस दिनतक मण्डन मिश्र से चरचा रही मण्डन मिश्र की स्त्री सरस्वतीजीका अवतार साक्षी थी उसने पुष्पों की माल दोनोंके गले में डाल दीथी कहदिया था जिसकी मालासूखेगी वोही हारेगा चालीस दिनके पीछे मण्डनमिश्र की माला सूखगई इसी प्रकार बहुत जगे शास्त्रार्थ हुवा और चारों दिशा में महाराज गये उनके अबतक ज्यो यशीआदि मठ चारोंदिशा में विद्यमान हें और कपाली आदिने जो सामना किया वे कुछ महाराज ने मंत्रों से मारे कुछ राजाने मारे बिस्तार इस कथा का तीनदिग्विजय ग्रन्थहें उनमें बहुत है तात्पर्य्य यों है जो अच्छे बुद्धिमान हैं उनके लिये तो शारीरक भाष्यादि बड़े २ ग्रन्थ रचे और जो मन्दबुद्धि हैं उनके लिये आत्म बोधादि छोटे छोटे प्रकरण रचकर ३२ बर्षकी अवस्था में महाराज तोकैलाश कूं जाते भये फिरजो पद्म पदादि महाराजके मुख्य शिष्यथे उन्होंनेभी बहुत ग्रन्थरचे स्वामी आनन्द गिरिजीने तो सब भाष्यादि ग्रन्थों पर टीकाकरी और सुरेश्वराचार्य्य महाराज ने बार्तिकबनाया पीछेउनकेस्वामी शंकरानन्दभगवान और विद्यारण्यादि जीने आत्मपुराण और पंचदशी वेदान्त सारादि बहुत सहस्राणि ग्रन्थ रचे वे ग्रंथ अबतक तो परमेश्वरकी कृपासे सूर्यवत् इस लोकमें प्रकाश रहेहैं॥

अब इससमयमें ऐसे जो परमेश्वर के भक्त कि जिनकीगुरू

परमेश्वर में श्रद्धा भक्ति और उनकी यथाशक्ति आज्ञा करनी परन्तु आत्म बोधादि प्रकरणोंके बिचारने में भी असमर्थ उनकूं सुख पूर्वक ब्रह्मतत्व बिचारनेके लिये और मुख्य मुंशी बंशीधर जी कायस्थ भटनागर रहनेवाले श्री गंगा यमुनाजी के मध्यमें इंद्रप्रस्थसे २२ कोश पूर्व दिशामें श्री कन्दरापुरीप्रसिद्ध सिकन्दराबादके लिये कैसेहैं वे मुन्शीसाहब कि जिन्होंके रूप लक्षी बिद्यातेजहुक्म और शामदाम क्षमा औदार्यादि बहुत गुणकरके युक्त पतिब्रता स्त्री फिर यो आश्चर्य्य कि ऐसे समयमें सत्संगी परमेश्वरमें भक्ति गंभीरादि गुण करके युक्त तात्पर्य्य ऐसे सज्जन बुद्धिमान् इस समय में होने कठिनहैं जिनकूं ब्यवहार में राज और परमार्थ में बिद्वान् सराहना करतेहैं उन्होंकी श्रद्धा भक्ति पूर्वक प्रार्थनासे उन्होंके उपबन अन्तरगत मकान कोठी में ठहरकर और श्रीस्वामी आत्मागिरिजी महाराज रहनेवाले प्रथम गुजरातके जिनकूं वेदान्त शास्त्रका अर्थकरामलकवत्हैउनकी सहायसे श्रीमत्परमहंस परिब्राज स्वामी मलूकगिरिजी महाराजका अनुचर शिष्य स्वामीजीके चरण कमलोंका पूजनेवालामें आनंदगिरि इस आनंदाऽमृतबर्षिणीका बनानेवालास्वामीजी और श्रीकृष्णचन्द्र महाराजकी कृपासेआत्म बोधादि छोटे छोटे प्रकरणों में जो मैंने अर्थ सुनाहै उसमेंसे भी स्वल्प यथा मति और श्री मद्गीता का भी अर्थकिसी किसी जगे इसआनंदामृत बर्षिणी में लिखूंगा ॥

प्रथम ज्ञान के मुख्य चार साधन हैं उनकूं लिखतेहैं ॥

ब्रिबेक १ बैराग्य २ शमादि षंक सम्पत्तिः ३ मुमुक्षुता ४ अर्थ इनका योंहै ॥

इस संसारमें नित्य अनित्य क्याहै और बिचार करते करते यो निश्चय करना कि आत्मा नित्य और आत्मासे पृथक् सब अनित्यहै १ यहांके देखे सुने जो पदार्थ स्त्री चन्दनमालादिपर-

लोक के जो सुने अमृत नन्दन बनदेवांगनादि सबकूं अनित्यदु-खदाई जानकर मनकी इच्छा पूर्वक सबकूं त्यागदेना फिर उनमें दीनता नहोनी ब्रह्मलोक कूं तृणावत् जानना २ तीसरेमें ६ भेद हैं शम १ दम २ उपरति ३ तितिक्षा ४ श्रद्धा ५ समाधान ६ इनका अर्थ याहै मन आदि अन्तःकरण की संकल्पादि वृत्तियों कूं रोकना बेदान्त शास्त्र केश्रवण मनननिदिध्यासनके बिना ३ श्रोत्रादि इन्द्रियों कूं शब्दादि बिषयों से रोकना देह यात्रा और श्रवणादिके बिना २ यम नियमादि साधनोंसे अन्तःकरण कूं निरोध करके ॥

टी०। अहिंसा १ चोरी न करनी २ सत्य बोलना ३ ब्रह्म-चर्य्य४अपरिग्रह अर्थात् शरीर यात्रासे सिवायसंग्रहन करना५ इन पांचका नाम यमहैं॥

और शौच १ संतोष२ तप ३ स्वाध्याय अर्थात् प्रणव का जप ४ ईश्वर प्रणिधान अर्थात् परमेश्वरमें भक्ति ५ इन पांचका नाम नियम है ॥

मू०। सब लौकिक बैदिक कर्मों से उपराम होना ब्रह्मतत्त्व बिचारने के लिये देह यात्रा मात्र क्रिया करनी और जाग्रत्अ-वस्था सुषुप्तिवत् रहनी इसी का नाम उपरती है ३ श्रवणादि में जोजो दुःख सुख पड़े सबकूं सहजाना ४ जो वेदान्त शास्त्र और गुरुज्ञानके देने वाले कहतेहैं उन्होंमें बिश्वास करना कि इसी प्रकारहै ५ श्रवणादि के समय भले प्रकार चित्तकूं समा-धान करना ६ तीसरे साधन के भेद होचुके चौथे साधनका यों अर्थहै मुक्तिको मुख्य पुरुषार्थ समझकर मुक्ति की नित्य इच्छा रखनी ॥

मुक्ति के ये चार साधन मुख्यहैं और सब साधनों का इनह में अन्तरभावहै जोइनका भलेप्रकार अनुष्ठान करेतो और किस साधनकी अपेक्षा नहींहै सब साधनोंका यों तन्तहै ॥

ग्रंथमें जोचार अनुबन्ध होतेहैं उनकूं लिखतेहैं ॥

अधिकारी१ बिषय २ सम्बन्ध३ प्रयोजन४ इनहींचारसाधनों करके जो सम्पन्न सो इसग्रंथके पढ़ने सुननेका अधिकारी१जीवन ब्रह्मकी एकता इसमें बिषयहै २ यो ग्रंथबोधक और ग्रंथबोध्य इन दोनोंका बोध बोध्यक भाव इसमें सम्बंधहै३ सबशोक दुःखों की निवृत्तिऔर परमानन्दकीप्राप्ति जिसकूंमोक्ष कहतेहैं योंइसका प्रयोजनहै ४ इसमें दृष्टांत योंहै जैसे रसोईमें अन्नका भूका तो अधिकारी १ औरजो अन्नमें मधुरादि स्वादहैं सो बिषय २ और अन्न बरतनादि का संयोग सम्बन्ध ३ भूक का दूर हो जाना प्रयोजन ४ जो कोई कहे तुमब्रह्म २ कहतेहो दिखाओ आपका ब्रह्म कहां और कैसाहै जैसे नास्तिक केवल प्रत्यक्षप्रमाणमानता है यो बात मूर्खता कीहै सोई सुनो जैसे किसी बस्तुके सद्भावमें एक प्रत्यक्ष प्रमाणहै ऐसे और भी अनुमानादि प्रमाणहैं प्रथमतो प्रत्यक्ष प्रमाण दोप्रकारकाहै बाहर १ भीतर २ बाहर ज्ञानेन्द्रियों करकेशब्दादि बिषयों का और पंचभूतोंका ज्ञान होताहै परंतु नेत्रकरकै तो रूपका और पृथ्वीजल तेजकाही ज्ञानहोताहै और रूपके बिना शब्दादि चार बिषयोंका और बायु आकाश का नेत्र से ज्ञान नहीं होता है १ और भीतर दुःख सुख भूक शोकादि का ज्ञान अन्तःकरण करके होता है और सुषुप्ति में जो अज्ञान उसका ज्ञान साक्षी चैतन्यकरकेहोताहै उस पूर्व पक्षी से बूझना चाहिये कि दुःख सुखादि जिसकूं होतेहैं क्या वो नेत्रसे दिखासक्ताहै और जो कहेकि दुःखादि कूं नेत्रसे कौन दिखा सके तो हम कहते हैं ब्रह्मकूं नेत्रसे कौन दिखासके और श्रीकृष्णचन्द्रादि जो मूर्ति हैं वे मायामय मूर्ति हैं क्योंकि यो बेद शास्त्रों का सिद्धांत है किजोदृश्यहै सो अनित्यहै (गोगोचर जहँ लगि मन जाई । सो सब माया जानो भाई) जोउन मूर्तियों कूं कोई परमार्थसे सच्ची कहे तो वे मूर्ति अनित्य हैं परमेश्वर कूं बेद शास्त्र

नित्य कहतेहैं तात्पर्य्य परमेश्वर बास्तव अमूर्त हैं जैसे दुःखादि अन्तःकरण करके जानेजाते हैं ऐसे सूक्ष्म दर्शीपुरुषों कूं सूक्ष्म बुद्धि करके अन्तर्मुख वृत्ति करके और प्रत्यक्षादि प्रमाण करके प्रमेय चैतन्यका अपरोक्ष होसक्ता है बेदान्त शास्त्रमें ६ प्रमाणहैं प्रत्यक्ष १ अनुमान २ उपमान ३ शाब्द ४ अर्थापत्ति ५ अनुपलब्धि ६ इनका अर्थ भाषा में भले प्रकार लिखने से बहुत बिस्तार होता है इसलिये नाम मात्र रस्ता दिखाते हैं प्रत्यक्ष का अर्थ तो पीछे लिखागया अनुमान से इस प्रकार॥

टी०। अनुमान के पांच अंग हैं पक्ष्य १ साध्य २ हेतु ३ व्याप्ति ४ दृष्टांत ५ इसलिये पांच बायवी अनुमान कहा जाता है जैसे पक्ष १ कियोपर्बत-साध्य २ अग्निवालाहेतु ३ धूमहोने से--व्याप्ति ४ जहां जहां धूम होताहै वहां निश्चय अग्निहोती है--दृष्टांत ५ जैसे रसोई के मकान में॥

मू०। ज्ञान होता है कोई मनुष्य जंगल में चला जाता है अग्निकी इच्छा हुई देखा पर्बत में धूमउठ रहा है वो अनुमान करताहै वो पर्बत अग्निवालाहै धूम होनेसे जहां जहां धूम होताहै वहां वहां निश्चय अग्नि होतीहै जैसे रसोई के मकानमें बिचार देखो अग्नि प्रत्यक्ष नहींहै परन्तु पर्बतमें अग्निका होना प्रमाणहैं २ उपमा करके इसप्रकार ज्ञान होताहै गवय एकपशु होताहै एक पुरुषने उसकूं कभी नहीं देखाथा नामसुनाथा उसने किसी जंगली आदमीसे पूछा कि गवय कैसा होताहै जंगलीने उत्तर दिया कि गौकी सदृश होताहै कुछ एक अंतर होताहै वो पुरुष एकदिनजंगलमें गया उसने गवयकूं देखाउसगवयकूं देख करउसबातकोस्मरण कियाकिगौकीसदृश होताहै निश्चय योही गवयहैबिचारदेखो गवयका जानलेना प्रमाणहै ३ शाब्दप्रमाण दोप्राकारकाहै वैदिक१लौकिक२ वेदोंने जोकहासो वैदिक प्रमाणहै जोयों शंका करेकि वेदों ने तो जीव ईश्वरका भेदभी कहाहै

औरअनेक श्रुति कर्म उपासनादि करके मोक्षका होना कहती हैं और बहुत श्रुति अन्न मय कोशकूं आत्मा कहतीहैं तोयों वेदों का कहाहुआ आपकेप्रमाणहै यानहीं इसका उत्तरयोंहै जोश्रुतिअन्न मायादि कोशकूं आत्मा कहतीहैं और जोकर्म उपासनादि करके मुक्ति का होना कहती हैं सबका अभिप्राय युक्तिसे अद्वैत ब्रह्मके बोधन करनेकाहै देहादिकूं परमार्थसे आत्मा कहना और जीव ईश्वरकाभेदकहना औरकेवलकर्मउपासनादिसे मुक्तिकाहोजाना योश्रुतिका तात्पर्य नहीं है क्योंकि फिर श्रुतिने निषेधभीकिया है कियो नहींहै २ इसवाक्य करके और बहुत सहस्त्राणि ऐसी ऐसी अर्थ वाली श्रुतिहैं और जोयो शंका करे कि प्रथम श्रुतिने देहादि कूं आत्मा कहा और जीव ईश्वरका भेद कहा फिर उस कूं निषेध किया प्रथमहीं एक निर्गुण ब्रह्मका उपदेश क्यों न कियाइसका उत्तर योंहै जोश्रुति प्रथमहीं ब्रह्मको बोधन करती तो ब्रह्म कूं अति सूक्ष्म होनेसें इस जीवकूं ब्रह्मका कभी बोध न होता इसलिये श्रुतिनेक्रमसे अर्थात् प्रथम कर्म करना कहाफिर उपासना कही और प्रथम अन्न मायादि कूं आत्मा कहा फिर आनंदमयकोशकूं आत्माकहा जब जिज्ञासुकीबुद्धि आनन्द मयादि कूं बिचारते बिचारते अति सूक्ष्महुई तब निर्गुण ब्रह्म का उपदेश किया अब बिचारो कि श्रुति का अन्नमय कोशादि कूं जोआत्मा कहनाहै और कर्म उपासनासे मुक्ति काहोना यों परमार्थ मेंतो सच्चा नहीं परन्तु निर्गुण ब्रह्म कूं साक्षात् बोधन करने वाली जो बहुत श्रुतिहैं उन्हों की यह सब श्रुति उपयोगीहैं इसलिये वेदका कहा हुआ सब प्रमाण है कोई श्रुति साक्षात् और कोई कर्म उपासनादि द्वारा परम्परा करके बोधन करती हैं मूर्खलोग वेदोंके तात्पर्य कूं नहीं बिचारके एक एकदेश वेदों का सुनकर कोई देह कोई इन्द्रिय कोई विज्ञान मय कोशादि कूं आत्मा बताते हैं कोई केवल कर्मसे कोई केवल उपासनादि से मुक्तिका

होना कहते हैं समस्त वेदों का तात्पर्य नहीं बिचारते पूर्व पक्ष की श्रुतियों कूं प्रमाणदेदे वृथाबाद करते हैं जैसे कोई मूर्ख अच्छे वैद्य के समीप बैठा था उस समय एक पुरुष आया उसकूंबहुत चलनेसे हारपन का ज्वरथा वैद्यने नाड़ी देखकर कहा किमोहन भोग खाओ ज्वरजाता रहैगा उसकूं हारपनसे ज्वर था मोहन-भोग के खाने से जातारहा उस मूर्खने समझा कि बिशेष करके धनवाले बीमार होते हैं उनके लिये यो औषधि बहुत सुन्दर है ऐसा निश्चय करके सब रोगियों कूं मोहनभोग बताने लगा जिसकूं हारपन का ज्वर होवे तो अच्छा होजावे शेष मरजावें ऐसेही बहुत मूर्ख एकएक दो दो औषधि वैद्यसे सुनकर वैद्यक करने लगे न वैद्यके तात्पर्य कूं बिचारा न रोगीके रोगकूं बिचारा सबकूं एकही औषधि बताने लगे दैवयोग से कोई कोई अच्छा भी होजावे इसी प्रकार मूर्खने वेदके तात्पर्य कूं न अधिकारीकूं बिचारते हैं केवल आजीवकाके लिये वैष्णव शैव शाक्तादि अपने अपने मतका उपदेश करके कहदेते हैं कि योही परम तत्व है औरों की असूया करदेते हैं बिचारो कि जो सबकूं एक देवताका उपदेश करते हैं तो क्या सारी अवस्था में सबके एकही गुण सदा रहता है इस दृष्टान्त कूं भले प्रकार बिचारो वैद्य तो सद्गुरू की जगे कि जैसे प्रथम अध्याय में लिखे हैं और वैद्यककीपोथी वेद और शास्त्रों की जगे और रोगी मुमुक्षु की जगे क्योंकितीन प्रकार का रोगहै कफ वायु पित्त और तीनहीं रोग इस जीवकूं हैं सत्त्व रज तमोगुण तमोगुणीके लिये कर्म रजोगुणी के लिये उपासना सत्वगुणी के लिये ज्ञान वेदोंनें कहाहै और उस मूर्ख की जगे इस कलियुग के ऐसे गुरु कि जो बिना वेदान्त शास्त्रके पढ़हुए और बिना वेदशास्त्रोंका तात्पर्य जानेहुए मूर्खोंकूं चेला करते हैं उनकूं केवल अपनी क्षमाही से प्रयोजन है शिष्यदुःख भोगो या नक भोगो सो शिवजीने पार्वतीजीसे कहाहै ॥

श्लोक । गुरवोवहवःसन्तिशिष्यवित्तापहारकाः ॥
दुर्लभःसगुरुर्देविशिष्यसन्तापहारकः १ ॥

तात्पर्य वेद भगवान् का यों है जैसे व्यवहार में मनुष्य सूक्ष्म बास कूं युक्ति करके कहते हैं ऐसे वेद भगवान् भी निर्गुण ब्रह्म कूं युक्ति करके बोधन करते हैं इस बातके स्फुट होने में मनुष्योंकी युक्तकूंलिखतेहैं शारीरक भाष्यमें स्थूलारुंधतीन्याय नामकरके योंयुक्तिलिखीहै कुवाँरीलड़कीकूं सौभाग्यके अर्थअरुंधती कादर्शन करायाकरते हैं प्रथम उससे कहते हैं कि योचन्द्र अरुंधती है जब वो चन्द्रकूं जानजाती है फिर कहते हैं कि यों अरुंधती नहींहै यह साततारे अरुंधती हैं फिर वैसेही निषेध करके कहते हैं कि यहतीन तारे हैं फिर उनतीन तारोंमेंसे बशिष्ठजीकूं अरुंधती बताते हैं जब वो लड़की बशिष्ठजीकूं भले प्रकार जानजाती है पीछे उसकूं भी निषेध करके कहते हैं कि उस तारेके समीप जो बहुत सूक्ष्म ताराहै सो अरुंधती है जिसके भाग्य अच्छे होते हैं उसको अरुंधती का दर्शन होजाता है अब बिचारना चाहिये कि प्रथम चन्द्रादिकूं अरुंधती कहना है उनका अरुंधती के बताने में सबवाक्य उपकारी हैं इसलिये सब प्रमाण हैं जिस कालमें वो लड़की अरुंधती को जानजाती है पीछे उसकूं योनिश्चय होजाती है कि मेरेमाता पिताने जो प्रथम चन्द्रादिकूं बतायाथा तात्पर्य उनका अरुंधती के बोधन करनेमेंथादार्ष्टान्तमें फिरभलेप्रकारबिचारना चाहियेयोंतोवैदिक प्रमाण कहा और लौकिक व्यास वशिष्ठ आप्त कामादि पुरुषों का जोकहा है सो प्रमाण है लौकिक प्रमाणमें भी वोही अरुंधती न्यायहै इस समयमें भी आप्तकाम ब्रह्मवादी परमहंस संन्यासी बिशेष करके हैं और जो इसलोक में अच्छे गुण कहेजाते हैं कि जिनकूं सब मतवाले अंगीकार करते हैं औरवेद वशिष्ठादिका परम सिद्धान्त हैं और मुक्तिके मुख्य अतरंग साधन हैं निराकांक्ष

शान्ति निरहंकार सन्तोष कोमलता विवेक वैराग्य निर्वैरता अमान परोपकार क्षमाशम दमादि ऐसे ऐसे गुण और विद्या और विज्ञान विशेष करके ब्रह्मवादी संन्यासी परम हंसोंहीमें पाते हैं इसलिये उनकूं आप्तकाम होनेसे उनके वाक्य प्रमाण हैं ४ किसीसे बूझा कहोजी भोजनकर आये उन्होंने कहा हम भोजन दिनमेंनहीं करतेहैं और हृष्टपुष्ट देखतेहैं अर्थसे येज्ञान हुआ कि रात्रीकातो इन्होंने निषेध नहीं कियाहै रात्रिकूं भोजन करतेहैं विचारो येज्ञान सच्चाहै यानहीं इसका नाम अर्थापत्ति प्रमाण है ५ किसीने कहातुम कहतेहो इसस्थानमें घटनहीं है इसमें क्या प्रमाण है उसने उत्तर दिया घटका लाभन होनेसे अनुपलब्धि प्रमाण है ६ तात्पर्य इन प्रमाणों के लिखनेका योहै कि ब्रह्मके सिद्ध करनेमें ऐसे ऐसे प्रमाण और अनेक युक्ति दृष्टान्त हैं प्रत्यक्षवादि आदिकूंतो ऐसे ऐसे उत्तर देनेयोग्य हैं कि द्वैवादी विचार देख ब्रह्म ऐसे ऐसे प्रमाणों से देखनेमें आताहै॥

और भेदवादी उपासनावालों और कर्मवादी आदिकूं योउत्तर देना योग्यहै जैसे वेद की दृष्टिसे तुम सूतकी आदि और परमेश्वर कादास मानते हो ऐसेही वेदन भी कहाहै तू ब्रह्महै जो यो कहो हम अभी इसयोग्य नहीं हैं ऐसा कहें मैं ब्रह्महूं हमबूझते हैं किसी प्रतिबन्ध से तुम कूं महा वाक्यार्थ अर्थात् मैं ब्रह्महूं यो अपरोक्ष नहोती यो कहो वेदान्तशास्त्र का श्रवणादि और मैं ब्रह्महूं ऐसी अनेक उपासना करनी कहां निषेधहै और विचारो अभ्यास अनजान वस्तुका करतेहैं और अभेद उपासना करनेमें छांदोग्य उपनिषदादि गीता भाष्यादि बहुत ग्रंथहैं उनमें ऐसी ऐसी उपासना करने मैं ब्रह्महूं मैं ईश्वर हिरण्यगर्भ विराट हूं भले प्रकार ब्रह्म लोकादि फलके सहित लिखीहै और भेद उपासना में बहुत जगे दोषकहेहैं और भलेप्रकार विचारोपरिपूर्णकूं परिछिन्न कहना कितना बड़ाअनर्थहै वेदोंमें प्रकट लिखा है

शोक कूं आत्माका जाननेवाला तरताहै १ उसी आत्मा कूं जान करके मृत्यु कूं उल्लंघेगा और कोई रस्ता मुक्तिका नहींहै २ कर्म धन पुत्र करके मुक्त नहीं होता है सबका त्यागही करके मुक्त होता है ३ ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती है ४ ऐसी ऐसीअर्थ वाली बहुत श्रुति हैं फिर तुम कूं मैं ब्रह्म हूं इस अर्थ ग्रहण करने में क्या वाद करना योग्य है वेदों का तात्पर्य्य सुनो कर्म करके तमोगुण का नाशहोताहै निद्रा, आलस्य, प्रमादादि, तमोगुण का कार्य है प्रातःकाल के स्नानादि कर्म करने से उनका नाश होता है व्रतादिक करने से इन्द्रियादि का दमन होता है दानादि करने से पदार्थों में से आशक्ति दूरहोतीहै तीर्थादिकरने से घरके लोगों से प्रीति कमहोतीहै परदेश में जाकर बुद्धिबढ़तीहै तीर्थों में महत् पुरुषों का समागम होता है उनके सत्सङ्ग करने से संसार से चित्त उपराम होता है और भी बहुत इस प्रकारके कर्म कार्य्य हैं चित्तसे विचारने योग्यहैं अन्तःकरण का विषयों से उपराम होना इसी कूं अन्तःकरण की शुद्धि कहते हैं उपासना से रजोगुण का नाश होताहै विक्षेप तृष्णा, लोभादि रजोगुण का कार्य्य है ध्यानादि करके उनका नाश होता है ऐसे ऐसे साधनों से बड़ा जो सत्वगुण उसकूं प्रकाशमय शान्तरूप होने से कार्य्य उसका विवेक, वैराग्य, शम, दमादि हैं इन साधन सम्पन्न होकर जगत् ब्रह्म बन्ध मोक्ष नित्य नित्यादिका विचार किया विचार करने से यो ज्ञान हुआ कि ये सत्वादितीनों गुण माया के हैं माया कूं मिथ्या होने से इन गुणों का जितना कार्य्य स्थूल सूक्ष्म है सब मिथ्या है और मैं असंग सच्चिदानन्द नित्यमुक्तहूं इसीकूं ज्ञान कहतेहैं योहीं ज्ञान मुक्तिकाहेतुहै और परम सिद्धांत तो वेदोंका योहै कि योजगतजीव ईश्वरप्रतिबिम्ब के सहित न कभी हुआ है न होगा न है एक मन वाणी करके अगोचर प्रत्यगात्मा नित्यानन्दरूपनित्यमुक्तहै नकिसीका नाश

न उत्पत्ति न देहके साथ सम्बंध है न कोई सुख दुःख धर्मवाला न श्रवण करनेवाला साधक न मुक्ति की इच्छावाला न मुक्त है तात्पर्य जोजोहैसोहै यों श्रुतिका अर्थ है ॥ इति प्रथमोऽध्यायः समाप्तः॥ १ ॥

अथद्वितीयोध्याय॥

अब अध्यारोप अपवाद न्याय करके निष्प्रपञ्चब्रह्म जगत का प्रपंचकरके फिर मुक्तिकूं सिद्धकरतेहैं मुक्तिमहा बाक्यार्थकेज्ञान से होतीहै जैसे किसीकूं रज्जुमें सर्पकी भ्रान्ति है उसका दुःख कम्पादि लौकिक वाक्यार्थ के ज्ञानसे नाश होताहै यहांके स्त्री चन्दन मालादि और परलोकके अमृत नन्दन बन देवाङ्गनादि कीप्राप्तिसे उसका दुःख नाश नहींहोताहै ऐसे इसजीवके तीन ताप पञ्च क्लेश यहांके और स्वर्गादिके पदार्थोंकी प्राप्तिसेनाश नहीं होतेहैं और न कम होतेहैं महा बाक्यार्थ के ज्ञानसे नाश होतेहैं महाबाक्यार्थ का ज्ञानजब होताहै प्रथम पदार्थका ज्ञान होजावे के पदोंका नाम बाक्य होताहै महा बाक्य में तीनपद हैं तत् त्वम् असि इस लिये तत् पदका अर्थ अभी आगे लिखेंगे उससे प्रथम तत्पदार्थ का लक्षण लिखतेहैं तत्पदार्थका अर्थात् ब्रह्मका लक्षण दो प्रकारका है तटस्थ १ स्वरूप २ सृष्टि स्थिति ३ लयका जो कारण अर्थात् जिससे यो जगत् हुआ है जिसमें ठहर रहाहै प्रलय समय जिसमें लय होजाता है सो ब्रह्मका तटस्थ लक्षण है और सत् चित् अनन्दादि स्वरूपलक्षण है जैसे किसी पुरुषका लक्षण श्यामगौर रँग इतनी अवस्था ऐसे नेत्रादि हैं यो उसका स्वरूप लक्षण है और जिसकेबाहर कुंवा ऐसी उसकी हवेली ऐसे वस्त्र पहिररहाहै यो उसकातटस्थ लक्षण है तत्पद का अर्थ दोप्रकार का है बाच्य १ लक्ष्य २ मा

यो पहित जो चैतन्य सो तत्पदका बाच्यार्थ है मायोपहित का अर्थ योहै माया उपहित यो दो पदहैं यो दोनो मिलके ब्याकरण की रीति से मायोपहित यो एक शब्द बोलाजाताहै मायोपहित अर्थात् माया करके युक्त जैसे बिम्बघट गत जल करके युक्त अथवा जैसे स्फटिक लालरंगकी सन्निधीसे लालहीप्रतीत होता है ऐसेही शुद्ध ब्रह्ममाया की सान्निधीसे ईश्वर प्रतीतहोतेहैं जैसे स्फटिक लाल रंग करके उपहित लाल स्फटिक कहा जाताहै और बिम्ब घटगत जल करके उपहित प्रति बिम्बकहा जाताहै ऐसेही मायोपहित शुद्ध चैतन्य जगत्कारण ईश्वर कहे जातेहैं उपहित का अर्थ यहां भलेप्रकार याद करलेना भलेप्रकार बुद्धिमें निश्चय करलेना आगे बहुत जगेकाम पड़ैगाप्रसंग यों था मायोपहित चैतन्य तत्पदका बाच्यार्थ और मायासेयुक्त चैतन्य तत्पद का लक्ष्यार्थहै जैसे प्रतिबिम्बसे बिम्ब नित्यमुक्त है और शुक्ति भ्रान्ति कालमें भी रजत नहीं हुई और जैसे स्फटिक लालरंगकी सन्निधिकाल में भी श्वेतही रहता है ऐसेही शुद्धब्रह्म मायोपहित और अविद्योपहित कालमें भी॥

टी०। अविद्या उपहित ये दोनों पद मिलकर ब्याकरण की रीतिसे एक अविद्योपहित बोलाजाताहै अर्थ यो हुआ अविद्या करके उपहित॥

मू०। चैतन्य असंग शुद्धही है माया किसकूं कहते हैं सुनो जैसे शुक्तिमें रजत की भ्रान्ति ऐसे चैतन्यमें कारण सूक्ष्मस्थूल प्रपंच जड़की जो भ्रान्ति इसी का नाम माया है यो सब ब्रह्म है १ योसब बासुदेव हैं २ ऐसी ऐसी अर्थवाली बहुत श्रुतिस्मृति चैतन्यका भाव और जड़का अभाव कहती हैं चैतन्य पदार्थ क्याहै सुनो सत्। चित्। आनन्द। शुद्ध। बुद्ध। एक। स्वयंप्रकाश। अनन्त। नित्यमुक्त। शान्त। अखंड। अज। अमर। परिपूर्ण। निरंजन। निरवयवअसंग। अद्वय। अव्यक्त। अचिन्त्य।

सर्वगत। अचल। सनातन। नित्य। आत्मा। परमात्मा। परमेश्वर। ब्रह्म। प्रत्यगात्मा। ये चैतन्य पदार्थ के विशेषण हैं और भी चितिज्ञान स्वरूपादि विशेषण हैं और जड़ अज्ञानसे आदि लेकर जो स्थूल पर्यन्त हैं सो सब जड़ हैं अज्ञानकूं प्रकृति और गुणोंकी साम्यावस्था और मूल अज्ञान भी कहतेहैं सो अज्ञान सत्व,रज,तम, इन तीन गुणोंवालाहै स्वरूप उसका अनिर्वाच्य है सत् असत् करके कुछनहीं कहा जाताहै जो सत्कहैं तो कुछ पदार्थ नहीं है और असत् कहैं तो प्रतीत होताहै जैसे भ्रान्ति समय शुक्ति में रससे अनिर्वाच्य है परंतु ज्ञानसे उस अज्ञानका अभाव होनेसे वो अज्ञान भाव रूपहै जैसे लौकिक व्यवहार में प्रथम कुछ भूलजावे फिर याद आजावे और जैसे बालकअवस्था मे तूला ज्ञान का भाव होता है॥

टी०। तूला ज्ञान योहै जैसे किसी पदार्थ कूं भूलजावे उस में जो कारण और बालक अवस्था में जो अज्ञान से तूलाऽज्ञान उसका न्याय शास्त्र और प्राकृत विद्या के पढ़ने से और लौकिक व्यवहार से नाश होजाताहै और मूलाऽज्ञान का तो केवल ब्रह्म विद्यासे नाश होताहै॥

मू०। विद्या पढ़करके और व्यवहारादि से उस अज्ञान का अभाव होजाताहै ऐसे अज्ञान कालमें कहता है कि मैं ब्रह्म कूं नहीं जानताहूं ज्ञानकाल में कहता है कि मैं ब्रह्मकूं जानता हूं ऐसा ऐसा अनुभव व्यवहार होनेसे निःसन्देह प्रतीत होताहैकि एक अज्ञान पदार्थ अनिर्वाच्य है भाव और अभाव उसके दोनों प्रतीत होते हैं अज्ञान १ माया अविद्या का भेद २ मायोपहित सबल ब्रह्म ३ जीव ४ जाव ईश्वरका भेद ५ शुद्धब्रह्म ६ ये सब अनादि हैं इनकूं यो नहीं कहाजाताहै ये कबसे हैं कबसे इनका भेद हुआहै और शुद्ध ब्रह्म कबसे मायोपहित अविद्योपहितहुये जैसे यो नहीं कहाजाताहै शरीर प्रथम हुआ या कर्म दृष्टान्तयो

है बीजप्रथम हुआ या वृक्ष और जैसे स्वप्नमें जो उपवन,मंदिर, मृग,मित्र,शत्रुआदिदीखतेहैं विचारो कि उपवन मन्दिरकी कौन से सम्बत् मुहूर्त में नीव रक्खी गई है और मित्रादि का कौन से सम्बत् मुहुर्त में जन्म हुआहै योही निश्चय करो जैसेदृष्टांत के पदार्थोंकी ब्यवस्था है वैसेही दार्ष्टान्त के पदार्थोंमें शुद्धब्रह्म अनादि भी और अनित्यभीहैं और सब अनित्यहैं ज्ञानकाल में शुद्ध ब्रह्मके बिना सब नष्ट होजातेहैं वो अज्ञान माया अविद्या भेदसे दो प्रकार का है शुद्धसत्त्व प्रधान हुआ माया मलिनसत्व प्रधान हुआ अविद्या कहाजाताहै रजोगुण तमोगुण करके जो सत्व गुण नहीं तिरोभाव होता है सो शुद्ध सत्व और रजतमो-गुण करके जो सत्वगुण तिरोभाव होजाता है सो मलिन सत्व कहाजाता है माया अविद्याका भेद ऐसे समझो जैसे एक पुरुष क्रियाके निमित्तसे पाठक याचक कहलाता है और जैसेएक स्त्री पिताकी आपेक्षा करके कन्यापतिकी पेक्षा करके पत्नीहै ऐसे वो अज्ञान ईश्वरकी अपेक्षा करके माया और जीवकी अपेक्षा करके अविद्या कहाजाताहै ऐसाभेदनहीं समझना कि अज्ञानके दोटूक होगये,अथवा उस अज्ञानकी शक्ति दो प्रकारकीहै ज्ञानशक्ति १ क्रिया शक्ति २ रजोगुण तमोगुण से नहीं दबाजो सत्यगुण सो ज्ञानशक्ति १ क्रियाशक्ति दोप्रकारकी है, आवरणशक्ति १ बिक्षेप शक्ति २ रजसत्वगुण से नहीं दबा जो तमोगुण सो आवर्ण शक्ति और तम सत्त्वगुण से नहीं दबाजो रजोगुण सो बिक्षेप शक्तिवोही अज्ञान आवर्ण शक्तिप्रधान हुआ अविद्या औरबिक्षेप शक्ति और ज्ञान शक्ति प्रधान हुआ माया मायोपहित चैतन्य ईश्वर कहाजाता है योही तत्पद का वाच्यार्थहै और वोहीचैत-न्य अविद्योपहित जीव प्राज्ञ कहा जाताहै मायोपहित ईश्वर तो माया के बश नहीं हुये इस लिये सर्वज्ञ ईश्वरादि नामकरके कहे गये और अविद्योपहित जीव अविद्या के बश होगया उस

अविद्याकी विचित्रता से नाना प्रकारका होगया इसलिये अल्प
ज्ञ कहागया जैसे कोई पुरुष शीशेके मकान में बैठाहुआ आपकूं
और औरोंकूं भी देखताहै मृत्तिका के मन्दिरमें बैठाहुआ आपही
कूं देखता है कभी बहुत अन्धेरेमें अपना आपा भी नहीं देखता
है माया में शुद्ध सत्व प्रधान होनेसे माया शीशेके मन्दिर की
सदृश है और अविद्या में मलिन सत्व प्रधान होने से अविद्या
मृत्तिका के मन्दिर के सदृश है माया में प्रति बिम्ब जो चैतन्य
का सो ईश्वर अविद्या में प्रतिबिम्बजो उसी चैतन्यका सो जीव
यहां बिम्ब प्रति बिम्ब का भेद सूर्य बिम्ब और घट गत जल
प्रति बिम्बवत् नहीं समझना ऐसे समझना जैसे आकाश का
प्रति बिम्ब जल में प्रथम दृष्टांत में भी कुछ दोष नहींहै परंतु
परिच्छिन्न भेदसा प्रतीत होताहै सो कुछ दोष नहींहै दृष्टांत एक
देश में होताहै आकाश के दृष्टांत से बिम्बका भेदऔर परिच्छिन्न
ता नहीं प्रतीत होतीहै इस पक्षमें जीतो एकही है परंतु अन्तः-
करण की उपाधी से बहुत प्रमाता कल्प रक्खे हैं अन्तःकरण
विशिष्ट चैतन्यकूं प्रमाताकहतेहैं कोई ऐसाकहते हैं अनेकअज्ञान
हैं बनवत् जो अज्ञानोंका समुदाय सो समष्टि और वृक्षवत् जो
एक अज्ञान सो व्यष्टि वोहीचैतन्य। अज्ञान। समष्टि। करकेउप
हित ईश्वर और वोही चैतन्य व्यष्टि अज्ञान करके उपहितजीव
कोई ऐसा कहते हैं करणीभूतजो अज्ञान उससे उपहित चैत-
न्य ईश्वर और अन्तःकरण करके उपहित वेही चैतन्य जीव
तात्पर्य्य कारण उपाधी वाले ईश्वर और कार्य्य उपाधी वाला
जीव सबका सिद्धान्त यो है मायोपहित चैतन्य ईश्वर। अ-
विद्योपहित चैतन्य जीव सो ईश्वर ज्ञान शक्ति करके उपहित
जगत् के निमित्त कारण विक्षेपशक्ति करके उपहित उपादान
कारण जैसे मकड़ी जालेके प्रति चैतन्य प्रधानता करके तोनि-
मित्त कारण और शरीर प्रधानता करके उपादान कारणसोमक-

ड़ी का दृष्टान्त श्रुतिने कहाहै कि जिस प्रकार मकड़ी जालेकूं रचती है फिर आपनेमें लय करलेतीहै तात्पर्य परमेश्वर जगत् के कर्त्ता अभिन्न निमित्तोपादान कारण हैं अर्थात् नहीं हैं भिन्न निमित्त और उपादान कारण जिन्होंसे सो अभिन्न निमित्तोपादानकारण इसप्रकार जगत् के कारण ईश्वरहैं ऐसे नहीं हैं जैसे घटके बनाने में कुलाल भिन्न निमित्तोपादानकारण है अर्थात् भिन्नहैं निमित्तऔर उपादानकारण जिससे सो भिन्न निमित्तोपादान कारण कुलाल तात्पर्य घटके बनाने में मृत्तिका उपादान और कुलाल दण्ड चक्रादिक निमित्त है ईश्वर तो आपही उपादान और आपही निमित्त कारणहै पूर्वरीतिसे भले प्रकार विचारना योग्य है निरीश्वर वादी पूर्वमी मांसकादिकूं जो यो तर्क जगत् के मोह केलिये वाचाल करावें हैं उस तर्क कूं सुनो वो लोग यों कहतेहैं ईश्वर जो त्रिभुवन कूं रचतेहैंसो त्रिभुवन के रचने में क्या क्या चेष्टा करते हैं और रचने के समय किस प्रकारकी कायाहै जिनकी अर्थात् किसरूप हुये हुये और क्याहै उपाय और आधार जिनका और क्या उपादानहै यों तर्क उनकी अतर्क्य ईश्वर के विषय दुर्बलहै परमेश्वर की रचना में तर्कका अवसर नहीं क्योंकि परमेश्वर की माया नहि घटने के योग्य पदार्थ कूं घटा सक्तीहै और मनुष्यकी रचना इन्द्रजालादिमें बुद्धि काम नहीं करती है परमेश्वर की रचनामें तो नष्ट बुद्धि तर्क करते हैं तो भी उस तर्कके खण्डन के लिये कहाहै जो ऊपर अभिन्न निमित्तोपादान कारण प्रकार वो वज्र उनके मुखमें मारना योग्यहै ॥

इस रीति से जगत् का कर्त्ता ईश्वर कूं सिद्ध किया और कारण प्रपंचका यहां तक निरूपण किया जगतमें तीनि प्रपंच हैं कारण १ सूक्ष्म २ स्थूल ३ अब सूक्ष्म प्रपंच का निरूपण करते हैं पूर्व सिद्धि किये हुये जो मायो पहित चैतन्य ईश्वर उनसे प्रथम महत् तत्त्व अहंकार की सूक्ष्म अवस्था फिर महत्तत्त्व से अहंकार

अर्थात् मैं एकहूं बहुत होजाऊं फिर अहंकारसे आकाश आकाश से वायु वायु से तेज तेजसे जल जल से पृथिवी अर्थ इन सबका ऐसा करना महत्तत्व करके उपहित जो ईश्वर उनसे अहंकार हुआ तात्पर्य्य योहैं महत्तत्वादि सब जड़ पदार्थ हैं बिना चैतन्य रचना नहीं होसक्ती है निश्चय इसी आत्मा से आकाश हुआहै यो श्रुतिका अर्थहै माया कूं तीन गुणों वालीहोने से कार्य्य भी उसका आकाशादि पंच तीन गुणों वाले हैं उन कूं अपंची कृत सूक्ष्म भूत और तन्मात्रा भी कहते हैं इन्हीं सूक्ष्म भूतों से पंची कृत स्थूल भूत उत्पन्न हुयेहैं और सूक्ष्म शरीर १७ लिंगवाला उत्पन्न हुवा १७ लिंग येहैं॥

टी०। सूक्ष्म शरीर कूं कोई १६ लिंग कोई १७ कोई १९ लिंगवाला कहतेहैं लिंगही कूं तत्व कहतेहैं इंद्रिय दश प्राणपंच अन्तःकरण एक इस प्रकार १६ और इन्द्रिय प्राण १५ मन बुद्धि २ इसप्रकार १७ और इन्द्रिय प्राण १५ मन बुद्धि चित्त अहंकार ४ इसप्रकार १९ परन्तु बहुत १७ तत्ववाला कहतेहैं॥

मू०। शब्दादिकाज्ञान होताहै जिनइन्द्रियोंसे सोज्ञानेन्द्रिय पंच और कर्म किया जाताहै जिन इन्द्रियों से सो कर्मेन्द्रिय पंच प्राणादि पंच मन बुद्धि २ आकाशादिके सत्वगुणके अंशसे पृथक् पृथक् पंच ज्ञानेन्द्रिय हुये सोई लिखतेहैं आकाश से श्रोत्र वायु सेत्वक् तेजसे चक्षु जलसे रसना पृथिवीसे घ्राण और आकाशादि के मिलेहुये सत्वगुण के अंशसे अन्तःकरणसो वृत्ति भेदसे चार प्रकारका है संकल्प विकल्पवाला मन निश्चयवाली बुद्धि अभि-मानवाला अहंकार अनु संधान वाला चित्त और आकाशादि के रजोगुण के अंशसे पृथक् पृथक् पंच कर्मेन्द्रिय हुयेहैं आकाशसे वाक् वायुसे पाणि तेजसे पाद जलसे उपस्थ पृथिवीसे वायु और आकाशादि के मिले हुये रजोगुण के अंशसे प्राण सो वृत्ति भेदसे पांच प्रकारका है,बाहरकूं निकलनेवाला नाशिका

यो यंत्र माण्डूक्य वृहदारण्य छान्दोग्य उपनिषत् और पंचीकरण वार्त्ति- उन्होंके मतसे बनायागया है विस्तार इसका

एकवोही चैतन्य मायोपहित और सूक्ष्मसमष्टि करके उपहित स्थूल समष्टि करकेउप- चैतन्य समष्टि स्थूल उपाधि का अभिमान छोड़कर मायोपहित और सूक्ष्म समष्टि करके जाताहै फिर वोही चैतन्य समष्टि स्थूल और समष्टि सूक्ष्म उपाधि का अभिमान छोड़कर अन्तर्य्यामी सबल ब्रह्म कहा जाताहै और वोही चैतन्य तीनों उपाधियों से रहित द्योपहित चैतन्यजीव नामाजाग्रत अवस्थामें स्थूलसूक्ष्मकारण शरीरोंका अभिमानीहुआ विश्व कहाजाताहै फिरवोही चैतन्य सुषुप्ति अवस्थामें कारण शरीरका अभिमानी हुआ प्राज्ञ कहा शुद्धपरमात्मा कहाजाताहै इसीकू तुर्याअवस्था कहतेहैं---सृष्टि स्थितिलयका जो कारण सो पदार्थोंको कुछभी नहींजाने सोप्राज्ञ---अन्त:करणमें सामान्यकरके बिकलताकरके जो पदार्थोंको

ओम्‌कीमात्रा	समस्तवेदोंकासार	यो दोदृष्टान्त हैं जैसे वस्त्रमें चार अवस्था	जैसेपृथ्वीमेंचार अवस्था	योजो शुद्ध ब्रह्म सच्चिदानन्द नित्यमुक्त सोई अ- कहा जाताहै+यो अज्ञान अनादि अनिर्वाच्य सत्व रज है सो अज्ञान शुद्ध तत्व प्रधान हुआ माया मलिन स- में प्रतिबिम्ब जो उसी चैतन्य का सो जीव कहा तत्वमसि महाबाक्य + जैसे किसीनेकहा सो अर्थात् रुपयेतुम यज्ञदत्त कूं चारोंपदोंका अर्थ जानाजावे पीछे वाक्यार्थ जानाजाता		
ँ	सच्चिदानन्द शुद्धब्रह्मनित्यमुक्त	सुफ़ेद	निर्बीज	उपाधि	अभिमानी	अज्ञान
म्	अज्ञानकारण उपाधिसे मायाअविद्याके भेदसे दोप्रकार का	घट्टितप्रथमदेना रंग चावलवाफ्टकरीका	छिपां वीज वाली	शुद्धसत्व प्रधानहुआ माया	ईश्वरअन्तर्यामी अव्याकृतजगत्कारण सबलब्रह्म	ढका जावे पदार्थ जिसकारणका और दीखे उसीका नाम प्रतीत होताहै जिसकारणही शुद्ध ब्रह्म जिस कारणसे ईश्वर हिरण्यगर्भ बिराट् है उन्हींका नाम उपाधिहै× प्रथमंपुन: । स्वस्वेतरद्विती
उ	सूक्ष्मउपाधिसोसमष्टि व्यष्टिके भेद से दोप्रकार का	लांछित उसमें चिन्हकरदेनेजैसे प्रथम चुनरीमें	अंकुर वाली	समष्टि सूक्ष्म	हिरण्यगर्भ सूत्रात्माप्राण	
अ	स्थूलउपाधिसोसमष्टिव्यष्टिके भेदसे दोप्रकार की	रंजितरक्तादि रंग देना	फल फूल के सहित वृक्ष वाली	समष्टि स्थूल	बिराट्वैश्वानर	

आ वा ते
आ आ वा वा ते
आ आ आ आ वा वा वा वा ते ते ते ते –
आ वा ते ज पृ वा आ ते ज पृ ते

कादि जो जो श्री शंकर भगवन् भाष्यकारसे आदिलेकर आचार्यों के ग्रन्थहैं आनन्दाऽमृत वर्षिणीके दूसरेअध्यायमें है ॥

हित तात्पर्य्य तीनों उपाधियोंका अभिमानी हुआ विराट् वैश्वानरकहाजाताहै फिरवोही उपहित तात्पर्य्य सूक्ष्म समष्टि और मायाका अभिमानीहुआहिरण्यगर्भ सूत्रात्मा प्राण कहा केवल मायोपहित हुआ तात्पर्य्य मायाका अभिमानी हुआ ईश्वर जगत्कारण अव्याकृत तात्पर्य्य तीनों उपधियोंका अभिमान छोड़करशुद्धब्रह्म वैसाहीहोजाताहै ॥ एकवोही अवि- कहाजाताहै फिर वोही चैतन्यस्वप्न अवस्थामें सूक्ष्म कारण शरीरोंकाअभिमानीहुआ तैजस जाताहै फिर वोहीचैतन्यतीनों शरीरोंकाओर तीनों अवस्थाका अभिमान छोड़कर वैसाही ईश्वर+साराजगत् जिसकेगर्भमेंहै सोहिरण्यगर्भ+नानारूप जो होरहाहै सोबिराट्+जो जानता है सो तैजस+बिशेषकरके जो पदार्थोंको जानताहै सो विश्व+

ज्ञान करके उपहित अध्यसोपमें मुक्तिकी इच्छावाले पुरुषोंकूं समझाने के लिये ईश्वरजीव तम इनतीन गुणोंवालाहै इनतीन गुणोंमें जो सत्वगुण सो शुद्धमलिन भेदसे दो प्रकारका त्व प्रधानहुआ अविद्या कहा जाताहै मायामें प्रतिबिम्ब जो चैतन्यका सो ईश्वर अविद्या जाताहै ॥ +

का अर्थ तात्पर्य्य तत्वपदोंका लक्ष्यार्थ एक शुद्ध ब्रह्म चैतन्य

देदो इसकूंवाक्य कहतेहैं इस वाक्यमें चारपदहैं सो १ तुम २ यज्ञदत्तकूं ३ देदो ४ प्रथम है ऐसेही महावाक्यमें तत् १ त्वम् २ असि ३ तीन पदहैं +

सत्व रज तम	उपाधि	अभिमानी	अवस्था	शरीर	मात्रामें
करके तात्पर्य्य पदार्थ और उपाधिहै जैसे शुक्तिमें रजत करके सोई उपाधि है ऐसे से तात्पर्य्य जिन्ह उपाधियों बिश्वतैजस प्राज्ञ कहाजाता द्विधाविधाय चैकैकं चतुर्द्धा यांशैर्योजिनापंचपंचते ॥	मलिन सत्व प्रधान हुआ अविद्या	प्राज्ञ	सुषुप्ति	कारण	म्
	व्यष्टि सूक्ष्म	तैजस	स्वप्न	सूक्ष्म	उ
	व्यष्टि स्थूल	विश्व	जाग्रत	स्थूल	अ

ज प्र

ते ज ज प्र प्र

ज ज ज ज प्र प्र प्र प्र

आ वा ज प्र ज आ वा ते प्र प्र आ वा ते ज

मुखमें रहने वाला प्राण १ नीचेकूं जानेवाला वायु आदिमें रहने वाला अपान २ सब शरीरमें फिरने वाला सब शरीरमें रहने वाला व्यान ३ खाये पियेकूं सब नाड़ियोंमें पहुंचाने वाला सारे शरीर में रहने वाला समान ४ ऊपरकूं जाने वाला कण्ठमें रहने वाला उदान ५ और पंच उप प्राण हैं उनका भी इन्हीं पांचमें अंतर्भावहै,उद्गारमें जो हेतु सो नाग १ नेत्रोंके खोलने मीचनेमें जोहेतु सो कूर्म २ भूकका जोहेतु सो कृकरः ३ जम्भाई लेनेमें जोहेतु सो देवदत्त ४ सब जगे रहने वाला धनंजय जो मुरदेकूं फुला देता है आकाशसे दो इन्द्रिय श्रोत्र और वाक्‌हेतु योंहै श्रोत्र करके जो आकाश का सद्‌गुण सो ग्रहण किया जाता है और वाक्‌से बोला जाताहै वायुसे दो इन्द्रिय त्वक् और पाणि हेतु योहै त्वक् करके तो वायुका जो स्पर्श गुण उसका ज्ञान होताहै और पाणिसे त्वक्‌की रक्षा होतीहै तेजसे दो इन्द्रिय चक्षु और पादहेतु योंहै चक्षु करके तो तेजका जो गुणरूप उसका ज्ञान होताहै और पैरके मलनेसे चक्षुकी गरमी दूर होतीहै जलसे दो इन्द्रिय रसना उपस्थ हेतु योंहै रसना करके तो जलका जो गुण रस उसका ज्ञान होताहै और तरह रहता है और उपस्थ करके जलका त्याग होताहै पृथिवीसे दो इन्द्रिय घ्राण और वायुहेतु योहै घ्राण करके तो पृथिवीका जो गुण गंध उसका ग्रहण होताहै और वायुसे गंधका त्याग होताहै,और अन्तःकरण समष्टि पांचों भूतोंके सत्वगुण के अंशसे उत्पन्न हुआहै हेतुयोहै पांचों ज्ञानेंद्रियों के बिषोंकूं अनुभव करताहै,अन्नमय,प्राणमय, मनोमय,विज्ञानमय,आनन्दमय,येपंचकोश कारण सूक्ष्म स्थूल शरीरों के अन्तर्भाव हैं आगे जो कहेंगेस्थूल शरीर सोतो अन्नमय कोश हैं सूक्ष्म शरीरमें तीन कोशहैं पंच कर्मेन्द्रिय करके सहित जो पंच प्राणसो प्राणमय कोश और पंच ज्ञानेंद्रिय करके सहित जो मनसो मनोमय कोश और पंच ज्ञानेन्द्रिय करके सहित जो

बुद्धि सो विज्ञानमय कोश है मनोमय बिज्ञानमय कोशमें येभेद है मनोमय कोश तो करण और विज्ञानमय कोश कर्त्ता है क्रिया में कर्त्तादि ये षट्कारक होते हैं। कर्त्ताकर्म चकरणंच संप्रदानं तथैवच। अपादानाधिकरणमित्याहुःकारकाणिषट्॥ और कारण शरीरमें कारण शरीर भूता अविद्यामें जो मलिन सत्वसो प्रिय- मोद प्रमोद वृत्तिकरके सहित आनन्दमय कोशहै कोईअज्ञानकूं आनन्दमय कोश कहतेहैं जो बस्तु प्राप्तनहो और अच्छीप्रतीत हो उस समयकी वृत्तिकूं प्रिय कहतेहैं १ फिर वोही बस्तु जब अपनी होजावे उस समय में जो आनन्द सो मोद २ उसके भोगने में जो आनन्द वो प्रमोद ३ यो सूक्ष्म शरीर समष्टि ब्यष्टि भेदसे दो प्रकार का है बनवत् सूक्ष्म शरीरोंका समुदाय समष्टि वृक्षवत् पृथक् पृथक् एक एक सूक्ष्म शरीर ब्यष्टि जैसे उपबन समष्टि और उसी उपबन का एक एक वृक्ष ब्यष्टिसूक्ष्म समष्टि करके उपहित वोही मायोपहित चैतन्य हिरण्य गर्भ कहाजाता है और सूक्ष्म ब्यष्टि करके उपहित वोही अविद्योप- हित चैतन्य तैजस कहा जाताहै समष्टिब्यष्टि कूं तादात्म्यहोने से उनकरके उपहित हिरण्यगर्भ तैजस की भी तादात्म्य ताहै जैसे वन और वृक्ष करके उपहित आकाशमें कुछ भेदनहीं ऐसे हिरण्यगर्भ तैजस में भेद नहीं और भी दृष्टांत हैं जाति ब्यक्ति सामान्य बिशेष नगर मो हल्ला इनका बिना बिचार के भेद हैं बास्तव भेदनहीं, यो सूक्ष्म शरीर अविद्या कामकर्म करके सहित पुर्यष्टक कहाता है सोई लिखतेहैं, ज्ञानेन्द्रिय पंच १ कर्मेन्द्रिय पंच २ चारअन्तःकरण ३ पंचप्राण ४ पंचसूक्ष्म भूत ५ अविद्या ६ काम ७ कर्म ८ अविद्याका कार्य चार प्रकार का है ब्रह्मलोक पर्यन्तजो पदार्थहैं उनमें नित्यबुद्धि होनी १ दुःखोंमें औरदुःखों के साधनोंमें जो सुखबुद्धि २ देहादि अनात्मा पदार्थों में आत्मा बुद्धि ३ अपवित्र जो अपने और पुत्रादिके शरीर उन में पवित्र

बुद्धि ४ काम रागकूं कहतेहैं कर्म तीन प्रकारका है संचित १ आगामी २ प्रारब्ध ३ अपना कियाहुआ कर्म फलकूं नहीं देकर जो अदृष्टरूप करके ठहर रहाहै सो सञ्चित १ इस शरीर में जो किया जाताहै सो आगामी २ स्थूल शरीरके जन्म स्थिति का जो हेतु सोप्रारब्ध ३ सञ्चितआगामी कर्मोंके फलका भोगकरके वा उसका बिरोध कर्मकरकेवाब्रह्म ज्ञानकरके नाशहोजाताहै॥

और प्रारब्ध कर्मका भोगनेसे नाश होताहै प्रारब्धसे पृथक् अविद्यादि पंच क्लेश हैं उनका ब्रह्मज्ञानसे नाशहोताहै अविद्या१ अस्मिता २ राग ३ द्वेष ४ अभिनिवेश ५ कारणकार्यकरके अविद्यातो दो प्रकारकी ऊपर लिखआये हैं अहंकारकीसूक्ष्म अवस्था कूं अस्मिता और महत्तत्व और सामान्य अहंकार भी कहते हैं राग काम कूं कहते हैं द्वेष क्रोध कूं कहते हैं अपने आप ग्रहण करके फिर उसके त्यागकूं न सहना इसकूं अभिनिवेश कहते हैं ब्रह्मकूं जान करके सारे क्लेशों से छूटजाता है या श्रुतिका अर्थहै यहां तक सूक्ष्म शरीर की उत्पत्ति लिखी अब स्थूल शरीर की उत्पत्ति लिखते हैं, पंचीकृत पंच स्थूल भूत हैं आकाशादि के तामस अंशकूं लेकर अर्थात् बुद्धि में कल्पना करके प्रथम एक एक के दो दो टूककरे दो में से एककूं पृथक् रक्खे उस दूसरे के चार चार भाग करे फिर उन चारों भागोंकूं अपने अपने भागकूं छोड़कर औरोंमें मिला देना यो पंची करण कहलाताहै जिसका भाग जिसमें सिवाय है वोही कहने में आताहै जैसे मनुष्य शरीर कूं पार्थिव कहते हैं, पंचीकृत् स्थूल भूतों का जो रचाहुआ स्थूल शरीर उसमें पंचीकृत् स्थूल भूतहैं और अपंचीकृत् भूतों के तामस अंशका कार्य इस प्रकार है, पंचीकृत् जो पृथिवी उसकी पृथिवी का कार्य अस्थि क्योंकि कठिन है जलका कार्य मांस कुतः वहजाता है और शिथिलहै तेजका कार्य नाड़ी कुतः ज्वर की परीक्षा करती है वायु का कार्य त्वक् कुतःस्पर्श करती

है आकाश का कार्य रोमकुतः काटनेसे दुःख नहीं होताहै पंची-कृत् जो जल उसकी पृथिवी का कार्य शोणित कुतः पृथिवीकी सदृश रक्तहै जलका कार्य्य शुक्र कुतः श्वेतहै और उससे गर्भ होताहै जैसे जलसे सब बस्तुकी उत्पत्ति है तेजका कार्य मूत्र कुतः उष्णहै वायु का कार्य स्वेदकुतः बहुत दम चलने से आ-जाताहै और वायु से सूख जाताहै आकाश का कार्य राल कुतः ऊपरकूं जातीहै और आकाश भी ऊंचाहै और पंचीकृत् जो तेज उसकी पृथिवी का कार्य आलस्य कुतः आलस्यमें जड़ताहै जल का कार्य क्रान्ति कुतः जलके स्पर्श स्नानादि से सुन्दरता होती है तेजका कार्य क्षुधा कुतः अन्नकूं पचातीहै वायु का कार्य तृषा कुतः ओष्ठ कंठ सूखजाताहै आकाश का कार्य निद्रा कुतः निद्रा में निर्विकल्प होजाताहै और पंचीकृत् जो वायु उसकी पृथिवी का कार्य संकोचन कुतः जिस समय मनुष्य सुकड़ कर बैठे तो भारी और जड़सा होजाती है जलका कार्य चलना कुतः जल भी चलता है तेजका कार्य उठना उछलना कुतः उठने उछलने में ऊंचा होताहै और अग्नि भी ऊपरकूं जाताहै वायुका कार्य दौड़ना कुतः दौड़ने में बल होताहै और वायु में भी बल और वेगहै आकाश का कार्य पसरना कुतः आकाश भी ब्यापक है और पसारने में भी ब्यापक होताहै अर्थात् फैलता है और पंचीकृत् जो आकाश उसकी पृथिवी का कार्य कटी जहां मल रहता है कुतः गंध स्थान है जलका कार्य उदर कुतःज-लका स्थानहै तेजकाकार्य हृदय कुतः उष्ण रहताहै बायुकाकार्य कंठकुतः बायुका स्थानहै आकाशका कार्य शिर कुतः शब्दस्थान है और अनहद शब्द होता रहताहै और पंचीकृत आकाशका भेद दूसरे प्रकार ऐसेहैं उसकी पृथिवीका कार्य भयकुतः भयसे अन्तःकरण में तम प्रधान होजाताहै और तम पृथिवी काभाग है जलका कार्य मोहकुतः जलके स्पर्शसे उत्पन्न होतीहै जोसुंद-

रता उसकूं देखकर मोह होती है तेजका कार्य क्रोधकुतः क्रोधके समय हृदय भस्म होताहैबायुकाकार्य कामकुतः बायुभी चंचलहै और कामभी चंचलहै आकाशका कार्य लोभकुतः आकाशकीभी अवधि नहीं लोभकी भी अवधि नहीं॥

	पृथिवी	जल	तेज	बायु	आकाश
पृथिवी	अस्थि	मांस	नाड़ी	त्वचा	रोम
जल	रक्त	वीर्य	मूत्र	स्वेद	राल
तेज	आलस्य	क्रान्ति	भूख	प्यास	निद्रा
बायु	संकोचन	चलना	उठना उछलना	दौड़ना	फहलाना
आकाश	कमरमें	पेटमें	हृदय में	कंठ में	शिरमें
दूसरी प्रकार आकाश	भय	मोह	क्रोध	काम	लोभ

शब्दगुण जिसमें रहताहै सो आकाश सावकाश रूप रूप रहित स्पर्शवाला बायु गर्म स्पर्शवाला तेजसो चारप्रकार काहै अग्निआदि स्वर्णादि बिद्युदाऽऽदि जठराग्नि शीत स्पर्शवाला जल गंधवाली पृथिवी पंच भूतोंके जो लक्षण कहेहैं सो तीनों दोषों से रहित हैं जिस लक्षण में अव्याप्ति अति व्याप्ति असम्भव ये तीनदोष पाये जावें वो प्रमाण नहीं जैसे किसीने कहा गौकपिला होतीहै इसमें अव्याप्ति दोषहैकुतः बहुत गौकपिला नहीं होतीं फिर कहा सींगवाली गौ होतीहै इसमें अतिव्याप्ति दोषहै क्योंकि सींगहिरन आदिके भी होतेहैंफिर किसीने कहा एक खुरवालीगौ होतीहै इसमें असम्भव दोषहै कुतःयहलक्षण गोमें सम्भव नहीं होसक्ता वो लक्षण प्रमाण है जो सब दोषसे

रहित हो जैसे गौ का लक्षण सींग शास्ना आदि वाली गौबि-
चारो इसमें कोई दोषनहीं आकाश में एक गुण शब्द वायुमें दो
शब्द स्पर्श तेजमें तीनशब्द स्पर्श रूप जलमें चार शब्द स्पर्श
रूपरस पृथिवीमें पांचशब्द स्पर्श रूपरस गंधपंचीकृत पृथिवी
आदिसे ब्रह्माण्ड हुआ ब्रह्माण्ड में चौदहलोक भूः भुवः स्वः ।
महाजन । तप । सत्य । येसातऊपरऊपरकेलोकहैं और तल । वि-
तल । सुतल । तलातल । महातल । रसातल । पाताल । येसात७
नीचे नीचेके लोकहैं ब्रह्माण्ड से मनु और सतरूपा हुये ब्रह्माण्ड
में जो पृथिवी उससे औषधि हुई औषधि से अन्न मातापिता के
खाये हुयेका परिणाम जो शोणित उससे स्थूल शरीर उत्पन्न
हुआ शरीर चार प्रकारके हैं मनुष्यादिके शरीर जरायुजअर्थात्
जरससे उत्पन्न हुये पक्षी नागादि के शरीर अण्डज अर्थात्
अण्डेसे उत्पन्नहुये लीक् जूं आदिके शरीर स्वेदज अर्थात्पसीने
से उत्पन्न हुये तृण वृक्षादि उद्भिज पृथिवीकूं भेदनकरके उत्पन्न
हुये और मनुसनक सनन्दनादि शरीर इन चारों से पृथक्हैं व
मानवीसृष्टि में हैं सुनाजाताहै ये ब्रह्माजी के मनसे उत्पन्न हुये
हैं यह स्थूल शरीर समष्टि व्यष्टि भेद करके दो प्रकार का है
पंचीकृत् पंच महाभूत और उनका कार्य्य ब्रह्माण्ड और ब्रह्मा-
ण्डके भीतर जो पंच भूतोंका कार्य स्थूल शरीरादि का समुदाय
यह सब समष्टि और पृथक् पृथक् स्थूल शरीर व्यष्टिइसस्थूल
समष्टिकरके उपहित वही मायोपहित चैतन्य विराट कहाजाता
है और स्थूल व्यष्टि करके उपहित वही अविद्योपहित चैतन्य
विश्व कहाजाताहै समष्टिव्यष्टिकूं जाति व्यक्ति सामान्य विशेष
वनवृक्षवत् तादात्म्य होनेसे उन करके उपहित विराट विश्वकी
भीएकताहै इसजीवकी प्रसिद्ध तीन अवस्थाहैं प्रसिद्ध लिखने से
यह अभिप्राय है कोई मरण और मूर्छा ये दो अवस्था और भी
कहतेहैं परन्तु प्रसिद्ध तीन अवस्थाहैंजाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति जाग्रत्

का अर्थ जानने के लिये प्रथम इन्द्रिय और अन्तःकरण और शब्दादि बिषय और बोलनादि क्रिया और संकल्पादि अन्तःकरण के धर्म और दिक् आदि देवताओं के सहित सबकूं पृथक् पृथक् लिखतेहैं यह संकेत याद रखना चाहिये एक का अंक जिस के आगे उस कूं इन्द्रिय वा अन्तःकरण जानना इसी कूं अध्यात्म कहतेहैं और दोका अंक जिसके आगे उसकूं ज्ञानेन्द्रिय काबिषय वा कर्मेन्द्रिय की क्रिया वा अंतःकरण का धर्म जानना इसी कूं अधि भूत कहते हैं और तीनका अंक जिस के आगे उसकूं देवता जानना इसीकूं अधि दैव कहतेहैं जिस इन्द्रिय और मनादि के आगे बिषय क्रिया धर्म देवता लिखेहैं उसी उस इन्द्रिय मनादि के बिषय क्रियाधर्म देवताहैं शब्दादिपांचकूं बिषय और बोलना-दि पांचकूं क्रिया और संकलपादि चारकूं धर्मबोलतेहैं श्रोत्राऽऽदि इन्द्रिय सूक्ष्म हैं कान नाशिकादि जो स्थूल शरीरमें दीखते हैं ये उनका आश्रयहैं अर्थात् उनमें रहतेहैं बहुत करके तो बहिर्मुख हैं कभी भीतरका भी कुछ ज्ञान होजाताहै श्रोत्र कानमें रहता है बहुत करके तो बाहर के शब्द कूं सुनता है कभी कान बन्द करने से कुछ शब्द भीतरकाभी सुना जाताहै श्रोत्र करके सुना जाता है जो शब्द सो दो प्रकार काहै एक शस्त्रादि का दूसरा भेरी आदिका सो पांचों भूतों में रहता है २ दिक् ३ त्वक् सारे शरीर में रहता है बहुत करके तो बाहर के शीत कोमलादि कूं विषय करताहै कभी उष्णादि बस्तुके खाने से भीतर के स्पर्शका ज्ञान होताहै १ त्वक् करके जो स्पर्श किया जाताहै सो स्पर्श पांच प्रकार का है शीत गर्म न शीत न गर्म कठिन कोमल शीत स्पर्श जलमेंगर्म स्पर्शतेजमें न शीत न गर्म पृथिवी वायुमेंकठिनकोमल पृथिवी में और पृथिवी के कार्य बस्त्रादि में रहता है २ वायु ३ चक्षु नेत्रोंमें कृष्ण तारे के अग्र भागमें रहता है बहुत करके तो बाहर के रक्त पीतादि रूप कूं देखता है कभी नेत्र के मीचने में

भीतर का भी तम प्रतीत होताहै १ चक्षु करके जो रूप देखनेमें आताहै सो सात प्रकार काहै शुक्ल नील पीत रक्त हरित कपिश चित्र भेद करके सो पृथिवी में तो सात प्रकार का और जल में अभास्वर शुक्ल और तेजमें भास्वर शुक्ल रहताहै २ सूर्य ३ रसना जीभके अग्र भागमें रहता है बहुत करके तो बाहर के मधुरादि रस अनुभव करताहै कभीडकार आनेसे भीतरके रसका भीज्ञान होजाता है १ रसना करके जो रस का अनुभव होताहै सो ६ प्रकार काहै मधुर अम्ल लवण कटु कषाय तिक्त भेद करके सो पृथिवी में तो ६ प्रकार का और जलमें केवल मधुर रहताहै २ वरुण ३ घ्राण नाकके दोस्वर उनके अग्र भागमें दोनोंके बीच में रहताहै बहुत करकेतो बाहर के गन्ध कूं ग्रहण करता है कभी डकार आनेसे भीतरके गन्धकाभी ज्ञान होजाताहै १ घ्राणकरके जो गन्ध का ग्रहण किया जाता है सोदो प्रकारका है सुगन्ध दुर्गंध सो पृथिवीमें रहता है २ पृथिवी ३ यहांतक ज्ञानेन्द्रियों का निरूपण किया वाक् जीभमें रहताहै १ बोलन २ अग्नि ३ पाणि हाथोंमें रहता है १ लेना देना २ इन्द्र ३ पाद चरणों में रहता है १ चलना फिरना २ बिष्णु ३ उपस्थ मूत्र करने का जो शरीर में चिन्ह उसमें रहता है १ मैथुन मूत्रत्याग २ प्रजापति ३ बायु मल त्याग करने का जो शरीर में चिन्ह उसमें रहताहै १ मलकात्याग करना २ मृत्यु ३ यहांतक कर्मेन्द्रियों का निरूपण किया अन्तःकरण हृदय गोलक में रहताहै सोवृत्ति भेदकरके चारप्रकारकाहै मन बुद्धि चित्त अहंकार मन १ संकल्प बिकल्प मनोराज्यादि २ चन्द्र ३ बुद्धि १ पदार्थों का निश्चय करना २ बृहस्पति ३ चित्त १ चिन्तवन करना २ क्षेत्रज्ञ ३ अहंकार १ यो मैंने किया यो मेरे करने योग्यहै २ रुद्र ३ अमान अदम्भ अहिंसा क्षमा आर्जव बैराग्य शम दम मुक्ति की इच्छा संतोष औदार्यादि ऐसी ऐसी और भी अन्तःकरणकी सत्वगुणी

वृत्ती हैं और तृष्णा दम्भ लोभ अहंकार अशम भोगों की इच्छा चपलता अभिमान रागादि ऐसी ऐसी औरभी बहुत अन्तःकरण की रजोगुणीवृत्ती हैं और निद्रा आलस्य प्रमाद मोहादि अन्तः करण की तमोगुणी हैं अर्थात् यो सब अन्तःकरण का धर्महै जो संकल्प विकल्प वाली वृत्ति सो मन की और निश्चय वाली बुद्धि की और अनुसन्धान वाली चित्त की और अभिमान वाली अहंकार की वृत्ति, सत्वगुणी वृत्ति से पुण्य की उत्पत्ति होतीहै रजोगुणी वृत्ति से पाप की उत्पत्ति होती है तमोगुणी वृत्ति से मूर्खता बढ़तीहै वृथा अवस्था व्यतीत होतीहै उससे न कुछ इस लोकमेंप्राप्ति न कुछ परलोक में प्राप्ति है पीछे तमोगुणी वृत्ति बहुत दुःख की हेतु है॥

भूत	ज्ञानेन्द्रिय	बिषय	ज्ञानेंद्रियों के देवता	कर्मेंद्रिय	क्रिया	कर्मेन्द्रियों के देवता
आकाश	श्रोत्र	शब्द	दिक्	वाक्	बोलना	अग्नि
वायु	त्वक्	स्पर्श	वायु	पाणि	लेना देना	इन्द्र
तेज	चक्षु	रूप	सूर्य्य	पद	चलना	विष्णु
जल	रसना	रस	बरुण	उपस्थ	मैथुनादि	प्रजापति
पृथ्वी	घ्राण	गंध	पृथ्वी	गुदा	मलत्याग	मृत्यु

श्रोत्रादि इन्द्रियों के जो देवतादिक आदि॥

उन कर के युक्त श्रोत्रादि करके जो अपने अपने विषयों का अनुभव होना सो जाग्रत अवस्था यो जो जाग्रत अवस्था और यो स्थूल शरीर मन इन्द्रियादि का आश्रय इन दोनों का जो अभिमानी जीव सो विश्व कहा जाता है प्रथम भी विश्व बिराट् की एकता लिख आयेहैं इसलिये भेद की नि-

वृत्ति के लिये विश्वकूं बिराट् रूप करके देखे १ जाग्रत अवस्था में जो भोग देनेवाले कर्म उनका उपराम हुये सन्ते और बाहर श्रोत्रादि इन्द्रियों का उपराम हुये सन्ते जाग्रत अवस्था में जो देखा और सुना उनहीं संस्कार करके केवल अन्तःकरण करके जो निद्रामें प्रपंच की प्रतीत सोई स्वप्न अवस्था वोही जाग्रत अवस्था का अभिमानी जो विश्व सोई स्वप्न अवस्था औरसूक्ष्म शरीर का अभिमानी हुआ तैजस कहाजाता है तैजस हिरण्य गर्भकी एकता है तैजस कूं हिरण्यगर्भरूप करके देखे २ जाग्रत स्वप्नमें जो भोग देनेवाले कर्म उनका उपराम हुये सन्ते स्थूल सूक्ष्म शरीरों का जो अभिमान उसके निवृत्ति होने से बुद्धिका कारणात्मा में जो स्थित होना सो सुषुप्ति अवस्था मैंने न कुछ जाना सुखकरके मैंने निद्राका अनुभव किया जो जाग्रतअवस्था में जिस अवस्थाकी व्यवस्था कहता है वोही सुषुप्ति है तात्पर्य जिस अवस्था में बुद्ध्यादि सबलय होजाते हैं वोही सुषुप्ति है वोही स्वप्न अवस्था का अभिमानी जो तैजस जो यो सोई सुषुप्ति अवस्था और कारण शरीर का अभिमानी हुआ प्राज्ञकहा जाता है प्राज्ञ ईश्वर की एकता है प्राज्ञकूं ईश्वर रूप करकेदेखे योही प्राज्ञ तीनों शरीर और तीनों अवस्था काअभिमान छोड़कर शुद्ध परमात्मा होजाता है जो यो उपासनाकरै मैं बिराट् वा हिरण्यगर्भ वा ईश्वर वा शुद्धब्रह्महूं इस उपासना करके वैसाही वैसा फल होताहै अर्थात् बिराटादि की उपासना करनेसे बिराट् आदि होजाताहै ऐसीऐसी उपासना उपनिषद आदिमें भलेप्रकारफलके सहित लिखीहैं और भी प्रणवआदि उपासनाहैं शुद्ध ब्रह्मसे लेकर पाषाण आदि मूर्त्ति पर्य्यंत उपासनाहैं जैसोअपनी सामर्थ्य जाने भेद उपासना वा अभेद उपासना वेद शास्त्रों में से निश्चय करके करे परमेश्वर की जैसी उपासना करैगा वैसाही वैसा फल होवेगा मुख्य अभेद उपासना शुद्धब्रह्म कीहै

और ईश्वर हिरण्यगर्भ बिराट् की अभेद उपासना और बिष्णु शिवादि राम कृष्णादि की भेद उपासना और नमोच्चारणादि पाषाणादि मूर्त्तियों की अर्चनादि ये सब उपासना उत्तरोत्तर गौणहैं जो अभेद उपासना शुद्धब्रह्म की न होसके तो भेदउपासना श्रीकृष्णचन्द्र महाराजादि की करने से ज्ञान द्वारा मुक्ति में सन्देह नहीं है जैसे कोई सिंह किसी पुरुष की छायाकूंदेख कर दौड़ा उस छायासे पुरुष की प्राप्ति होगई इसीप्रकारमणि प्रभा से आदि लेकर और भी बहुत दृष्टान्त हैं, अष्टावक्र जीका यो बाक्य है कि जिसकी जो मतिहै उसकी वैसेही गति होगी अर्थात् दासोऽहम् जिसकी मतिहै वो दासही है और ब्रह्माहमस्मियो जिसकी मतिहै वो ब्रह्मही है ब्रह्मबिद्ब्रह्मैव भवति इस श्रुति से इसप्रकार मायोपहित ब्रह्मका तटस्थ लक्षण निरूपण किया इसीकूं अध्यारोप कहतेहैं अब इसका अपवाद लिखते हैं अधिष्ठान में भ्रन्ता करके॥

टी०। जिसमें जोवस्तु कल्पित हो जैसे रज्जुमें सर्प॥

मू०। जो प्रतीत होना उस भ्रान्ति कूं अधिष्ठान से व्यतिरेक करके भ्रान्तीका अभाव निश्चय करना जैसे शुक्ति में रजत की भ्रान्ति प्रतीत होतीहै शुक्तिका रजत से ब्यतिरेक करके यो रजत नहीं है शुक्ति है यो जो रजत का अभाव निश्चय करना इसीकूं अपबाद बाध बिलापन भी कहते हैं सो बाध तीनप्रकार का है शास्त्र करके युक्ति करके प्रत्यक्ष करके वेद कहते हैं यो स्थूल सूक्ष्म प्रपंच नहीं है इस जगत भ्रान्ति रूप में ब्रह्म से पृथक् कुछनहीं है एक शुद्ध ब्रह्म है इस प्रकार शास्त्र करके प्रपंच से ब्रह्मका ब्यतिरेक करके प्रपंचका अभाव निश्चय करना यो शास्त्रकरके जगत्का बाधहै १ और घटसे मृत्तिकाका व्यतिरेक करके घटका अभाव निश्चय करना इसीप्रकार ब्रह्मसेव्यतिरेक करके सारे प्रपञ्चका अभाव निश्चय करना और जो देखने

में आताहै इसकूं भ्रान्ति निश्चय करके ब्रह्म मात्र निश्चय करना यो युक्ति करके जगत्का बाधहै यो जगत् सब ब्रह्महै इस कूं इसप्रकार जानना चाहिये ब्रह्माण्ड में जितने पदार्थ हैं सब में पांचवस्तु हैं है भान होता है प्यारा है नाम रूप संस्कृत में अस्ति भान्ति प्रियनाम रूप से ससा बोलते हैं प्रथम के तीन अंश सच्चिदानन्द ब्रह्म के हैं पदार्थ घटादि के नाश हुये भीनहीं नाश होतेहैं और नामरूप ये दो मायाके हैं माया कूं मिथ्याहोनेसे यो कार्यभी उसका नाम रूप दोनों अंशनाश होजाते हैं अन्वय व्यतिरेक करके ब्रह्ममात्र निश्चय किया जाता है सोई लिखते हैं जैसे एकघट पदार्थ है है भान होताहैप्याराहै येतीन अंश उसमें ब्रह्मके हैं और नामघट और रूपका लालाल गोलाकारऽदि ये दो मायाके अंशहैं है भान होताहै प्याराहै योब्रह्म का घटमें अन्वय है फिर घट फूट गया मायाके दोनों अंशनाम रूप जाते रहे घट में माया के दोनों अंशोंका व्यतिरेक है और ब्रह्मका फिर भी अन्वय है कैसे टूक हैं भान होतेहैं प्यारे हैं-हैभान होतेहैं प्यारे हैं यो ब्रह्मके तीनोंअंश वैसेहीहैं फिर उन टूकों का काल पाकर चूर्ण होगया मायाकेजो अंश नाम रूप थे वे दोनोंनाश होगये मायाके दोनों अंशोंका चूरण में व्यतिरेक है और ब्रह्मका अन्वय है चूरण है भान होता है प्यारा है फिर वो चूरणभी काल पाकर नाश होगया नामरूप माया के दोनों अंशनाशहोगये चूरणमें मायाके अंशोंका व्यतिरेकहै और ब्रह्मका अन्वय है कैसे चूरण का अभावहै भान होताहै प्याराहै ये तीनों अंश जैसे प्रथम घटमें थे वैसेही घटके अभावमें हैं इसी प्रकार सबपदार्थोंमें अन्वय व्यतिरेक करके ब्रह्म निश्चयकरना तीनों अवस्था में भी अन्वय व्यतिरेक जाना चाहिये जाग्रत अवस्था में स्वप्न सुषुप्ति का व्यतिरेक है आत्मा का अन्वय है स्वप्न अवस्था में जाग्रत सुषुप्तिका व्यतिरेक है आत्मा का

अन्वय है सुषुप्ति अवस्थामें जाग्रत स्वप्न का व्यतिरेकहै आत्मा का अन्वय है तुर्या अवस्था में जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति का व्यतिरेक है आत्माका अन्वयहै इसीप्रकार बुद्धिमान सब जगह विचार करे प्रसंग यो था युक्ति करके भी जगत् का बाधहै उसका यो क्रमहै समस्त स्थूल प्रपञ्च कूं स्थूल महा भूतोंमें मिलादे यो निश्चय करे पञ्चभूतों से पृथक् कुछनहीं फिर स्थूल भूतों कूं और सूक्ष्म पंच भूतोंके कार्य इन्द्रिय मनादि कूं पंच सूक्ष्म भूतों में मिलादे फिर पृथिवी कूं जलमें जलकूं तेजमें तेजकूंवायु में वायुकूं आकाश में आकाश कूं अहंकार में अहंकार कूं महत्तत्वमें महत्तत्व कूं अज्ञान में अज्ञान मिथ्या है जैसे शुक्ति में रजत फिर अज्ञानकूं शुद्धचैतन्य में मिलादे फिर सदा अभ्यास केवल करके योही चिंतवन करता रहै मैं शुद्धब्रह्म सच्चिदानन्द परिपूर्ण नित्य मुक्त हूं जो कभी व्यवहार दशामें प्रपंच प्रतीत होतो वैसेही अन्वय व्यतिरेक करके चैतन्य से पृथक् कुछ न जाने जैसेकिसी मृग कूं रेती में यो भ्रान्तिहुई यो जल है वहां गया नेत्रसींग पैरसे भलेप्रकार निश्चयकिया कि यो जलनहींहै फिरमृग उसीजगे आनकर जो देखताहै तो वहां फिरभी भ्रान्ति से जल प्रतीत होताहै परन्तु फिर यो जानताहै कि योजलनहीं है भ्रान्ति है जो पशूकी यो बुद्धि है कि उस मृग तृष्णा में फिर नहीं प्रवृत्त होताहै बुद्धिमान कि जिसने श्रुतिस्मृति युक्ति अनुभव करके ब्रह्मका निश्चय किया है वो कैसे संसार कूं सत्यजानेगा संसार का मिथ्याभ्यास भी उसकूं जबतक है कि जबतक प्रारब्ध कर्मका रचाहुआ जो शरीर नाश नहीं होता है पीछेउसके मुक्तरूप है युक्ति करके संसार का बाध योहीहै कि संसार कूं मिथ्या समझ लेना २ और मैं ब्रह्महूं यो महा वाक्य श्रवण करके जो हुआ अपरोक्ष ज्ञान और ब्रह्म कूं साक्षात् करके अज्ञान की जो निवृत्ति सो प्रत्यक्ष बाध है ऐसे तीन प्रकार

करके संसार का बाध करना इसकूं अपवाद कहते हैं अध्यारोप अपवाद करके तत्त्वम् पदार्थों का साधन भी हुआहै सोई दिखाते हैं मायासे लगाकर स्थूल समष्टि प्रपंच जड़ १ और उस करके उपहित चैतन्य २ और दोनों का आधार अनुपहित चैतन्य ३ ये तीनों पृथक् हैं और इन तीनों का तप्तलोहेके पिण्ड वत् एक प्रतीत होना यो तत् पदका बाच्यार्थ है और पृथक् जो अखण्ड चैतन्य सो तत् पदका लक्ष्यार्थ है और अविद्यासे लगाकर स्थूल व्यष्टि प्रपंच जड़ १ और उस करके उपहित चैतन्य २ और इन दोनोंका आधार अनुपहित अखण्ड चैतन्य ३ ये तीनों पृथक् हैं और इनतीनोंका तप्त लोहेके पिण्डवत्एक प्रतीत होना यो त्वम् पदका बाच्यार्थ है और पृथक् अखंड चैतन्य त्वम् पदका लक्ष्यार्थ है इनदोनों तत्त्वम् पदका लक्ष्यार्थ कूं ग्रहण करके और बाच्यार्थ कूं मिथ्या जानकर बाच्यार्थ का त्याग करके तीन सम्बन्ध के सहित जहद जहद लक्षण करके सो यो देवदत्त है इस लौकिक बाक्यवत् तत्वमसि यो महा बाक्य अखंडार्थ का बोधकहै तीन सम्बन्धों का अर्थ बिना कुछ शास्त्र के पढ़ेहुये भले प्रकार नहीं जाना जाता है न भले प्रकार भाषामें लिखाजाताहै इसलिये कुछ तात्पर्य लिखे देतेहैं सामान्याधिकरण्य १ बिशेषण बिशेष्य भाव २ लक्ष्य लक्षणभाव ३ समानहै अधिकरण जिसका सो सामान्याधि करण्य जो जिसमें रहे उसकूं अधिकरण कहते हैं किसी ने कहा सो यो देवदत्त है सोअर्थात् काशीमें तुमने हमने १६ बर्षकी अवस्था गृहस्थ आश्रम में जोदेखाथा सोई यो अर्थात् अब हरिद्वार में ३० बर्षकी अवस्थामें जो दीखताहै सो यो देवदत्तहै पूर्व काशी १६ बर्ष की अवस्थादि का और हरिद्वार ३० बर्षका अवस्थादि का त्यागकरके केवल देवदत्तके पिण्ड मात्रमें दृष्टि करके यो अर्थ बैठता है कि सो यो देवदत्तहै कहेहुये अर्थकूं कुछ त्यागदेना कुछ रखलेना

इसकूं जहदजहद लक्षणा कहतेहैं सोयो देवदत्त है इस बाक्यका अर्थजहद जहद लक्षणा करके होसक्ताहै जैसे इसबाक्यमें जहद जहद लक्षणा है ऐसे और बाक्यों में भी किसीमें जहद लक्षणा किसीमें अजहत् लक्षणाहै तात्पर्य्य जिस बाक्य का अर्थ बुद्धिमें न बैठता हो कुछविरुद्ध प्रतीत होता हो तो उस बाक्य का अर्थ लक्षणा शक्ति ब्यंजनादि करके निश्चय करते हैं उन बाक्योंके बहुतउदाहरण लिखनेमें बिस्तार होताहै इसलिये थोड़ेसे उदाहरण लिखते हैं और उनके लिखने का यहां कुछ प्रयोजन भी नहीं है जहद लक्षणा वह है कि कहे हुये बाक्यार्थ का त्याग करके और बनाकर लक्षणा करनी जैसे किसी ने कहा गङ्गा में गांवहै वहां से दूध ले आओ उसने बिचारा गङ्गाजी में गांवका होना नहींबनता इसहेतुसे गङ्गाजीके तीरके गांवसे दूधलेआया तात्पर्य कहने वाले का तीरमें था जहत् लक्षणा से यो अर्थ बनसक्ताहै, अजहत् लक्षणा वहहै कि कहे हुये वाक्यार्थकूं ग्रहण करके और भी कुछ अर्थ बनाकर लक्षणा करनी जैसे किसीने कहा कि दूधको कौवन से रक्षा करते रहना उसने अजहत् लक्षणा करके कौवन से भी रक्षाकरी औरों से भी रक्षाकरी क्योंकि तात्पर्य दूधकी रक्षामें था, जैसे पंकजका अर्थ यो है कि जोकीचसे उत्पन्नहो सोपंकज बिचारो कीचसे बहुत बस्तु कसेरू आदि उत्पन्न होतेहैं परन्तु पंकज की शक्ति कमल मेंहीहै, वाक्यार्थके तात्पर्यकूं समझना यो ब्यंजना है जैसे किसी स्त्रीका पुरुष विदेशकूं जाताथा स्त्रीने चलते समय प्रार्थना करी कि जहां आपका जानाहो उसीजगे मेराभी जन्महोवे अर्थात् आपके जाते ही मेरे प्राण छूट जावेंगे, प्रसंग सामान्याधिकरण्य कथासों सुनो सो और योपद इनदोनों का जैसे देवदत्त का पिण्ड अधिकरण है ऐसे ततृत्वम् इन पदोंका शुद्ध चैतन्य अधिकरण है तत् त्वम् पदों का सामान्याधि करण्य संबन्ध है, जैसे सो

यो ऐसा कहो वा यो सो ऐसा कहो ऐसे ततृत्वम् ऐसा कहो वा त्वम् तत् ऐसा कहो यो ततृत्वम् पदार्थों का विशेषण विशेष्य भाव सम्बन्धहै,जैसे सो यो इन शब्दोंका और इनके अर्थोंका लक्ष्य लक्षण भाव सम्बन्धहै सो यो ये दोनों पदतो लक्षणहैं और इन लक्षणोंसे जो लखा जावे सो लक्ष्य देवदत्त का पिण्डहै ऐसे ततृत्वम् पदोंका और उनके अर्थोंका लक्ष्य लक्षण भावसम्बन्धहै ततृत्वम् ये पदतो लक्षण हैं और इन लक्षणों से जोलखा जावे सोलक्ष्य एक शुद्ध चैतन्यहै इस प्रकार तीन सम्बन्ध करके अखण्डार्थ का बोध होताहै जीवकी जो उपाधि अविद्या अल्पज्ञाति और ईश्वरकी उपाधि माया सर्वज्ञादि इनदोनों उपाधियों का जहद जहद लक्षणासे त्याग करके तात्पर्य ततृत्वम् पदोंके वाच्यार्थ का त्याग करके लक्ष्यार्थ का ग्रहण करके केवल एक शुद्ध चैतन्यमें लक्षणा करनी तब तत्त्वमसि इस महा वाक्य का अर्थ अखण्डार्थ निश्चय होताहै अखंडार्थ किसकूं कहतेहैं सुनो स्वगत १ जैसे वृक्षमें पत्र पुष्पादि का भेद और सजातीय २ जैसे अनार आम्रादि का भेद और विजातीय ३ जैसेवृक्ष और पाषाणादि का भेद इन तीन भेद करके जो रहित सो अखण्ड अथवा देश काल बस्तु करके परिच्छिन्न न हो सो अखण्ड सारे व्यापक होनेसे तो ब्रह्मदेश परिच्छिन्न नहीं और नित्य होनेसे काल परिच्छिन्न नहीं और सबका आत्माहोनेसे बस्तु परिच्छिन्न नहीं जो इस शरीरमें सच्चिदानन्द भान होताहै वोही ब्रह्महै और जिसकूं ब्रह्म कहतेहैं वोही सच्चिदानन्दहै जब ऐसा ज्ञान हुवा तब त्वम्पद का अर्थ जोजीव समझ रक्खा था वोउसी समय जाता रहताहै और तत् पदका अर्थ जो परोक्षथा तोभी उसी समय अपरोक्ष होजाताहै फिर इस ज्ञानसे जो होताहै सो सुनो जो प्रथम त्वम् पदका अर्थ जीव समझ रक्खा था सोई अपरोक्ष परमानन्द रूप करके शेष रहजाता है इस प्रकार

तत्त्वमसि जो महा वाक्यादि उनका अर्थ श्रवण करने से और मननिदिध्यासन करनेसे जो हुआ अपरोक्ष ज्ञान उस ज्ञान करके अज्ञान कीजोनिवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति इसीका नाम मोक्षहै ॥ इतिश्रीद्वितीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

कर्मकाण्डी और उपासना वाले स्वर्ग वैकुण्ठादि की प्राप्तिकूं सालोक्य,सामीप्य,सारूप्य,सायुज्य नाम करके मुक्ति कहतेहैं सोनाम मात्र मुक्तिहै अनित्य होनेसे साक्षात् मुक्ति नहीं जैसे किसी पुरुषकूं कहना कि यो पुरुषसिंहहै वो पुरुष साक्षात् सिंह नहीं उसमें सिंहकेसे गुणहैं ऐसे साक्षात् मुक्तिमें जोगुण दुःखों की निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति येदोनों उनमें भी थोड़े थोड़ेहैं दूसरे अध्यायके अन्तमें जोमुक्ति कही है सोमुक्तिदोप्रकार की है जीवन्मुक्ति १ विदेह मुक्ति २ जीवन् मुक्ति तीन प्रकारकी है श्रेष्ठ १ मध्यम २ कनिष्ठ ३ जीवते हुये उस आनन्दकूं सदा प्राप्त रहना अर्थात् स्वभाव करके निर्विकल्प समाधि रहनी श्रेष्ठ जीवन्मुक्ति १ प्रयत्न करके बहिर्मुख अन्तःकरण की वृत्तियों कूं निरोध करना मध्यम जीवन्मुक्ति २ यद्यपि दुःख सुखादि अन्तःकरणके धर्महोनेसे आत्माके साथउनका सम्बन्ध नहींहै यो बिचार भीहै तोभी दुःखादिके सम्बन्धकरके अन्तःकरणकाव्याकुल होजाना योकनिष्ठ जीवन्मुक्ति ३ देह पातकेपीछे उस आनन्दकूं प्राप्त होना विदेह मुक्ति,श्रेष्ठ जीवन् मुक्तिका योनियम नहीं कि सब ज्ञानियोंकूं श्रेष्ठ जीवन् मुक्तिहो जैसे औषधि करनेसे रोगकी शान्ति होतीहै ऐसे प्रयत्न करनेसे श्रेष्ठ जीवन्मुक्ति भी सम्पादन होसक्ती है परंतु कुछ नियम नहीं कि औषधि करनेसे नियम

करके रोग जाता रहता है पुरुषार्थ बादी तो यों हीं कहते हैं कि प्रयत्न मुख्यहै जो श्रेष्ठ जीवन्मुक्ति किसी प्रतिबन्ध करके सम्पादन न होसके तो कुछ विदेह मुक्तिमें सन्देहनहीं इसबातकूं सिद्ध करते हैं ज्ञानकी ७ भूमिकाहैं तीन प्रथमकी ज्ञानकी साधन भूमिका हैं इसलिये वेभी ज्ञानकी भूमिका कही जातीहैं चौथीमें अपरोक्ष ज्ञान होता है पिछिली तीन जीवन् मुक्ति भूमिका हैं प्रथम का लक्षण योंहै शौच स्नानादि आचार गङ्गाजीसे आदि लेकर तीर्थोंका सेवन विष्णु शिवादिकी पाषाणादि मूर्त्तियों की पूजा अश्वमेध यज्ञसे आदि लेकर यथाशक्ति ब्राह्मण अतिथि अभ्यागतोंकूं अन्न बस्त्रादि देने ऐसे ऐसे और भी बहुत कर्म हैं यो प्रथम भूमिका १ सगुण परमेश्वर के गुणानुवाद सुनकर परमेश्वरमें अनुराग होना और परमेश्वरके भक्त जोसाधु ब्राह्मण उनमें प्रीति होनी और मनबाणी शरीर धनसे उनका सत्कार करना जोकदाचित् साधु अपने घरचले आवें तोमनकूं आनन्द होना योजानना हमारा बड़ा भाग्य है योमनसे सत्कार है और बाणीसे ऐसा बोलना महाराज आपका आना बहुत सुन्दर हुआ आप जंगम तीर्थहो हमारे पवित्र करनेके लिये आप आयेहो और शरीर से हाथ जोड़कर खड़ा होजाना चरण सेवासे आदि लेकर टहल करनी अथवा और जगे महात्मा ठहर रहे हों वहां जाकर सेवा करनी और धनसे यथा शक्ति अन्न बस्त्रादि देने और नित्याऽनित्य बस्तुका बिचारना ऐसे ऐसे कर्मोंसे आदि लेकर और भी बहुत कर्म हैं यो दूसरी भूमिका २ संसार के पदार्थोंकूं दुःखरूप अनित्य जानकर उनसे वैराग्य होना जैसा श्रीरामचन्द्रजीकूं वैराग्य हुआहै वाशिष्ट ग्रन्थमें वोकथा प्रथमही वैराग्य प्रकरणमें प्रसिद्धहै और साधन चतुष्ठय संपन्न होकर वेदान्त शास्त्रका श्रवण करना योतीसरी भूमिका ३ शुक्तिमें रजतवत् संसारकूं मिथ्या जानकर अपने निज स्वरूप का बाध होजाना

कि मैंयोहूं चौथी भूमिका योहि विदेह मुक्तिमें हेतुहै चौथी भूमिका वालेका लक्षण योहै कि जैसे कोई पुरुष समुद्र के तीर खड़ाहै जोजलकी तरफ़कूं देखताहै तोजलही जलदीखताहै और जबपीकूं देखताहै तबमन्दिर वृक्षादिही दीखतेहैं ऐसे जबवो पुरुष अपने स्वरूपका अनुसंधान करताहै तब संसारका अभाव और अपना स्वरूप साक्षात् प्रतीत होताहै और व्यवहार के समय संसारके दुःख सुख शोक मोहादि जैसे पहलेथे वैसेही भुने अन्नवत् प्रतीत होतेहैं जैसे भुना अन्न भूक दूर करनेकूं समर्थहै जमनेकूं समर्थ नहीं ऐसे उस ज्ञानीकूं व्यवहार सुख दुःखादि काहेतुहै परन्तु जन्मका हेतुनहीं और अज्ञानी की बराबर उसकूं दुःख सुखभी नहीं होते इसबातकूं भी अभी आगे दृष्टान्त देकर सिद्ध करेंगे चौथी भूमिकामें शरीर यातो चण्डाल के घरमें याकाशीमें छूटो आनन्द पूर्वक छूटो या मूर्च्छा रोग होकर लोटते पोटते छूटो मुक्तिमें सन्देह नहीं वो मुक्त उसी समय होगया जिस समय उसको ज्ञान हुआ मूर्च्छादि होनेसे ज्ञानका नाशनहीं होता जैसे विद्याकूं स्वप्न सुषुप्ति मूर्च्छादिमें भूलभी जाताहै परन्तु कुछ अगले दिननहीं बढ़ता ४ पांचवीं भूमिका का लक्षण योहै कि जैसे कोई पावकोश समुद्र में आधे शरीर जलमें खड़ाहो उसकूं बहुत बिचारनेसे समुद्रके तीर के मन्दिर वृक्षादि देखा करते हैं वैसे उसकूं संसारका व्यवहार बहुतकिसीके सुननेदेखनेसे प्रतीतहोताहै ५ छठीभूमिकामें गलेतक जलकी कल्पना करलेनी ६ सातवां भूमिकामें जलमें प्रवेश होजाना सातवीं भूमिका वालेका शरीर हद बीसदिन रहता है क्योंकि भोजनादिका अभाव होजाता है ७ चौथी भूमिका वाले से लेकर सातवीं तक एकसे एक सिवाय ब्रह्मवित् कहे जाते हैं, ब्रह्मवित् ४ ब्रह्म विद्वर ५ ब्रह्मविद्वर्यान ६ ब्रह्मविद् वरिष्ठ ७ मूर्ख योहीं कहते हैं कि जेसा हमने पांचवीं छठी सातवीं भू-

मिका का लक्षण लिखाहै ऐसे ज्ञानी होते हैं और चौथी भूमिका वालेमें बहुत तर्क करतेहैं उनकी पूर्व पक्षकी तर्कों का खण्डन वेदान्त शास्त्रमें बहुत लिखा है कुछ एक लेशमात्र यहांभी लिखतेहैं। शंका। कि जो खावे पीवे नहीं और शरीर इन्द्रियादि करके चेष्टा न करताहो सो ज्ञानी है। उत्तर। ज्ञान क्या हुवा रोगहुआ ऐसेतो रोगी होतेहैं रोगियोंकूं भी ज्ञानी कहा चाहिये। शंका। जिसकूं दुःख सुख न प्रतीतहोताहो तो ज्ञानीहै उत्तर दुःख सुखका अभाव जड़ पदार्थोंमें होताहै वे ज्ञानी हैं। शंका। संसार का अनुभव न होना योज्ञान का लक्षण है। उत्तर। संसारतो सुषुप्ति मूर्छा प्रलयादिमें भी अनुभव नहीं होता वहांभी तो संसारका बाधहै। प्रश्न। फिर संसारका क्या बाध है और क्या ज्ञानका लक्षणहै। उत्तर। संसार का योही बाधहै कि जो दूसरे अध्यायमें तीन प्रकार का बाध लिख आये हैं और ज्ञान का भी योही लक्षणहै कि जबतक जो शरीर प्रारब्ध कर्मका रचा हुआ नष्टनहीं होता तबतक संसारकूं मिथ्या समझना तात्पर्य्य जबतक संसारमें स्वरूप से मर्दन नहीं होसका क्योंकि मिथ्या पदार्थ कूं मिथ्या जानने से उसका अभावनहींहोता जैसे बाजीगर के पदार्थ मिथ्या जाने से स्वरूप करके मर्दन नहीं होते इस प्रकार यह संसार रहता है परन्तु देह पात के पीछे स्वरूप से भी मर्दन होताहै इस में वेद प्रमाण है अन्यथा बशिष्ठादि ब्रह्म ज्ञानी थे इसमें क्या प्रमाण है शङ्का ज्ञात तो होगया फिर प्रारब्ध कर्म्म का फल दुःखादि क्योंन नाश हुआ उत्तर तीरने पुरुष कूं भेदन तो करदिया आगे क्यों चला और दूसरे कुम्हार ने बर्तन उतारने के लिये चाक घुमाया बरतन तो उतार लिया फिर चाकक्यों घूमता है। शङ्का। ज्ञाननेसंसार कूं स्वरूप से और प्रारब्ध कर्म्म कूं क्योंन नाश किया। उत्तर। प्रारब्ध कर्म्म और यो संसार मिथ्या भास मुरदे कीनाई कुछ

ज्ञानके बिरोध नहीं प्रत्युतज्ञान कूं उत्साह बढ़ाने वालेहैं जैसें किसी पुरुषकी मारी हुई हज़ारों लाशें पड़ीहों वो शूर उनको देखदेख आनन्द होताहै। शङ्का। जो ज्ञानी पूर्बवत् संसार को भोग भोक्ता रहा तो ज्ञानी अज्ञानी में क्या भेद हुआ। उत्तर। ज्ञानी राग पूर्बक संसार के भोग नहीं भोक्ता जैसे किसीकेशिर पर कोई बेगार रखदे तो क्या बेगारके उठानेमें उसकोउत्साह है। शङ्का। बेगारी कूं तो दुःख होताहै जो ज्ञानी कूं भीदुःखहुआ तोज्ञानका क्या फलहुआ। उत्तर। ज्ञानीका दुःख मुक्तिकेआनन्द में दबा रहताहै जैसे दो बेगारी हैं एक जानताहै कि मैं दोघड़ी में छूटूंगा दूसरा नहीं जानता कि मैं कबछूटूंगा हे बादी बिचार देख दुःख दोनों का सम प्रतीत होताहै परन्तु जानने वाले कूं थोड़ा दुःखहै नहीं जानने वाले कूं बहुत दुःखहै ऐसे ज्ञानीअज्ञानी के दुःखमें बहुत भेदहै। शङ्का। तुमतो जैसे प्रथमथे वैसेही अबभी दीखते हो ज्ञानहोकर कुछ और प्रकारके न हुये। उत्तर। जिस समय तुमकूं रज्जु में सर्पकी भ्रांति हुईथी उसकूं देखकर कम्पने लगेथे और गिरकर चोट लग गईथी फिरकिसी केउपदेश और अपनी युक्तिसे रज्जुका अनुभव किया तुम कहो कि आपकी सूरत भी बदलीथी कहताहै कि मेरी सूरत तोनहींबदलीथी परन्तु अन्तःकरण की वृत्ति बदलगई थी उत्तर फिरहमारे अन्तःकरण के साक्षी क्या तुमहो जैसे भ्रांति समय तुमकूं कँपाथीपीछे निवृत्ति होगई सूरत न बदली ऐसे हमकूं भ्रांतिथी सो निवृत्तिहोगई अपने अन्तःकरण के हम साक्षी हैं। शंका। तुम कहतेहो यो जगत् अज्ञानका कार्य्यहै वो अज्ञान तो नाशहोगया कार्य्य उसका कैसे बना रहा। उत्तर। भ्रांति समय जो तुमकूं कँपातीथी और गिरकर चोट लगीथी फिर जिस समय वोभ्रांति दूरहुई कार्य्य उस भ्रांति का वोकँपा और वोचोटउसी समय जाती रही थी कहता है कँपा तो दोघड़ी के पीछे और

चोट दशदिनके पीछे होगई थी। उत्तर। आश्चर्य की बातहै जो घड़ीभर भ्रान्ति नहीं रही उसका कार्यतो दशदिन के पीछेगया और हमारा अज्ञान प्रार्द्ध संख्यासे भी परेकाथा वो नाश हुआ है उसके कार्य्यकूं कहते हो कि उसीसमय क्यों न जाता रहा शरीर पातके पीछे कार्यभी नाश होजावेगा औरभी बहुत दृष्टांतहैं वृक्ष कटनेके पीछे वैसाही हरा प्रतीत होताहै औरकिसी वस्त्र वा पात्रमें गन्ध रक्खीहो पीछे निकालने के भी कईघड़ी गन्ध बनी रहती है और किसीकूं स्वप्नमें सिंहने झड़पाया वो जाग उठा देखता है कि सिंहनहीं परंतु कंपा दोघड़ी पीछे जाती है। शंका। योजो तुम भोग भोगतेहो ये ज्ञानकूं नष्ट करदेंगे। उत्तर। जीते हुये चूहेने बिलाईको न मारा तो मरा क्यामारेगा और जैसे कोई बज्रलगने से न मरा क्यों वो तुलीकी तीरसे मरेगा जिस कालमें अज्ञान बटाहुआ था उस समयतो ज्ञान नाशहुआ नहीं अबतो उस अज्ञान कूं ज्ञानने नाश करदिया उसका कार्य ये अन्न भक्षणादि तुच्छ पदार्थ ज्ञान कूं क्या नष्ट करेंगे। और दूसरेजो पुरुष चोरजारकूं जानताहै वे चोरजार उसके बुरे होने का प्रयत्न नहीं करते और डरते रहतेहैं और जो प्रयत्नकरेंभी तो वो चैतन्यहैं ऐसेज्ञानीइन भोगरूप चोरों को जानताहै और तीसरे कोई स्त्री नेत्र शरीरादि करके तो सुन्दरहो परन्तु उसकी उपस्थ इंद्रियमें गरमीका बिकारहो जो उसबिकारकूं जानताहै उसकूं उस स्त्रीके हाव भाव कटाक्ष नहीं मोहते न वो स्त्री उसके सामने हावभाव कटाक्ष करतीहै ऐसे ज्ञानी इस मायारूपी स्त्रीके अवगुणोंकूंजा-नताहै। शंका। जोतुम सदाब्रह्माऽहमऽस्मि ब्रह्माऽहमऽस्मिऐसा अनुसंधान न करते रहोगे तब जो ब्रह्मज्ञान नष्ट हो जावेगा। उत्तर। तुम ब्राह्मणोऽहम् ब्राह्मणोऽहम् इसका सदा अनुसंधान न करोगे तो भूल जाओगे जैसे तुम अपनी जाती कूं नहीं भू-लते वैसे हमने एक बेर बस्तुका निश्चय करलिया है वो हमारा

ज्ञान कैसेजाता रहैगा और आपका निश्चयतो झूठा है एकयुक्ति से जाता रहता है योंभी कहता है कि मेराशरीरहै और योंभी कहता है कि मैं ब्राह्मण हूं कितना बिरोध है ऐसा निश्चय तो आपका बिना अनुसंधान के बना रहेगा और हमारा जो निश्चय है कि सहस्त्रों श्रुति स्मृति युक्ति और अनुभव करके और तुम सदृश बादियों के मतोंकूं खंडन करके जो निश्चय किया है वो बिना अनुसंधान के जाता रहैगा । शंका । जिनकूं शाप अनुग्रह की सामर्थ्य होतीहै वे ज्ञानी हैं । उत्तर । शाप अनुग्रह ज्ञान का फल नहीं तपका फलहै । शंका । ज्ञान बिना तपके कैसे हुआ । उत्तर । तप दोप्रकार का है एक तप शाप अनुग्रह की सामर्थ्य करादेता है और एक तपज्ञानकूं उत्पन्न करताहै । शंका । व्यास वशिष्ठ सनकादि भी तोज्ञानीहैं । उत्तर । उनके दोनों प्रकारका तपहै हमारे एकही है दूसरे तप न होनेमें कुछज्ञानी की क्षती नहींहै जैसे जौहरी बस्त्रादिकी परीक्षा न करसके तो उसजौहरी की क्या क्षतीहै ऐसेही ज्ञानी गंडा तावीज़ प्रेतादिकोंके मंत्रादि न जानता हो तो क्या ज्ञानीकी क्षतीहै तात्पर्य ऐसीऐसी तर्कोंका खंडन बहुत वेदान्त शास्त्रमें लिख रहाहै मुक्ति की इच्छावाला ऐसे २ बादोंमें बुद्धिको नसमाप्तकरे केवल वेदबाक्यमें बिश्वास करे और जो पुराणादि में जड़ भरतादि लिखेहैं कोई कहे कि ऐसे ज्ञानी होते हैं तो क्या उसके मुखमें मारने के लिये श्रुति रूप बज्रनहींहै तात्पर्य वेद ऐसाभी कहते हैं जैसे जड़ भरतादि हुये हैं औरऐसा भी कहतेहैं ज्ञानी अपनी अवस्था वालोंके साथ विहार करता हुआ और सवारियों में बैठाहुआ स्त्रियोंके साथ रमताहुआ वो ज्ञानी अपनी दृष्टिमें कुछनहींकरताहै बशिष्ठ याज्ञ-वल्क्य से आदि लेकर बहुत प्रसिद्ध हैं और जनक चूड़ालादि बहुत स्त्रीतक ज्ञानीहुयेहैं क्यासब जड़ भरतवत् आचरण करते थे तात्पर्य यों है मूर्खलोग वे शास्त्रके एक २ देशकूं सुनकर वेद

शास्त्रके तात्पर्यकूं न जानकर कुछ२ बकेहैं उनका निश्चय उनके रहो हमको क्या काम है हम सिद्धान्त कहते हैं प्रथम तो जड़ भरतादि भी खाना सोनाआदि त्यागकरके काष्ठ पाषाणवत् नहीं रहे संगकी भांतिसे उदासीन रहतेथे क्योंकि संगीलोगों करके बाध होजाताहै और निसंग सुखकूं प्राप्त होताहै इसलिये सदा सुखकी इच्छावालों ने संग त्यागदेना ज्ञानकी परीक्षा के लिखे वैराग्य उपरति बोध कूं हेतु १ स्वरूप २ कार्य ३ अवधि ४ इन चार चार भेद करके लिखते हैं वैराग्य के हेतु आदि ये हैं॥ शब्दादि बिषयोंमें दोष दृष्टिहोनी १ त्यागदेना २ फिरभोगोंमें दीनता न होनी ३ ब्रह्मलोक कूं तृणवत् समझना ४ उपरति के हेतु आदि ये हैं॥ यम नियमादि १ अन्तःकरणका निरोध२ व्यवहार का बहुत कम होजाना अर्थात् खाने सोनेमें भी संकोच ३ सुषुप्तिवत् जाग्रत् अवस्था रहनी॥ बोधके हेतु आदिये हैं॥ श्रवणादि १ तत्त्व मिथ्या का जानलेना २ फिर ग्रंथिका उदय न होना अर्थात् देहादिमें अहंबुद्धि न होनी ३ जैसे प्रथम देहादि में अहम्बुद्धि थी वैसीही स्वरूपमें दृढ़बुद्धि होजानी ४ मुक्तिकी इच्छा वालोंके वैराग्यादि के हेतु आदि तारतम्यता करकेरहते हैं क्योंकि सबके कर्म एक प्रकार के नहीं इन सब में कि जो बैराग्यादि के हेतु आदि लिखेहैं उनमें तत्त्व मिथ्याका जानलेना जो बोधका स्वरूप लिखाहै योही मुक्तिका कारणहै और सब ज्ञानियों के योही एक रस है जो वैराग्यादि के हेतु आदि ऊपर लिखेहैं वैसे जो किसीके हों तो बहुत पुण्य का फल है उससे सिवाय कोई पुण्यनहीं और जो किसी प्रति बन्धु करके तीनों एक जगे न देखने में आवें तो उनके फल ऐसे होंगे कि वैराग्य उपरति तोपूर्णहो बोधकिसी प्रतिबन्धसे नहो तो मुक्ति नहींहोगी तपके बलसे ब्रह्म साकार की प्राप्ति होगी और जो बोधहैवैराग्य उपरति इस जन्ममें न देखने में आवैं तो मुक्ति निश्चयहोगी

परन्तु जबतक यो शरीर रहेगा हर्ष शोकादि आभास मात्र बने रहेंगे बोधका स्वरूप सब ज्ञानियों के एक रसहै वैराग्य उपरति में तारतम्यता है जैसे १०० गौ दूध सबका एकरंग एक रस और ब्यक्ति दुर्बलापनमोटापन स्वभावादि पृथक् २ ऐसे १०० ज्ञानी ज्ञान सबका एक रस और ब्यवहार चलनसा भावादि सत्त्वादि गुणोंकी उपाधिसे पृथक् पृथक् अर्थात् किसीके सत्त्व-गुण बहुत किसीके रजतम बहुतहै सत्त्वगुणी शुकदेव,बामदेव, जड़भरत,सनकादि और रजोगुणी जनक, चुड़ालादि औरतमो-गुणी दुर्वासादि सत्त्वरज तमोगुणी बहुत वर्तने से सत्त्वगुणी रजोगुणी तमोगुणी कहेजातेहैं परंतु तीनोंगुण सबके तारत-म्यता करके वर्त्तते हैं॥ ज्ञानके होने और वैराग्य उपरति सिद्धि लक्ष्मी आदिके न होनेमें यो व्यवस्था है ज्ञान उपरति वैराग्य सिद्धिलक्ष्मीआदि पुण्यकाफलहै जिसकेपूर्ण पुण्यहुआ जैसेजल से घट भरारहताहै उसकेतो वैराग्य उपरति ज्ञान सिद्धिलक्ष्मी आदि सब होतेहैं औरजो केवल ज्ञान हो वैराग्यादि न हो तो उससे भी थोड़े पुण्यका फलहै और जो ज्ञान न हो वैराग्य उप-रतिहो उस से भी थोड़े पुण्य का फल है और जो वैराग्य ज्ञान तीनों न हों सिद्धि लक्ष्मी आदि हों उस से भी थोड़े पुण्यका फलहै और जो सिद्धिवैराग्यादि न हो केवल लक्ष्मी राज्यादि हो उससे भी थोड़े पुण्य का फल है राजासे लगाकर कंगाल पर्यन्त पुण्यकी तारतम्यता कल्पना करलेनी पुण्यकी तारतम्य से ज्ञानियों के वैराग्यकी भी तारतम्यता कल्पना करलेनी जो तीनों वैराग्यादि किसी ज्ञानीके देखनेमें आवें तो वो ज्ञानी ऐसाहै जैसा मनुष्योंमें चक्रवर्ति राजा जैसे जड़भरत शुकादि हैं ऐसा नहीं समझना कि जो ऐसेहीहों वोही ज्ञानीहैं और ऐसोहीं की मुक्ति होतीहै। शंका। फिर ऐसे पुरुषों की शास्त्रमें बहुत प्रशंसा क्यों लिखी है। उत्तर। ऐसे पुरुषों कूं जीवनमुक्ति का बहु

आनन्द रहताहै जैसे चक्रवर्ति राजाकूं मनुष्यानन्द बहुत रहता है और जैसे राजासे जो कमलक्ष्मी आदि वालेहैं उनकूं भी तो आनंद तारतम्यता करके रहताहै और वेभी तो मनुष्यही कहे जातेहैं ऐसे वैराग्य उपरति में कमजो ज्ञानीहैं वेभी ज्ञानीहैं अज्ञानी नहीं। शंका। ज्ञानीके लक्षण शास्त्रमें ऐसे ऐसे लिखेहैं क्रोध शोक भय न होना जितेन्द्रिय,क्षमा,वैराग्य,दया,निर्लोभ, दाता,सबका प्यारा होना॥

टी०। दाता होना अर्थात् अभय दानदेना अभय दान दो प्रकारका है एकयो अपने शरीर बाणी मनसे किसीकूं भय न देना दूसरे ज्ञान का उपदेश करके संसारके दुःखोंसे अभय करदेना॥

मू०। येज्ञानके चिन्हहैं ऐसे २ वाक्यों की क्या गति होगी। उत्तर। ऐसे २ वाक्य प्रथम तो ज्ञान होनेके लिये और ज्ञानके पीछे जीवन्मुक्ति की सिद्धिके लिये ताकीदमें हैं एकादशी के व्रतवत् नियम नहीं जो एकदाना भी अन्नका मुखमें जापड़े व्रतटूट जावे ऐसेही जो कभी किसी पापके उदय होनेसे ज्ञानीकूं काम क्रोध आजावे तो ज्ञानही जाता रहता जिस कालमें सनकादि महा ज्ञानी श्रीनारायणजी के मिलने के लिये बैकुण्ठकूं गयेथे नारायण के पार्षदों ने जब उनकूं भीतर जानेके लिये मने किया तब उनको क्रोध आगया फिर शाप देदिया अर्थसे योंभी प्रतीत होताहै कामके बिना क्रोध नहीं आता बिचारो ज्ञान उनका नहीं जाता रहा और योजो शंका करे कि वेईश्वरथे समर्थथे अर्थात् वे ईश्वरकी टीकारक कोटीमें हैं तो मनुष्य कोटीमें ऐसी २ अनेक कथा पुराणों में वेदोंमें दुर्वासादि की प्रसिद्धहैं और दूसरे योकै मुनिकन्याय है जो समर्थ पुरुषोंकूं ईश्वरोंकूं काम क्रोध आये तो जीवका तो यो अनादि स्वभावहै जीवको काम क्रोधके आजानेमें क्या आश्चर्यहै। शंका। ज्ञानीका दूसरेकूं उपदेश करनेसे क्या कामहै। उत्तर। ज्ञानीकूं जगत् में योंही एक करने केयोग्यहै कि

जैसेबनेअज्ञानीकूं ब्रह्मतत्वका उपदेशकरे। शंका। श्रीभगवान्तो योकहतेहैं कि कर्मसंगी पुरुषोंकूं कर्मसेन हटावें।उत्तर। श्रीभगवान ने कर्म संगी पुरुषोंका उसी जगे बिशेषण देरक्खाहै किअज्ञानी कर्मसंगीकूं ब्रह्मतत्त्वका उपदेश न करे।शंका।ज्ञानियों कीव्यवस्था तो ऐसी २ सुनी जातीहैं कि जब उनको ज्ञान हुआफिरवे किसी से न मिले मौन होकर उत्तराखण्डको चलेगये। उत्तर। योलक्षण अवधिका है कोई ऐसाभी हुआहो परन्तु सबका नियम नहीं और दूसरे सत्ययुगादि ऐसे समयथे किअस्थि आदिमें प्राणबने रहतेथे और कुछ कबि पुरुषों कानियमहै किबढ़ाकर लिखतेहैं और जोयो न मानो तोग्रंथों काबनना उपदेश करना यो बिना प्रवृत्तिके कैसे बने बिद्याका लोप हुआ चाहिये वेद श्रीकृष्णचन्द्र महाराज कहतेहैं किज्ञानके लिये गुरूजीके पास जावे हे अर्जुन तुमको वे गुरूउपदेश करेंगे देखिये जो प्रवर्तहोंगे तो उपदेश करेंगे औरजो बोलें बतलावेंगे नहीं दृष्टांत युक्ति न देंगे अथवा उनका पताही नलगेगा तोबोध कैसे होगा वेद कहतेहैं कि आचार्यवान पुरुषब्रह्म कूं जानताहै तात्पर्य योहीहै कि मूर्ख वेद शास्त्रके हृदयकूं न जान कर कुछका कुछ बक्ताहै ऐसे २ सिद्धान्त शारीरक भाष्य पंचदशी आदि ग्रंथोंमें श्रुति स्मृति प्रमाण देदेकर सिद्धकर रक्खेहैं जिस किसीके संदेह हो वहांसे निश्चय करे और जिसकी गुरु वेदांतमें श्रद्धाहै वोतो संशय बिपर्यय रहित होकर निश्चयमुक्ति होगा॥ इतिश्रीआनन्दाऽमृतवेदान्तशास्त्रेतृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

——०——

अथचतुर्थोऽध्यायः॥

जो किसी पुरुषकूं किसी पापके प्रतिबंधसे महाबाक्यका अर्थ मेंनकर अपरोक्षज्ञान न होवे तो वोफिर साधनकरै प्रथमअध्याय सु जो विवेकादि चार साधन कहेहैं मुख्य सारवेहीहैं उनहीं चार

कूं आचार्योंने नाना प्रकारसे लाखों श्लोकोंमें और भाषामें कहा हैं उनहीं चारोंका अर्थ स्फुट होनेके लिये उनहीं चार साधनों कूं अब और प्रकारके लिखतेहैं ज्ञानके साधन दोप्रकार केहैं अंतरंग १ वहिरंग २ अंतरंग मुख्यहै बहिरंग गौणहै बहिरंग साधनये कहलाते हैं शौच स्नान सन्ध्या बन्दन वेद शास्त्रों कापढ़ना पाठ करना तर्पण हवन करना अतिथि अभ्यागतका पूजनकरना सेवा करनी अन्नदेना ऐसे २ औरभी बहुत नित्य कर्महैं उनके न करने में पापहै करनेसे पापकीनिवृत्ति होतीहै*और पुत्रादिके जन्मादि में जातिकर्म श्रद्धादि करने पूर्णमासी संक्रांत्यादिमें तीर्थोंमें जाना स्नान दानकरना निष्काम यज्ञकरने ऐसे २ औरभी बहुत नैमित्त कर्महैं, और कोई अपनेसे खोटाकाम् शास्त्रसेबिरुद्ध होजावे उसकी निवृत्ति के लिये चांद्रायणादि व्रत और श्रीगंगाजीमें स्नानादि करने ऐसे २ और भी प्रायश्चित कर्महैं, और बद्रीनारायणादि के दर्शन करने तीर्थों का सेवन करना पाषाणादि मूर्तियों कूं पूजना परिक्रमा करनी झांझ घंटादि बजाने चौके धोती से रोटी खानी यो खाना यो न खाना इस बरतन में खाना इस बरतनमें नखाना इसके हाथ का खाना इसके हाथका न खाना या ब्राह्मण यो क्षत्री बरणादि यो ब्रह्मचारी यो गृहस्थी आदि आश्रमी इस प्रकार के औरभी बहुत बहिरङ्ग साधन हैं पुराणोंमें धर्मशास्त्रादिमें उनका बहुत बिस्तार है वहांसे सुनकर संपादन करे परम प्रयोजन उनका अन्तःकरण की शुद्धिहै बहिरंग प्रथम मन्दबुद्धिके लिये है अन्तरंग बुद्धिमानके लियेहैं बहिरंग साधन अन्तरंग साधनों कीइच्छा रखतेहैं अन्तरंग बहिरंगसाधनोंकी इच्छा नहीं रखते और ऐसा जो कहते हैं कि कर्मकांड और उपासना कांड ज्ञान के साधन हैं वहां जो व्यवस्था है जो उपासना इस प्रकारकी है किपाषाणादि मूर्तियों का पूजन करना और झांझ घंटा बजाने परिक्रमा करनी औरभी बहुत ऐसी ऐसी उपासना

का बहिरंग साधनोंमें अन्तर्भावहै और परमेश्वर का ध्यान करना प्रेमकरना बिषयोंसे एककर चित्तकूं परमेश्वरमें लगाना ऐसी ऐसी उपासना का अन्तरंग साधनों में अन्तर्भाव है , अन्तरंग साधन ये कहलाते हैं मनमें मान नहीं रखना कि ऐसे पण्डित जातीमें ब्राह्मण धनवाले और अपने गुणोंकी औरोंसे श्लाघा करानेकी इच्छा न रखनी इसका नाम अमान्वितहै १ धर्मध्वज न होना जो अपनेमें थोड़े गुणहों तो औरों केसामने बहुत नहींप्रकट करने ऐसाहम जानतेहैं ऐसीपूजा करते हैं ऐसेऐसे पाषण्डों का त्याग करना इसका नाम अदंभित्व है २ मन बाणी शरीर से किसीकूं दुःख न देना इसकानाम अहिंसाहै ३ बेप्रयोजन किसी ने आपकूं बुरा बोला अथवा मार भी दिया समर्थ होकर उसकूं कुछ नकहना योसमझना किप्रारब्धका भोगहै इसका कुछ दोष नहीं इसका नाम क्षमाहै प्रसन्न चेष्टारखनी नम्र होकर चलना अकड़ ऐंठ कर न चलना नम्र बोलना मन्दमुसकान पूर्बक ऐसा बोले मानोमुखसे फूल झड़तेहैं दूसरेका क्षोभित हृदयभी शान्त होजावे इसकानाम कोमलताहै ५ गुरूकी मन बाणी शरीरकरके उपासना करनी ६ ब्यवहार में छल न करना अंतःकरणगत जोदोष हैं उनकूं दूरकरना इसकानाम अन्तरशौचहै और बहिःशौच जलमृतिका करके ७ सन्मार्गमें स्थित रहना जैसे जोजगत् में कहानी हैं॥ धर्म किये जो होवे हानि । तोभी न छोड़ धर्मकी बानि॥एक इतिहासभी लिखतेहैं एक ब्राह्मण बाल्य अवस्था से ठाकुरसेवा करता था कोई उस से पाप बुद्धि पूर्बक नहीं बनाथा एकदिन उसकूं रस्ते में चार आदमियों ने घेरलिया जो कुछ उस पै था छीन लिया और कहा कि तुमकूं मारेंगे ब्राह्मण ने बिचारा किमैंने बाल्य अवस्था से ठाकुर सेवाकरीहै कोई पाप नहीं किया ये मुझकूं वृथा मारते हैं सो मारो परन्तु जो ये कहैं तो ठाकुर जी को तो तीर्थमें पधार दूं कोई वहां पास जलाशय था उनसे

आज्ञा लेकर ठाकुर जीका सिंहासन हाथमें लेकर कहा हेपरमे-श्वर बाल्य अवस्था से आपकी सेवा करीथी आज उसका या फल है कि बिनापाप मारा जाताहूं वहां आकाशबाणी हुई कि तुमने पूर्व जन्ममें इन चारोंको एक २ बेर माराथा यो पूजा का फल है जो तुमकूं ये चारों एकबेर मारतेहैं योसुनकर चारों आदमी वहां गये बूझाकि तुम किससे बात करतेथे उसने कहातुम कूं क्या कामहै जो मुझकूं मारना है तो मार दो बहुत बेर जो उन्होंने बूझा फिर सब व्यवस्था ठाकुर सेवादिकी सुनादी चारों ने उसकूं छोड़ दिया और जोकुछ उससे छीनाथा दे दिया और कहा कि हम चारों तेरे पिछले किये का इसलोक परलोक में बदला नहीं चाहते ८ देहका निग्रह करना रात्रिका जो बीच उसमें डेढ़पहर सोना उससे सिवायआसन परसीधा स्नानादि कियाके बिना बैठकर श्रवणादिकरते रहना ९ शब्दादि बिषयों से बैराग्य करना १० अहंकार न करना कि मैं ऐसा बैराग्य वाला हूं ११ जन्ममृत्यु जरा ब्याधिमेंदुःख औरदोषभीहैं बारम्बार उनका अनुसंधान करते रहना क्योंकि जबतक शरीरकूं किसी रोगने नहीं ग्रसा श्रोत्रादि इन्द्रिय भी बने रहते हैं जरा भी न होवे तबतकही कुछ पुरुषार्थ हो सकता है कोई कहे कि साहब जब प्यास लगेगी तबहीं कुंआ खोद लेंगे पीछेकी बात किसने देखी है जैसे प्यास समय वो त्राहि त्राहि करके मरजाता है ऐसेही जो बने काममें मोक्षका उपायनहीं करते पीछे वही व्यवस्था होतीहै १२ पुत्र दारादि में आशक्ति न करनी अनित्य जानकर प्रीतिका त्याग करना १३ पुत्रादिके दुःख सुख में यो अध्यासन करना किमैं सुखी दुःखीहूं १४ इष्ट अनिष्टकी प्राप्तिमें समचित्त रहना क्योंकि लाभ हानि दिन रात्रि ऋतु युगादिवत बदलतेरहतेहैं अष्टावक्रजीकहतेहैं कोनसी वोअवस्था और कालहै कि जिसमें प्राणियों को द्वंद्व,हर्ष,शोक,हानि,लाभ,

सुख,दुःखादि नहींरहतेजो परायेबश होनेवाले कार्यहैंउनको जो प्रतीकार होता तो बलराम युधिष्ठिरादि दुःखकरके क्यों दुःखी होते १५ परमेश्वर के बिषय अनन्य योग करके भक्ति करनी अर्थात्परमेश्वरकेबिनानहींहै भजनकेयोगजिसभक्तिमेंऐसीअव्य भिचारिणी भक्तिकरनी तात्पर्यसर्वात्मदृष्टिहोना १६ एकांतदेश शुद्ध चित्त का प्रसन्न करने वालाहो जिसजगह सिंहसर्प चौरादि को भीती नहो और आपकूं स्त्री आदि करके बिक्षेप न होवे उस देशका सेवन करना १७ प्राकृतजो जन कि जो स्त्रीकासंग और खाना सोनादि इसीकूं कहत हैं कि इस शरीरहुयेका योही फलहै ऐसोंके समीप नहीं बैठना १८ वेदान्त शास्त्रके श्रवणादि बिचारने में सदा लगे रहना तत्त्वं पदार्थों की जो शुद्धि उसी में निष्ठा रखनी तीसरे अध्याय में भी लिखआयेहैं कि ज्ञान के हेतु श्रवणादि हैं ज्ञानके होनेमें ये मुख्य साधनहैं इसी बात कूं प्रथम तो वेद भगवान् ने कहा है फिर ब्यासजीने भी सूत्र में कहाहै कि बारम्बार श्रवण करना एकही बेर न करना पंचदशी कारभी कहते हैं कि मन वाणी आदिकूं तक सावकाशनहीं देना मरने सोने पर्यन्त वेदान्त शास्त्र को चिंता करके कालकूं बिचारना तात्पर्य श्रीकृष्ण श्रीशंकराचार्य्य भगवान् से आदि लेकर सब आचार्य इसी बातकूं सिद्ध करते हैं कि मुक्ति की इच्छावाले वेदान्त शास्त्र बारम्बार श्रवण करना वेदान्त शास्त्रके बिना और पुराण शास्त्रोंका श्रवण न करना इसका भी नियम करदिया है क्योंकि बुद्धिएकहै बिचल न जावे बशिष्टजी भी कहतेहैं कर्म वो है जो बन्धन के लिये नहो बिद्या वोहै जो मुक्तिके लिये हो निःकाम कर्मके बिना और कर्मके बल आयासके लिये हैं ब्रह्मबिद्या के बिना और न्यायशास्त्रादि चित्रकारी आदिवत् बिद्याहैं १९ सबसे सिवाय इस देहका फल मुक्तिकूं समझना मुक्तिकेसाधनों में ऐसे प्रलय करना जैसे किसीके शरीरमें अग्नि लगजावे वस्त्र

बाल जलनेलगे जैसे वो गंगा जीकूं दौड़ता है जो कोई रस्ते में एक बात भी करले अथवा लोभ देकर खड़ा रक्खे तो नहीं खड़ाहोता ऐसे संसारके तापोंमें ताप हुआ यो पुरुष ब्रह्म विद्या गंगाजीकूं जल्दी प्रसन्न करके प्राप्तहो स्त्री धन वस्त्रादिजोरचे हुये माया के झूंठे अनित्य दुखदाई पदार्थहैं उनमें भोगबुद्धिकरके पतंगवत् नष्ट नहो २० ये बीस साधन श्रीकृष्णचन्द्रने गीता शास्त्रमें कहेहैं और २६ साधन दैवी सम्पत् के कहहैं उनकूं भी सुनो अभय होना किसी से इसलोक परलोक में भय न करना तात्पर्य पापात्माकूं भयहुआ करताहै १ अन्तष्करणकूं भलेप्रकार शुद्ध करना २ ब्रह्मज्ञानका जो उपाय उसमेंलगे रहना ३ दान करना यथाशक्ति कुछ अपने पास न हो तो अभय दानदेना ४ इन्द्रियों कूं अपने अपने विषयों से रोकना ५ द्रव्ययज्ञ चान्द्रायण ब्रतादि तपयज्ञ उपयज्ञ पढ़ना पाठकरना यो यज्ञचित्तवृत्तिनिरोध योग यज्ञ ऐसे ऐसेयज्ञसे लगाकर ज्ञानयज्ञ पर्यन्त जैसाअपने कूं अधिकारहो करते रहना ६ वेदशास्त्रोंका नित्यपढ़ना पाठकरना ७ अपने धर्म का अनुष्ठान करना ८ कोमलता ६ अहिंसा १० सत्य बोलना जो प्रत्यक्षादि प्रमाण करके भले प्रकार सिद्धकर लिया है ११ क्रोध न करना तत्काल पश्चात्काल केवल दुःख का हेतुहै जिस समय क्रोध आवेवो समय किसी प्रकार बितावे पीछे विचारे जो उस समय में ऐसा कहता करता तो क्याहोता १२ त्याग करना १३ चित्त कूं शान्त करना १४ पीछे किसीके अवगुण नहीं कहते लिखा है कि जो किया हुआ अवगुण किसी का कहे तो बराबर का पापी होता है और जो कुछ भला कर बढ़ा कर कहे तो दूना पापी होता है जो अपने सामने किसीके अवगुण कहे प्रथम उसीकूं पापी जाने १५ दया अर्थात् किसी कूं दुःख न देना और जो बने तो दूसरे का निवृत्तकर देना १६ लोलुप न होना अर्थात् कुछ पदार्थ के लिये पामरों के सामने

दीनता न करनी १७ क्रूरं कठोर चित्त न होना १८ खोटे कामों में लोकलज्जा रखनी वहां योन समझनाकिमेरेनिन्दा स्तुतिमान अपमान बराबरहैं १६ चपल न होनाअर्थात् वृथाक्रिया न करनी २० तेजस्वी रहना राजा आदि के छायामें न दबना जैसे और आदमी हैं ऐसे वेभी हैं २१ क्षमा २२ धैर्य सत्वगुणी अर्थात् दुःख सुख भूख प्यास लाभ हान्यादि में चित्त कूं स्थिर करना २३ शौच २४ किसीसे द्रोह न करना २५ चारगुण सम्पादन करने से चित्त प्रसन्न होजाता है चित्त के प्रसन्न होने से समस्त दुःख नाश होजाते हैं जो कि आपसे जाति विद्या में बड़ेहैं उन से द्वेष न करना १ बराबर केसे मित्रता रखनी २ छोटों पर दया करुणा करनी ३ पापी चौरजारों की उपेक्षा करनी ४ आत्माके विषय पूजा को अभिमान न रखनाकि हमपूजा के योग्य हैं जो दैवी सम्पत् को पुरुष है उसमें ये गुण स्वभाव करके रहते हैं जिसमें ये गुण होंगे वो निश्चय मुक्त होवेगा और आसुरी सम्पत् अरगुण दंभ दर्प काम क्रोध लोभादि बहुत हैं गीता शास्त्र में लिखेहैं कुछ थोड़े से इस ग्रन्थ में भी नवें अध्याय में लिखे हैं वे बन्ध के लिये हैं जिसकूं मुक्त होना है वहां से निश्चय करके उनसे बर्जित रहै दैवी सम्पत् के अनुष्ठान करने से आसुरी सम्पत् का तिरस्कार होजाताहै आसुरी सम्पत्के बर्जने से दैवीसम्पत् के गुणोंका अनुष्ठान होजाता है जो लक्षण स्वभाव से ज्ञानीके रहते हैं और साधककूं प्रयत्नकरने से सिद्ध होतेहैं उनकूं इस प्रश्नके उत्तर में लिखते हैं। प्रश्न। कैसे पुरुषकूं लोग ज्ञानी कहते हैं १ और कैसे वो ज्ञानी बोलताहै २ बैठता है ३ चलता है ४। उत्तर। जिस काल में यो पुरुष जितनी मन में बासना है सबकूं त्याग करके निजानन्द करके तुष्ट रहता है दुःखों में दुःख सुखमें सुख नहींमानता दूर होगये हैं भयराम क्रोध जिसके उसकूं ज्ञानी कहतेहैं १ शुभ

अशुभ को प्राप्त होकर किसी जगेप्रीति नहीं करता प्रियकूंप्राप्त होकर हर्षनहीं करता अप्रियकूं प्राप्त होकर शोकनहीं करता साक्षी हुआ बोलता है २ मुक्तिमेंयत्न करनेवाले विचारवान् केमन कूंभीजो इन्द्रिय हरलेते हैं उनसब इन्द्रियोंकूं रोककर परमेश्वर परायण हुआ बैठा रहता है ३ सारी कामनाका त्याग करके निर्मान हुआ औरजो कामना फिर प्राप्तहों उनमें ममताइच्छानहीं करता हुआ निरहंकार हुआ विचरतारहता है ४ फिर भी ज्ञानी का लक्षण और प्रकार करके सुनोयांज्ञानी का लक्षण स्वसंवेद और परवेदभी है उदासीनवत् स्थित हुआ ॥

टी०। उदासीनवत् लिखनेमें यो शंकाहै कि उदासीनही क्योंन कहा समाधान योहै दो मनुष्य झगड़ा करने वालोंमें कोई तीसरा भी उदासीन चला आवे वो देखतारहै वा चला जावे तो झगड़े करने वालोंकी कुछ हानि नहीं होती परंतु आत्मा उदासीनवत् तीन गुणोंके झगड़े का द्रष्टाहै जो चला जावे अर्थात् उनका अभिमान छोड़दे तो झगड़े करने वाले भी नहीं रहते इसलिये उदासीनवत् कहा ॥

मू०। गुणों करके नहीं बिचलता है योविचारता रहता है कि गुणवर्त रहहैं समान है पाषाणसोना निंदा स्तुति मित्र शत्रु मान अपमान जिसके सारे आरम्भों के त्याग करने का स्वभाव है जिसका उसकूं ज्ञानी गुणातीत स्थितप्रज्ञ कहते हैं और जो ज्ञानी का केवल स्वसंवेद लक्षण है ॥ सत्त्वगुणका जो कार्य प्रकाशादि रजोगुणका जो कार्य प्रवृत्ति आदि तमोगुणका जो कार्य मोहादि जो अपने आप प्रारब्ध के बलसे प्राप्तहों तब कुछ हर्ष शोक नहीं करता जो निवृत्त होजावे तब कुछ हर्ष शोक नहीं करता मुक्तिकी इच्छावाले के तो सत्वगुणमें राग हर्ष और रज तमोगुण में द्वेष शोक होता है ऐसे २ साधन गीता शास्त्रादिमें बहुत लिखे हैं तात्पर्य योहै जैसे बने शरीर इन्द्रिय प्राण अंत-

ष्करणकूं नित्य प्रतिदिन सिवाय २ अभ्यास करके निरोध करे बशिष्ठजी कहते हैं जैसे बने हाथसे हाथ दांतसे दांत मलकर हाहाकारादि शब्द करके मनकूं बशकरे बिषयाकार अन्तष्करण की वृत्ति सूक्ष्म करनेसे जो अपना स्वरूप हुआ हुआ नहीं प्रतीत होतासो स्वरूप ज्ञान द्वारा अपरोक्षहोजाताहै हुईवस्तुनप्रतीत होतीहो इसमें दृष्टान्त कहते हैं जैसे १० लड़कों में पढ़ता हुआ किसी का लड़का उस लड़के का शब्द बाहर से पृथक् भले प्रकार नहीं प्रतीतहोता अर्थात्उसकूं उसका पिता दूसरेसे योनहींकह सक्ता कि योमेरा लड़का पढ़ताहै ऐसेही जिसके इन्द्रियादि अपने अपने बिषयों में प्रवर्त्त होरहे हों उसकूं ज्ञान होनो कठिनहै जैसे जो वे ६ लड़के पढ़ने से चुप होजावें अथवा शनैःशनैः पढ़ें और वो लड़का अपने स्वभावके अनुहार पढ़ता रहै तब लड़केका शब्द निश्चय होसक्ता है ऐसेही जो बिषयाकार अन्तष्करण की वृत्ति सूक्ष्म होजावे तब अपना स्वरूप भलेप्रकार प्रतीत होसक्ता है इसलिये अवश्य अन्तष्करण की वृत्ति सूक्ष्म करदेनी योग्य है इन्द्रियोंके रोकने से अन्तष्करणकी वृत्ति सूक्ष्म होतीहैं इसमें भी दृष्टांत कहतेहैं जैसे किसी तालाब में दश गूल लगरहीहों उसकूं जो सुखानाहो तो प्रथम गूल बन्द करे फिर सूर्यके तपनेसे तालाब सूखजाताहै ऐसे प्रथम इन्द्रियों कूं निरोध करे फिर बिचाररूप सूर्य तपावे इसप्रकार अन्तष्करणकी वृत्ति सूक्ष्म होसक्तीहै भला इसबातकी परीक्षाके लिये प्रथम महीना भरतो ऐसा अभ्यासकर देखो कितनाभेद पड़ताहै जिसके अभ्यास करनेसे नित्य प्रतिदिन उसका फल करामलकवत् प्रतीत होताहो फिर उसकूं न करो तो कहो उससे सिवाय और कौन पशुहै॥ अन्तष्करणकी वृत्तियोंका सूक्ष्म होजाना इसीकूं मनोनाश कहतेहैं ऐसे २ साधनों करकेयुक्त जो पुरुष सो ज्ञानद्वारा अनायास निरतिशय आनन्द कूं प्राप्त होताहै॥ इतिश्रीआनन्दाऽमृतवर्षिण्यां चतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

अथ पंचमोध्यायः ॥

सत्त्वगुणके बढ़ाने से रजोगुण तमोगुणके कम करने से ज्ञान द्वारा अपने स्वरूप की प्राप्ति होतीहै इसलिये सत्त्वगुणके बढ़ाने रज तमो गुण कम करने के लिये तीनों गुणों का लक्षण लिखतेहैं जिस प्रकार ये तीनों गुण देहके विषय आत्माकूं बन्धन करतेहैं सो सुनो सत्त्वगुण निर्मल होने से प्रकाशक शान्त रूपहै कोई उपद्रव उसमें नहीं शान्तरूप होने से जो अपना कार्य सुख उस के साथ बन्धन करताहै और प्रकाशक होनेसे प्रकाशकका कार्य जो ज्ञान उसके साथ आत्माकूं बन्धन करताहै मैं सुखी मैं ज्ञानी ये मनके धर्महैं आत्मा में जोड़ देता है रजोगुण का कार्य और बन्धन प्रकार लिखतेहैं रजोगुण रागात्मक अर्थात् रागहै आत्मा स्वरूप जिसका और तृष्णा संगकी उत्पत्ति है जिससे सो रजोगुण आत्माकूं कर्मोंमें संग आ० ॥

टी० । जो वस्तु प्राप्त नहीं उसमें अभिलाषारहनी तृष्णा प्राप्त वस्तु में विशेष आशक्ति होनी संग ॥

मू० । शक्ति करके बन्धन करता रहै तमोगुण तमरूप है सब प्राणियों कूं मोह करने वाला है सो तमोगुण प्रमाद निद्रा आलस्यादि करके बन्धन करता है सत्त्व आदि अपने२ आविर्भाव में जो करतेहैं उनकी शक्तिकूं दिखलातेहैं जिससमय रज तमोगुणकूं तिरोभाव करके सत्त्वगुण आविर्भाव होताहै सोसत्त्व दुःख शोकादिके कारणहुये सन्तेभी सुखके अभिमुखकरदेताहै रजोगुण सुखादिके कारणहुये सन्तेभी कामोंमें लगादेताहैतमोगुण शास्त्रजन्यज्ञानकूं ढककरके सुखादिके कारणहुये सन्तेभी प्रमादादिमें जोड़देताहै महत पुरुष पूर्व संस्कारसे मिले भी उन्होंने उपदेश भी किया उपदेश समय चित्त प्रमादमें लगा रहा जिस हेतुसे वोही तमोगुणहै महात्माने जो कहा उस अर्थकूं न धारण किया

जिस हेतुसे वोही प्रमाद है यो नियमहै कि जब सत्त्वका आ-
विर्भाव होताहै तब रजतम तिरोभाव होजातेहैं जब रजोगुण
का अविर्भाव होताहै तब सत्त्वतम तिरोभाव होजातेहैं जबतमो-
गुणका आविर्भाव होताहै तब सत्त्व रज तिरोभाव होजाते है
जिस कालमें सत्त्वादि देह में बढ़रहतेहैं उनका स्वरूप लिखते
हैं इस शरीरके सारेद्वारों में जिस समय प्रकाश होता है और
अन्तष्करण में सुखका आविर्भाव होताहै इस चिन्ह से जानना
कि अब सत्त्वगुण बढ़ाहुआ है ऐसेही लोभ प्रवृत्ति कर्मोंकाआ-
रम्भ अंश मस्पृहा ऐसे ऐसे चिन्ह करके जाने कि अब रजोगुण
बढ़रहाहैऔरप्रकाश अप्रवृत्तिप्रमाद मोहादिके आविर्भावमें यो
जानेकि अब तमोगुण बढ़रहाहै अन्तकाल में जो सत्त्व गुणादि
का आविर्भाव होतो क्या २ फल होता है सोई लिखते हैं जो
अन्तकाल में सत्त्वगुण बढ़ाहोवे तो यो देहधारी जीव इसदेह
कूं त्यागकरकेजो कि पुण्य लोकहै जहा मल नहींहै सुखभोगने
के स्थानहें उनकूं प्राप्तहोताहै और रजोगुणमें मरकरके कर्मसंगी
मनुष्यों में उत्पन्न होताहै तमोगुणमें मरकरके पशु आदिमूढ़-
योनि में उत्पन्नहोताहै जिस हेतुसे इस शरीर में अपने आप
सत्त्वादि गुण आविर्भावहोते हैं उसका कारण कहते हैं निर्मल
फल जो ज्ञानसुख सो पिछले सत्त्वगुणी कर्मका फल है रजोगु-
णी कर्मका फल दुःखादि है तमोगुणी कर्मका फल अज्ञानादि
है सत्त्वगुणसे ज्ञानादि होतेहैं रजोगुण से लोभादि होतेहैं प्र-
माद मोहादि तमोगुणसे होते हैं सत्त्वगुणी आदि पुरुषोंकू देह
के पीछे क्या फल होताहै प्रथमतोयो कहाथा अन्तकाल में जो
गुण बढ़ाहोवे उसका ऐसा फल होताहै यहा तारतम्यता का
विचार है जे सत्त्वगुणी हें वे अपने गुणकी तारतम्यता से ऊ-
परके लोकों कूं प्राप्त होंगे जैसे इसलोक में ब्राह्मण क्षत्री वैश्य
शूद्रादिकी और राजामंत्री आदिकी तारतम्यता है ऐसेही ऊपर

भी देवता गन्धर्व्वादि ब्रह्मलोकादि लोकों की तारतम्यता है जितनी यहां मनुष्य लोकमें जिसके सत्त्वगुण की वृत्ति सिवाय रहीहै वो उसी लेखसे ऊपर के लोकोंकूं प्राप्तहोगा इसीप्रकार जो गुणीमनुष्य लोकमें ब्राह्मण और चक्रवर्त्ति राजासेलगाकर चांडाल कंगाल पर्यन्त उत्पन्न होवेगा और तमोगुणी पशु आदि योनियों में अर्थात् कीट आदि सर्पादिसे लेकर गौहंसादिपर्यन्त योनियों में उत्पन्न होवेगा और जो ज्ञानीहैं वो गुणातीत हैं मुक्त होवेगा वो यों जानताहै कि मैं इन गुणोंसे पृथक्हूं गुणही कर्त्ता है मैं अकर्त्ताहूं गुणोंका द्रष्टा साक्षीहूं परमेश्वर कहतेहैं गुणातीत मेरे भावकूं प्राप्त होवेगा तात्पर्य्य मुक्त होवेगा॥ देवता की पूजा करने और यज्ञ आदि दान तपादि करनेसे अन्नके खानेसे ऐसी ऐसी बहुत बातें हैं सत्त्वादिकी परीक्षा होतीहै तात्पर्य जो सत्त्वगुणी देवता की पूजा करे तो जानना कि यो सत्त्वगुणी है ऐसेही रज तमोगुणी की कल्पना करलेनी और ऐसेही यज्ञ दानादि में समझ लेना सत्त्वगुण पूजा दानादि करने से सत्त्वगुण बढ़ता है इसलिये रजोगुणी तमोगुणी सम्बन्धी पूजादि त्याग देने के लिये सत्त्वगुणी सम्बन्धी पूजादि सेवन करने के लिये पूजादिकूं सत्त्व रज तमो गुण भेद करके लिखते हैं॥ ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य, शक्ति, गणेशादिके यजन करनेवाले सत्त्वगुणी हैं यक्षादि के यजन करनेवाले रजोगुणी हैं भूतप्रेतादिके यजन करने वाले तमोगुणी हैं रजोगुणी तमो गुणी ऐसा ऐसा तप करते हैं कि शास्त्र में तो उसका विधान नहीं और प्राणियों कूं भय का देने वाला घोर शरीर कूं खेद करनेवाला मूर्ख वृथा पाषण्ड करके ऐसा तप करते हैं हेतु उसका यों है कि काम राग दम्भ अहङ्कारादि करके युक्त हैं जैसे कि नास्तिकादि के व्रतादि हैं इस समय में बहुत प्रसिद्ध हैं लक्षण उनके श्री तुलसीदास जीने रामायण में लिखे हैं तात्पर्य्य जो शास्त्र ने

नहीं बिधान किया सो पाषण्ड है शास्त्रकी बिधि से करना तप आदि सत्त्वगुणी हैं भोजन का भेद कहते हैं रसवाला अन्न घृत शर्करा करके युक्त और भोजनके पीछे शरीर में अपने रसकरके चिरकाल स्थिररहे औरस्निग्ध कोमलतर और जिसके देखनेसे चित्तप्रसन्न होजावे देखतेही मन अंगीकार कर लेवे ऐसा अन्न अवस्था उत्साह शक्ति आरोग्य का बढ़ानेवाला सत्त्वगुणी कूं प्रियहै यज्ञ में ऐसा अन्न देना योग्यहै १ अति कटु अम्ल लवण उष्ण तीक्ष्ण रूक्ष और दाह करनेवाला ऐसा अन्न दुःख शोक रोगका बढ़ानेवाला है और भोजन के पीछेभी दुर्मन करनेवाला रजोगुणी कूं प्रियहै अति शब्द सबके साथ जोड़देना २ जिसकूं बने हुये पहर बीतजावें और गत रस ठंढा होजावे और जिसमें दुर्गन्ध आवे बासी जूंठा शास्त्र करके निन्दित ऐसाअन्न तमोगुणी है ३ यज्ञका भेद कहतेहैं फलकी इच्छा नहींहै जिन्होंके योंही बिचार करके कियज्ञ करना वेद बिहित हैहमकूं करना योग्य है इसप्रकार मनकूं समाधानकरकेजो यज्ञकरतेहैं सोयज्ञ सत्त्वगुणी है १ फलका उद्देश करके दंभ करके जो यज्ञ करते हैं सोरजो-गुणी है २ शास्त्र बिधि करके हीन रजोगुणी तमोगुणी अन्न है जिस यज्ञमें मंत्र दक्षिणा करके हीन श्रद्धा करके रहित जोयज्ञ सो तमोगुणी है ३ तप कूं आगे सत्त्वादि भेद करके लिखेंगे प्रथम तपकूं मनवाणी शरीर भेद करके लिखते हैं देवता ब्राह्मण गुरू और कोई महात्मा उसका पूजन करना कोमलरहना हिंसा न करनी पवित्र ब्रह्मचर्य रहना इसकूं शारीरक तपकहते हैं १ मैथुन के आठअंग हैं सबसे वर्जित रहना इसका नाम ब्रह्मचर्य है रागबुद्धि करके स्त्रीकास्मरण करना १ कीर्तन करना २ हासी चौहल करना ३ भले प्रकार दृष्टि जमा कर देखना ४ गुप्त एकान्त में बात करनी ५ मनमें संकल्प करना कियो कैसे प्राप्त हो ६ यो निश्चय करना कि हम इससे संग करेंगे ७ साक्षात्

भ्रष्ट होजाना ८ राग पद सब के साथ जोड़ देना ऐसा बचन बोलना दूसरे कूं उद्वेक न करने सत्यहो उसकूं प्यारा लगे परिणाम में सुखका करने वाला थोड़े अक्षरोंमें कहना वेद शास्त्रके पढ़ने पाठका अभ्यास रखना इसकूं वाणी का तप कहते हैं २ मनकी प्रसन्नता अक्रूरता मनन करना मनकूं बिषयों से निरोध करना ब्यवहार में माया न करनी इसकूं मानस्तप कहते हैं ३ इस तीन प्रकार के तपकूं सात्विकादि भेदकरके तीन प्रकार का कहते हैं एकाग्रचित्त करके फल की इच्छा न करके परम श्रद्धाकरके ऐसाजो तीनप्रकारका तप कियाहै इसकूं सात्विक कहतेहैं १ जिन्हों ने सत्कार के लिये किये साधु हैं मान और पूजा के लिये दंभ करके जो तप किया है सो अनित्य होने से रजो गुणीहै २ बिना विवेक के दुराग्रह करके आत्मा कूं पीड़ा करके अथवा दूसरे के नाश के लिये जो तप करतेहैं सो तमोगुणी है ३ दानका भेद कहते हैं हमकूं देना योग्यहै इस बुद्धि करके सुन्दर देश काल में अनुपकारी सुपात्रों कूं जो दान देना सो सत्वगुणी १ जो प्रत्युपकारी कूं वा फलका उद्देश करके वा चित्त में क्लेश करके जो दान देना सो रजोगुणी २ अपात्रोंकूं वाअदेश काल में देना और जो सुपुत्रों कूं भी देना तो असत्कार अवज्ञा करके देना यो दान तमोगुणी है ३ कर्मकाभेद कहते हैं फलकी इच्छा न करके यो विचार कर कि कर्मकरना वेदशास्त्र कीआज्ञा है नित्य करना चाहिये राग द्वेषके बिना अभिनिवेशन रखकर जोकर्म कियाहै सो सत्वगुणी १ फलकी इच्छा करके अहंकार करके बहुत आयास करके जो कर्म किया सो रजोगुणी २ पश्चात् भावी धनादि का ब्यय हिंसा अपना बल इनकूं नहीं बिचार करके केवल मोह से जो कर्मका आरम्भ करना सो कर्म तमोगुणी ३ कर्त्ताका भेद कहते हैं त्यागदियाहै अभिनिवेश कर्ममें जिसने और गर्वकी जोबात बोलनी उससे रहित धीर्य उत्साह वाले

कर्मकी सिद्धि असिद्धिमें निर्विकार ऐसा कर्म कर्त्ता सत्त्वगुणी १ रागी फलकी इच्छा वाला लोभी हिंसात्मक अपवित्र हर्ष शोक करके युक्त ऐसा कर्मकर्त्ता रजोगुणी २ प्राकृत अनम्र अवगुण की शक्तिकूं छिपानेवाला आलस्य स्वभाव वाला शोकशील दीर्घसूत्री अर्थात् घड़ीके कामकूं महीना लगावे ऐसा कर्म कर्त्ता तमोगुणी ३ सुखका भेद कहते हैं तम रजोगुणी वृत्तियों का निरोध करकर जो सत्त्वगुण बढ़ता है कार्य उसका शांति संतोष निर्वैरता बेपाह कोमलतादिहै उसकालमें जो अंतष्करण में सुख होताहै सो सत्त्वगुणी है प्रथम अन्तष्करण निरोध के समय तो योबिषकी सदृश प्रतीत होताहै परन्तु थोड़ेदिनों तक पीछे तो सदा अमृतकी सदृशहै १ इन्द्रियोंका विषयों के साथ संबन्ध होनेसे अर्थात् खाने देखने मैथुनादिसे जो सुख होताहै सो रजोगुणी उस क्षणमें तो अमृत की सदृश प्रतीत होताहै पीछे तो बिषकी सदृशहै २ निद्रा आलस्य मनोराज्यादिसे जो सुख होताहै सो तमोगुणी वह इसलोक का न परलोक का केवल आत्माकूं मोहने वालाहै तात्पर्य इसलोक स्वर्गादिमें व देवताओं में ऐसा कोई नहीं एक शुद्ध प्रत्यगात्मा के बिना कि जो इन गुणोंसे रहितहो त्यागज्ञान बुद्धिधीर्य श्रद्धादि सत्त्वादि भेदसे गीता शास्त्रमें भले प्रकार लिखेहैं और जितना भेद ऊपर लिखा है उनकाभी अर्थ गीतादि के श्रवण से निश्चय होसक्ता है जितनी वेदशास्त्रों की आज्ञाहै कि यो करना यो न करना सबका तात्पर्य योहै किजिसके करनेसे रजतमोगुण बढ़तेहैं वहकाम न करना और जिसके करनेसे सत्त्वगुण बढ़ता है वहकाम करना बुद्धिमानको बिचारना चाहिये कि प्रातःकालादि स्नान ध्यानादि करनेसे रज तमोगुण का नाश होताहै वानहीं जो जाने कि होता है तो सदा जैसे बने वैसेही शास्त्र विहित कर्मोंको करना योग्यहै जिस कालमें रजतमोगुणकी वृत्तियों का तिरस्कार और स-

स्वगुण की वृत्तियों का आविर्भाव भले प्रकार होजावेगा उस कालमें योमेरेकूं करना योग्यहै यो अयोग्य हैयोरस्ताबन्धदुःखादिका है योरस्ता सुख मुक्तिकाहै सब जान जावेगा और वशिष्ठ व्यासादि कूं जो योसमर्थहैं सब भूत भविष्यत्काल की व्यवस्था कहदेनी यों सत्त्वगुणका प्रताप है जिसके जितना सिवाय सत्त्वगुण होगा उसके उतनाहीं सिवाय प्रकाश होगा तात्पर्य सत्त्वगुण के बढ़ानेसे सिद्ध स्वर्ग लक्ष्मी आदि भी प्राप्ति होनी बहुत सहजहैं और सत्त्वगुणके बढ़ने से ज्ञान द्वारा मुक्तहोजाता है यों मुख्य फलहै ॥इतिश्रीआनन्दामृतवर्षिण्यांपञ्चमोध्यायः५॥

अथ षष्ठोध्यायः॥

प्रथम साधन अवस्थामें कर्म उपासना करनी योग्य है ज्ञान में समुच्चय न करना अर्थात् कर्म उपासना ज्ञान तीनों मिलकर मुक्ति होतीहै ऐसा न विचारना श्रीशंकराचार्य महाराज ने गीता भाष्यादि ग्रन्थों में सब समुच्चय का खण्डन भले प्रकार प्रमाण पूर्वक कियाहै तात्पर्य इस बात कूं सिद्ध किया है केवल ज्ञान से मुक्ति होतीहै ज्ञानकूं कर्म उपासनाकी इच्छा नहीं कर्म उपासना कूं ज्ञान की इच्छाहै तात्पर्य बिना ज्ञान कर्मउपासना से मुक्तिनहीं होती यहां भी इसी बात कूं सिद्ध करते हैं केवल ज्ञानसे मुक्ति होतीहै शंका। तप योग यज्ञ स्नान व्रतादि का फल मुक्ति सुना जाताहै उनकी क्या गति होगी। उत्तर। तप योगादि परम्परा करके मुक्ति के साधन हैं ज्ञान तो साक्षात् स्वतंत्र मुक्ति का साधन है योही बात श्री रामचन्द्र जीने भी लक्ष्मण जीके प्रति रामगीता में कही है वेजो कर्म उपासना वाले केवल कर्मउपासनासे मुक्ति कहतेहैं उनसे बूझनायोग्यहै कि वेदकी हजारों श्रुति द्वैतपर हैं उसकी क्या गतिहै कर्मउपा-

सतावाले जोबूझे कर्मउपासनापर जो हजारों श्रुतिहैं उनकीक्या गतिहै इसप्रश्नके उत्तर में ब्रह्मवादीलोगयों कहतेहैं कि कर्मकरने से अन्तष्करण शुद्ध होताहै उपासनासे चित्तकी एकाग्रता होती है यों उनका परम प्रयोजन है फिर ज्ञान द्वारा मुक्ति होती है तदुक्तम्॥धर्मसे बिरतियोगसेज्ञाना॥ज्ञानसेमोक्षपद वेदबखाना॥ यों शास्त्रार्थ दिग्बिजय शारीरक भाष्यादि ग्रन्थों में बहुतहै जो बहुत चर्चा करे वह उन ग्रन्थों का श्रवण करे यहां सिद्धांत लिखते हैं केवल ज्ञान मुक्तिका साधना है उसमें यों दृष्टांत है जैसे पाक क्रियामें लकड़ी जल बर्तनादि परम्परा करके गौण साधन हैं ऐसेही कर्म उपासना मुक्ति का गौण साधनहैं ज्ञानतो साक्षात् मुक्ति का साधन है जो ऐसी शंका करे पाक क्रिया में अग्नि गौण रहो जल बर्तनादि मुख्य हैं दृष्टांत में यों आया कर्म मुख्य हैं ज्ञान गौणहै उत्तर उसका योंहै अविद्या औरकर्म का बिरोध नहीं कर्मभी जड़ अबिद्या भी जड़ है अन्धकार कूं अन्धकार नहीं दूर कर सक्ता बिद्या ज्ञानरूप है योंही ज्ञान अज्ञानकूं दूरकर सक्ताहै जैसे प्रकाश अंधकारकूं इस हेतुसे ज्ञान गौण नहीं होसक्ता तदुक्तम् ॥ हुयेज्ञान बरुमिटे न मोहू। तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू। शंका। कर्मगौण रहो ज्ञान मुख्य रहो उपासना कहां गई। उत्तर। जोऐसी उपासना है किमैं ब्रह्म हूं अर्थात् अभेद उपासना का तो ज्ञानमें अन्तर्भावहै और दासो-हम् अर्थात् भेद उपासना का कर्ममें अंतर्भाव है इस प्रक्रिया में ज्ञान कर्म दोहीहैं। शंका। आत्मातो सब शरीरों में परिच्छिन्न प्रतीत होताहै आत्माकूं पूर्णता कैसेहै। उत्तर। परिच्छिन्नवत् आत्मा अज्ञानसे प्रतीत होताहै अविद्याके नाश होनेसे आत्मा पूर्ण जैसाहै बैसाही प्रतीत होने लगता है जैसे सूर्यके आगे बादल होनेसे वा मंदिर आदिकी उपाधिसे धूप परिच्छिन्न प्रतीत होतीहै बादल मकानकी उपाधि दूर होनेसे पूर्ण प्रकाश

होजाता है जो आत्माजीव अज्ञान का जो कार्य देहादि में अहं-बुद्धि इस करके आपकूं कर्त्ता भोक्ता मानकर मैला होरहाहै ज्ञानके अभ्याससे निर्मल होजाताहै। शंका। जोज्ञान बना रहा तो अद्वैत की असिद्धिहै। उत्तर। ज्ञानके अभ्याससे प्रगट होता है जोवृत्ति ज्ञानसो अज्ञानकूं नाश करके और आत्माकूं निर्मल करके आपभी नाश होजाती है जैसे कतकरेणु जलके मलकूं दूर करके आपभी नाश होजातीहै। शंका। आत्मा ज्ञान रूपहै वहां अज्ञान कैसे रहा। उत्तर। ज्ञान स्वरूप आत्मा अज्ञान का विरोधि नहीं वृत्ति ज्ञान अज्ञान का विरोधिहै जैसे बांसमें अग्नि रहती है परंतु उसकी विरोधि नहीं मथन करनेसे उत्पन्न होती है जो अग्नि सो विरोधि है। शंका। योसंसार प्रत्यक्ष दीखता है इसकूं झूंठा कैसे कहतेहो। उत्तर। संसार स्वप्नकी तुल्यहै जैसे स्वप्न अपने कालमें सत्यवत् प्रतीत होताहै जाग्रत में असत्य-वत् प्रतीत होताहै सत्य असत्यवत् प्रतीत होताहै परमार्थ में दोनों प्रकार नहीं और जैसे देखने मैथुनादिसे जाग्रतमें दुःख सुख होताहै वैसाही स्वप्नमें दुःख सुख होताहै और जैसे स्वप्नके पदार्थ अनित्य हैं वैसेही जाग्रत के पदार्थ अनित्यहैं तात्पर्य भ्रान्ति कालमें जबतक जगत् सच्चा सा प्रतीत होताहै कि जब तक अपना स्वरूप सच्चिदानन्द ब्रह्मसे अभिन्न सबका अधिष्ठान नहीं जाना जैसे रजतकी जबतक भ्रमसे प्रतीतहै तबतक शुक्तिके विशेष गुण नील पृष्ट त्रिकोणादिनहीं निश्चयकिये सत्चितरूप आत्मामें सब प्रपञ्च कल्पित है जैसे सोने में झूमके बाली आदि कल्पितहैं और जैसे घटमकानादिकी उपाधिसे महाकाशपृथक् २ घटाकाशमठाकाश अनावच्छिन्नवृक्षावच्छिन्नआकाशकहाजाताहै ऐसेही आत्मदेहोंकी उपाधिसे परिच्छिन्न कहाजाताहै और जैसे जब घटमकानादिका नाश होजावे तो केवल महाकाश रहजाता है ऐसे देह समूह अविद्या के नाशहुये आत्माभी पूर्ण रहजाता

है सत्त्व तम रजोगुणोकी नाना उपाधिसे जाति वर्ण आश्रमादि आत्मामें कल्प रक्खेहैं जैसे जल स्वभावसे मीठा श्वेतहै उपाधि से खट्टे नमके लाल पीलेकी उसमें कल्पना कीजातीहैं स्थूल सूक्ष्म कारण तीनों उपाधियों से आत्मा पृथक् जानना चाहिये जैसे शुद्ध स्फटिक रक्त पीत रंगके योग से वैसाही प्रतीत होता है जैसे धानों कूं मूसले से खोट पिछोड़ कर चावल पृथक् कर लेतेहैं ऐसे पंचकोशरूपी भूसीकूं दूरकरके बिचाररूप जो पिछोड़ना इस युक्त करिके आत्माको पंचकोश तीनशरीरसे पृथक् शुद्ध जानना चाहिये । शंका । तुम आत्माकूं सर्व गत कहतेहो सोंतो नहीं दीखता । उत्तर । आत्मा सब कालमें सर्व गतहै परंतु शुद्ध बुद्धिकी वृत्तिमें प्रतीत होताहैजैसेप्रतिबिम्ब सारेहैं परन्तुस्वच्छ पदार्थ दर्पण जलादिमेंप्रतीत होताहै देहइन्द्रिय मन बुद्धिप्रकृति इनसे आत्मा बिलक्षणहै येसब दृश्यहैं उनकाजो द्रष्टा साक्षी सो आत्माहै । शंका । तुम आत्माकूं निर्बिकार कहते हो आत्मा तो बिकारवाला प्रतीतहोताहै क्योंकि मैं चलताहूं वोबोलताहूंऐसे२ व्यापार से व्यापारी दीखता है । उत्तर । पृथक् २ जो इन्द्रिय मन प्राणादि ये पृथक् २ अपने २ बिषयोंमें अपनी अपनी क्रिया मेंजो प्रवर्तहोतेहैं उनकेसाथ आत्माभी व्यापारीवत् बिनाविवेक मूर्खोंकूं प्रतीत होताहै जैसे बादलके चलते हुये बालक कहताहै कि चन्द्रचलताहै बालकके तो योहीनिश्चयहै परन्तु बिचारवान कूं भी भ्रान्ति से चन्द्रका चलना प्रतीत होता है और जैसे नाव में बैठहुये गंगाके तीरके वृक्षादि चलते हुये प्रतीत होतेहैं ऐसे आत्मा भी व्यापारीवत् प्रतीत होताहै देह इन्द्रिय प्राणमनादि सबजड़ पदार्थ हैं आत्मा चैतन्यकूं आश्रयकरके अपने अपने अर्थ में प्रवर्त होतेहैं जैसे सूर्यके निकलनेसे मनुष्यादि अपने२ काम में लगतेहैं देह इन्द्रिय गुण कर्मादि अमल सतचित् आत्मा में बिबेकके बिना अभ्यास कर रक्खेहैं जैसे आकाश में नीलता

मनादि की उपाधि अर्थात् मैं कर्त्ता भोक्ताहूं ये अज्ञान से आत्मा में कल्प रक्खे हैं जैसे जलका चलना चन्द्र में कल्प रक्खा है राग इच्छा सुख दुःखादि बुद्धि के हुये हुये प्रतीत होते हैं सुषुप्ति में बुद्धि लय होजाती है वहां नहीं प्रतीत होते इसलिये रागादि बुद्धिके धर्म हैं आत्मा के नहीं जैसे सूर्य का स्वभाव प्रकाश अग्निका उष्ण स्वभाव जलका शीत स्वभाव है ऐसे नित्य निर्मल आत्मा का सच्चिदानन्द स्वभावहै सत् चित् आनंद ये तीन पदहैं शास्त्र में ये तीनों मिलकर एक सच्चिदानन्द ऐसा बोलने में आता है सत् जो तीनोंकाल भूत भविष्यत् बर्तमान में एक रस बना रहता है भाषामें सत्त कूं है कहते हैं और घट पटादि में जो है यों शब्द प्रतीत होताहै सो आत्माही का अंश है यों बात दूसरे अध्याय में जहां अस्ति भांति प्रिय का प्रसंग है वहां भलेप्रकार सिद्ध कर आये हैं और चित्चैतन्य रूप ज्ञानरूप प्रकाशरूप परन्तु ऐसा प्रकाश न समझना जैसा अग्नि सूर्यादि का है क्योंकि ये तो स्वप्न सुषुप्ति में एक भी नहीं ऐसे समझो जिसके प्रकाश से जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति के पदार्थों का भान होता है अर्थात् जिस प्रकाश करके रूपादि मनादि सुख अज्ञानादि जाने जाते हैं जाग्रत अवस्था में भी आत्मा के प्रकाश के बिना कुछ नहीं प्रतीत होसक्ता परन्तु सूर्यादिकाभी प्रकाश है और स्वप्न सुषुप्ति में तो केवल आत्माही का प्रकाश है इस हेतु से वहां भलेप्रकार प्रतीत होताहै कि आत्माका यों प्रकाश है आत्मा स्वयंप्रकाश स्वप्नमें भलेप्रकार प्रतीत होसक्ता है और आनंद रूप जोकि सबसे सिवाय प्यारी बस्तुहै उपनिषद में याज्ञवल्क्य मैत्रेयी का संबादहै हे मैत्रेयी धन आत्मा के लिये प्यारा पुत्र आत्मा के लिये स्त्री आत्माके लिये तात्पर्य सब पदार्थ आत्मा के लिये प्यारे हैं जो सब पर बिपत्ति पड़ेतो प्रथम अपने शरीर की रक्षा करता है और ब्रह्मानन्द के लिये

शरीर इन्द्रिय प्राण का भी नाश करदेता है इसी हेतुसे प्यारा आत्माहै वोही आत्मा आनन्दरूपहै वह आनन्द रूप रजतमो- गुण की वृत्तियों में दब रहाहै इस आनन्दरूप का पंचदशी ग्रन्थ में ब्रह्मानन्द के ५ अध्याय हैं योगानन्द, आत्मानन्द, अ- द्वैतानन्द, विद्यानन्द बिषयानन्द, ये हैं नामजिनके उनमेंभले- प्रकार निश्चय होसक्ता है । शंका । आत्मातो निर्विकारहै बुद्धि जड़है मैं जानता हूं यों किसका धर्म । उत्तर । आत्मा का सत्- चित् अंश और बुद्धि की वृत्ति ये दोनों जुड़कर बिबेक के बिना यों ब्यवहार होता है कि मैं जानता हूं आत्माकूं जीव जानकर भय कूं प्राप्त होता है और जब यों जाने कि मैं जीव नहीं पर- मात्माहूं तब निर्भय होजाताहै जैसे जब तक रज्जुमें सर्पजान्ता रहेगा तबतक निश्चयभय रहेगा वेद बारम्बार कहते हैं जोजीव ब्रह्ममें किंचित् भी भेद करेगा उसको बड़ा भय होगा बिचारो जो जीव ब्रह्ममें भेदहै तो पूर्णब्रह्म कैसेहै जो एक से भेदहुआ तो अनेक जीव पशुपक्षी देवता यक्ष आकाशादि से सबसे भेद हुआ तो जैसे और हैं ऐसेही ब्रह्म भी एक देशी हुये और राम- चन्द्र, कृष्णचन्द्र, बिष्णु, शिवादि मूर्त्तितो परमेश्वर की माया मयहैं बास्तव नहीं इस बात कूं परमेश्वरने अपने मुखसेकहा है हे लक्ष्मी यों मेरा शरीर माया मय है सात्त्विक नहीं पद्म- पुराण में गीता जीके माहात्म्यमें लक्ष्मी नारायणका सम्बादहै और गीताशास्त्र में परमेश्वर कहतेहैं मुझ अब्यक्त कूं जो ब्यक्ति वाला जानते हैं वे मूर्ख हैं जब कि परमेश्वर आप ऐसा कहते हैं कि बिवाद की बातहै परन्तु मूर्ख अपनी मूर्खतासे सच्चिदानन्द एक रस पूर्ण ब्रह्मकूं परिच्छिन्न एक देशी कहेंगे अर्थात् बैकुण्ठ कैलास, मथुरा, अयोध्याबासी कहेंगे और परमेश्वर के सद्भाव में ऐसी ऐसी चर्चा करेंगे कि कृष्णचन्द्र ने गोबर्द्धन उठा लिया इस हेतु से कृष्णचन्द्र परमेश्वर हैं और जो श्रुति स्मृति युक्ति

हज़ारों परमेश्वर के सद्भाव में प्रमाण हैं कि जिन युक्तियों से नास्तिकों के मतखण्डन किये जाते हैं जो नास्तिक वेदकूं न परमेश्वर कूं न परमेश्वर के वाक्यों कूं मानता है उसका मत केवल युक्ति करके खण्डन होताहै मूर्ख उन युक्तियों कूं तो जानते नहीं ऐसी तुच्छ युक्ति देते हैं जिसकूं बालक भी खण्डन कर दे गोवर्द्धन के सिवाय कैलास रावणने उठालिया है और हज़ारों राजा पुराणों में प्रसिद्ध हैं जिनके रथके पहिये के समुद्र बनेहुये हैं, क्या वे परमेश्वर थे और परमेश्वर ने रावणमारा कंसमारा और अनेक जय करी यो परमेश्वर की क्या स्तुति है अर्थात् निन्दाहै क्योंकि जो परमेश्वर करने कूं न करने कूं औरका और करदेने कूं समर्थ हैं क्या वे ऐसी ऐसी उपाधि करके नानाप्रकार का अपने ऊपर दुःख उठाकर औरों से सहाय ले ले जय करते तदुक्तम् । दोहा । प्रीति बिरोध समान सन करिय नीति अस आहि । जोमृगपति बध मेडुकन भलोकहै को ताहि ॥ चौपाई । भवन अनेक रोम प्रति जासू । यह प्रभुता कछु बहुत न तासू ॥ सो महिमा समुझत प्रभु केरी । जो बरणत हीनता घनेरी ॥ और प्रसिद्ध है कि चक्रवर्ती राजा कूं एक देशका राजा कहना षट्शास्त्री कूं दो चार पोथी का पढ़ाहुआ कहना चार पुत्रवाले कूं एक पुत्रवाला कहना कितना अनर्थ है और जो यों कहो कि व्यासदेव वाल्मीकि जी आदिने क्यों परमेश्वर की ऐसी ऐसी स्तुति लिखी हैं सो सुनो जो परमेश्वर कूं सच्चिदानन्द पूर्णब्रह्म नित्यमुक्त एकरस असंग ऐसा बिचारने कूं समर्थ नहीं योंहीं जानता है जैसे मैं उत्पन्नहुआ हूं मेरे माता पिता स्त्रियादि हैं ऐसेही परमेश्वर माता पिता स्त्रीवाले होंगे और जैसे इस लोक में शरीर मकान उपवनादि सुन्दर सुन्दर जिसके होते हैं और जो शत्रुओं कूं मार मार आप जय कूं प्राप्त होता है उसकूं मूर्ख लोग बड़ा कहते हैं इसलिये उन मूर्खों के लिये व्यासादि जीने

परमेश्वर की ऐसी ऐसी स्तुति लिख दी और बिचारवानों के लिये वेदान्तमें जो स्वरूप परमात्माका निश्चय कियाहै उसकी स्तुति लिखीहै बिचार देखो यो कुछ बिरोध की बात नहीं जब मूर्ख भेदबादी वेदान्त कि ऐसी ऐसी युक्तियों में दब जाते हैं उत्तर नहीं देसक्ते तब यो बकने लगते हैं अजी ज्ञान बड़ा कठिन है कलियुग में ज्ञान नहीं होता और जो ब्रह्मवादी ज्ञानी विशेष करके संन्यासी हैं उनकूं कहते हैं कि कलियुग में संन्यासवर्जित है उनसे बूझना चाहिये श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीशंकराचार्य महाराज शिवजी का अवतार पद्मपादपरमेश्वराचार्य्य हस्तामलक आनन्द गिरिजीसे आदि लेकर बहुत ग्रन्थोंमें प्रसिद्ध हैं और बहुतसे इससमय में प्रत्यक्ष हैं और श्रीशंकराचार्य महाराजकूं भी कोई दोहज़ार बर्षबीते हैं जबकलियुग था वा नहीं और जो कलियुगमें शुचि ज्ञान नहीं होता तो ब्यास जीने पुराणोंमें इतिहासोंमें भलेप्रकार सूत्रोंमें औरश्रीकृष्णचन्द्र महाराज ने गीताशास्त्र में ज्ञान क्यों कहा और प्रथम अध्याय में गीता भाष्यादि ग्रन्थों का नाम हम लिख आयेहैं वे ग्रन्थ उन्होंने क्यों बनाये और जो योशंका करे कि हरिका नामहीं ३ मेरा जीवन है और अन्यथा कलियुग में नहीं है ३ गति और जो केवल बोधके लिये प्रयत्न करते हैं वे केवल तुष कूटते हैं ऐसे २ वाक्यों की क्यागति है। उत्तर। ऐसे २ वाक्य कि कलियुग में ज्ञान नहीं होता ये वाक्य जो किसी जगे नाम माहात्म्य की प्रशंसा वा भक्तिकी प्रशंसा वा कर्मादि की प्रशंसा में ब्यासादिने जो कहेहैं क्योंकि ब्यासादि कवियों का यो नियम है जिस देवता वा भक्ति आदिकी प्रशंसा करते हैं वहां योंहीं कहते हैं कि जोहै योंहीं है तो वोकहना उनका मूर्खों के लियेहै और जो योनमाने तो ऊपर जो हमने प्रश्न कियेहैं कि उन्होंने ज्ञान क्यों कहा उसका उत्तरदो तात्पर्य प्रथमहीं हम

तीसरे अध्याय में लिख आये हैं कि मूर्ख वेदशास्त्र के एक २ देशकूं सुनकर वा अपने मतका हठ करके वृथा बाद करते हैं बुद्धिमान को वेद शास्त्रों का सिद्धान्त निश्चय करना यो सिद्धान्त है कोई महात्मा योकहते हैं कि हम आधे श्लोकमें वो बात कहेंगे जो कोटि ग्रन्थोंने कहीहै सोई आधे श्लोक में कहते हैं ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्याहै जो यो सच्चिदानन्द लक्षणवाला जीवहै सोई ब्रह्म है अपर कोई ब्रह्म नहीं योही ज्ञान मुक्ति का हेतुहै ॥ इतिश्रीआनन्दाऽमृतवर्षिण्यांषष्ठोऽध्यायः॥ ६ ॥

अथसप्तमोऽध्यायः॥

श्रीशंकराचार्य महाराजने हस्तामलकाचार्य्यसे प्रश्नकिया कि तुम कौनहो इसका उत्तर श्री हस्तामलकाचार्य कहते हैं मैं मनुष्य,देव,यक्ष,ब्राह्मण,क्षत्री,वैश्य,शूद्र,ब्रह्मचारी,गृहस्थी वान-प्रस्थ,संन्यासी इनमें कोई नहीं निजबोध स्वरूपहूं फिर उन्होंने दृष्टान्त देदेकर कृपाकरके जो औरोंकूंभी बोधहोजावे इसी अर्थकूं सिद्ध किया हम भी उसी अर्थकूं संक्षेप करके इस अध्याय में लिखेंगे औरभी दृष्टान्त युक्ति लिखेंगे जैसे मनुष्यादि का व्यव-हार में प्रवर्त्तहोना इसमें निमित्त सूर्य नारायणहैं ऐसे देह मन प्राण बुद्धिआदि की प्रवृत्ति चेष्टा में जो निमित्तहै और परमार्थ रूप करके तो कोई उपाधि द्रष्टा दृश्यादि जिसमें नहीं केवल आकाशवत्पूर्ण एक रसहै सो नित्य प्राप्त स्वरूप आत्माहै स्थूल सूक्ष्म कारण शरीरों पंचकोशों से पृथक् अवस्था का साक्षी सच्चिदानन्द रूप जो है सो आत्मा है। शंका। जैसे और पदार्थ आकाश पृथिवीआदि इन्द्रिय मन बुद्धिआदि करके निश्चयकिये जाते हैं ऐसे आत्मा तो नहीं जाना जाता। उत्तर। इन्द्रिय मन बुद्धि आदिकूं आत्मा प्रकाशताहै जैसे दीप घटादिकूं बुद्धिआदि

जड़ पदार्थों करके आत्मा का कैसे निश्चय होसक्ता है आत्मातो स्वयंप्रकाश है आत्मा कूं अपने जानने में इन्द्रिय मनबुद्धिआदि की इच्छा नहीं जैसे दीपक के जानने में और दीप की इच्छा नहीं चिदाभास के अर्थ जानने के लिये प्रथम दृष्टान्त लिखतेहैं महाकाश १ घटाकाश २ घटमेंजल ३ जलाकाश ४ ये चार दृष्टान्त हैं अब दृष्टान्त में समझो शुद्धचैतन्य१ कूटस्थ २ अन्तःकरण ३ जीव ४ इसीका नाम चिदाभास है अर्थात् चैतन्यवत् प्रतीत हो परन्तु चैतन्य के लक्षण करके रहित हो जीवका जो अधिष्ठान अर्थात् जीव जिसमें कल्पित है और कूटवत् निर्विकार ठहरारहे सो कूटस्थ जीवका लक्षण यों है अधिष्ठान जो चैतन्य और सूक्ष्म शरीर और चैतन्य की जो छाया सूक्ष्मशरीर में इन सब का संग जीव कहा जाताहै और महाकाश १ घटाकाश २ अभ्राकाश ३ जलाकाश ४ ये चार दृष्टान्त हैं अब दार्ष्टान्ति में समझो शुद्धचैतन्य १ कूटस्थ२ ईश्वर ३ जीव ४ और वोही चैतन्य ऐसे ६ प्रकार का है शुद्धचैतन्य १ साक्षी २ प्रमातृ ३ प्रमाण ४ प्रमेय५ फल ६ उपाधिरहित शुद्धचैतन्य१ अविद्योपहितसाक्षी २ अन्तष्करण विशिष्ट प्रमातृ ३ अन्तष्करण वृत्त्यवछिन्न प्रमाण ४ घटावछिन्न चैतन्य प्रमेय ५ अन्तःकरण वृत्त्यभिव्यक्त चैतन्य सो फल चैतन्य दृष्टान्त इसमें तालाब गूलकेदार का है यों बिषय भाषा में भले प्रकार नहीं लिखा जाता जो बिस्तार करके लिखें भी तो इसका समझना कठिन है और जो समझ सक्ताहै वो भाषा क्यों पढ़े सुन्दरशास्त्र पढ़े सुने प्रत्यक्ष प्रमाण में और परमात्मा बुद्धि आदि का किस प्रकार ते बिषय है और किस प्रकार बिषय नहीं इसबात के जानने में इस बिषय का जानना अवश्य चाहताहै इसलिये यों बिषय वेदान्त शास्त्रार्थ के जाननेवालों से श्रवण करना योग्यहै जो इस ग्रन्थ कूं पढ़ावे सुनावेंगे वे अवश्य इस बिषय कूं भी

जानते होंगे हमने जो प्रसंग चिदाभास के अर्थ जाननेकेलिये लिख दिया है जैसे मुखका आभासक मुखका जनानेवाला जो दर्पण में दीखता है वो मुखसे कुछ पृथक् बस्तु नहीं ऐसे बुद्धि में जो चिदाभास है वो चैतन्य से पृथक् कुछ बस्तु नहीं उसका जो अधिष्ठान कूटस्थ रूप सो नित्य प्राप्त आत्माहै जैसे दर्पण के अभाव में आभासकी हानि हुये सन्ते एक मुख प्रतीत होता है वहां कुछभी कल्पना आभास्य आभासक द्रष्टा दृश्य बिम्ब प्रति बिम्बकी नहीं होतीऐसे ज्ञानके नाश हुये संते कार्यउसका बुद्धि है बुद्धि का नाश हुये सन्ते जो निराभासक त्रिपुटीरहित बस्तुहै सो आत्मा है ध्याता,ध्यान,धेय,प्रमाता,प्रमाण, प्रमेय ज्ञाता,ज्ञान,ज्ञेय,इसकूं त्रिपुटी कहतेहैं मन इंद्रियआदिसेपृथक् मन इन्द्रिय आदिका आदि मन इंद्रिय आदि करके जो अगम्य सो आत्माहै सब जीवोंकी बुद्धि में जो एक चैतन्य अपने आप शुद्धरूप ऐसे भानहोताहै कि जैसे अनेक जलके घटों में एक सूर्य प्रतिबिम्ब करके भान होताहै सो आत्माहै*जैसेएक सूर्य अनेक नेत्रोंकूं क्रम करके नहीं प्रकाशता ऐसेआत्मा ज्ञानस्वरूप अनेककूं क्रम करके नहीं बोध करता। शंका। जो एक चैतन्य सब शरीरों में है तो यज्ञदत्तादि के दुःख सुख देवदत्त क्योंनहीं अनुभव करता। उत्तर। अविद्याकी उपाधिसे जिस शरीर में जिस जगे विशेष अध्यास है वहींके दुःखादि अनुभव होसक्ते हैं और जगेके नहीं होसक्ते जैसे जिसकूं योंही निश्चय है कि इस शरीरमें चैतन्य और है यज्ञदत्तादि के शरीरोंमें औरचैतन्य है तो उसकूंभी एक काल में शरीर फूटने का दुःख और पलँगपर सोने का सुख और भी अनेक दुःख सुख अनुभव नहीं हो सक्ते जिस कालमें जहां अन्तष्करण की वृत्ति होगी उसीजगेका दुःख सुख प्रतीत होगा और जगे का नहीं होगा जो दूसरे शरीर में अध्यास होगा तो संदेह यज्ञ दत्तादि के दुःख सुख प्रतीत होंगे

जैसे मित्र पुत्रादि में अध्यास होताहै तो उनके दुःख सुख में जोकहताहै किमें दुःखी सुखीहूं और यो बिचारनाचाहिये कि जो प्रथम शरीर में चैतन्य था वोही इस शरीरमें है फिर पूर्बजन्म के दुःख सुख क्यों नहीं प्रतीत होते तात्पर्य जब एक शरीर में यो व्यवस्था है जो अन्तष्करणकी वृत्ति नेत्रके साथ लगीहुई है तो रूपही का ज्ञान होताहै समीप बैठ कुछ कहाकरो किंचित् नहीं सुनता इसीप्रकार सब जगे कल्पना करलेनी हज़ारबस्तु घरमें खाने पहरने देखने की रक्खीहों जिस जगे अन्तष्करण की वृत्ति है वोही दुःख सुखकी हेतुहै जबकि एक शरीरके दुःख सुख एक समय होनेवाले उनका एक कालमें अनुभव नहीं हो-सक्ता फिर अनेक शरीरों का कैसे दुःखसुख अनुभव होसके। शंका। अष्टावधानी तो उत्तर देना चौसर खेलनी आदि ऐसे ऐसे ८ कामएकसमय कियाकरताहै और दूसरे जो एकबालिश्त चौड़ा लम्बा खजला है उसकूं दांतों से कुतर २ जो खाता है तो शब्द स्पर्श रूपरस गन्ध उसकूं एक कालमें प्रतीत होताहै और तीसरे कोई कहता है कि मैं चन्द्र तारोंकूं एककाल में दे-खता हूं इसका उत्तर दो। उत्तर। मूर्ख यो बात कहता है मैं एककालमें सबकूं अनुभव करताहूं उसकूं मनकी गतिकी खबर नहीं मन ऐसा चंचल है एकक्षणनहीं लगने पाता--प्रथमपदार्थ कूं अनुभव करके दूसरे पदार्थ में प्रबर्त्त होजाता है इस बातकूं सूक्ष्म दर्शी जानते हैं और सुनो यो प्रसिद्ध है कि बाणी आदि इन्द्रिय बिना अन्तष्करणबिशिष्टचैतन्यके युक्तहुये किसी क्रिया में प्रबर्त्तन नहीं होसक्ते देखिये पुरुष पाठ जप भी करता है और अनेक मनोराज्य भी करता है बिचारना चाहिये उसके मुखसे श्लोक मंत्रजो उच्चारण होताहै तो चैतन्यबिशिष्ट मनका बाणी के साथ संयोगहै वा नहीं जो कहो कि संयोग है तो मनो-राज्यकौन करताहै और जो कहो संयोग नहींतो बाणीजड़है

उसमें क्रिया कैसे होतीहै तात्पर्य व सन्देह प्रतीत होताहै मनकी गति बहुत चंचल है मनमनोराज्य भी किये जाता है और बाणी के साथ मिलकर उस बिषय कूं भी अनुभव किये जाता है मूर्ख योंहीं जानता है कि मेरामन पाठजपमें नहीं लगा जिनकूं अपने मनकी भी खबर नहीं उनसे ऐसी ऐसी शंका रहती हैं इसउत्तर में तीनों प्रश्न का उत्तर है ॥

श्री शंकराचार्य भगवान् कहतेहैं कि यो जो जगत दीखता है योक्याहै क्या इसका रूपहै यो कैसे हुआहै इसका क्या हेतुहै यों बुद्धिमान को कभी नहीं चिन्तवन करना फिर क्या चिन्तवन करना चाहिये यों माया भ्रांति इन्द्रजाल है यों चिन्तवन करना चाहिये जैसे किसीके पैर में कांटा लगजावे तो वो यो न बिचारे किमेरे यों कांटा कौनसे मुहूर्त में लगाहै कौन से पेड़का है यहां कैसे आया ऐसा २ चिन्तवन न करै जैसे बने उसके निकालने का उपाय करे ऐसेही संसारकी निवृत्तिका उपाय करे जैसे एक सूर्य का प्रतिबिम्ब अनेक जल के घटों में है जो घटकूं लेकर चले तो सूर्य नतो उसके साथ जाता है न कँपता है ऐसे आत्मा ज्ञान स्वरूप शरीर इन्द्रियादि की क्रियामें वो क्रियावाला नहीं जैसे ढक गईहै बादल से दृष्टि जिसकी वो यों मानता है कि सूर्य छिप गये ऐसे अबिद्या की उपाधि से यो पुरुष आपकूं वृथा बँधाहुआ मानता है और जैसे किसी बन्दर ने घट में हाथ डालकर दानों हाथ में अन्न भरकर मुठी बन्द करली पीछे वृथा अज्ञान से चीची किल किल करे है बिचारो उसकूंकिसने बन्धन कियाहै और सुनो कोई तोते के पकड़ने के लिये मैदान में तोचुगा डालदेता है और दो बांस खड़े करके बीच में उसके नलकी जैसी पंखे में होती लगा देताहै नीचे उस नलकी के किसी पात्रमें जलभर देता है तोता चुगे के लालच आताहै प्रथम नलकी पर आनकर बैठता है उस नलकी का नियम है उसके ऊपर जानवर बैठा

ओर वो फिरी ओर जानवर उलटा हुआ जो वो जानवर छोड़कर भाग जावे तो कुशल है नहीं तो यों हाल होताहै कि जब तोता उस नलकी पर आनकर बैठा और वो फिरी तोतेने जाना यों मेरा आश्रय था जो इसकूं छोड़दिया तो जाने कहां गिरूंगा उसकूं वो पकड़े रहा फिर उस तोते की नीचे कूं पीठ ऊपर कूं पैर होगये उस तोते ने जो जलकी तरफ कूं देखा तो अपना प्रतिबिम्ब जलमें प्रतीत हुआ उस तोते का अध्यासन प्रतिबिम्ब में लगगया फिर वो तोता यो जानता है कि मैं डूब रहा हूं जल में ऊपर का सबहाल भूलगया वृथा अज्ञान से चीची टींटींकरै है बिचारो उसकूं किसने बंधन किया है ऐसे यो कूटस्थ चैतन्य रूप अपने प्रतिबिम्ब चिदाभास से अध्यास करके बंधनवत् होरहाहै बास्तव बंधनहीं सबजगे जैसे आकाश अनस्यूतहै ऐसे आत्मा बाहर भीतर स्वच्छरूप अनस्यूतहै किसी बस्तुकूं स्पर्श नहीं करता और जैसे श्वेत मणि रंगकी संनिधि होने से लाल पीली प्रतीत होतीहै ऐसे आत्मा अविद्या की उपाधि से करता भोक्ता प्रतीत होता है समस्त स्थूल सूक्ष्म उपाधि कूं नेतिनेति इस वाक्य से निषेध करके जैसे दूसरे अध्याय में जीव ब्रह्मकी एकता महा वाक्य करके करीहै सदा वोही चिंतवन करना चाहिये प्रथम तत्वं पदों का अर्थ लिख भी आयेहैं फिरभी और प्रकार करके सुनो कोई मुक्तिकी इच्छावाला तीनतापजो संसार में हैं उन करके तपा हुआ और ॥

टी० । ज्वर क्रोधादि करके जो ताप सो आध्यात्मिक १
शत्रु चोर व्याघ्रादि करके जो ताप सो आविभौतिक २
शीतोष्ण पवनादि करके जो ताप सो आधिदैव ३ ॥

मू० । संसार से उद्विग्न हुआ है मन जिसका शम दमादि साधनों करके युक्त सद्गुरु से बूझताहै हे भगवन् जिस साधन करके अनायास पूर्वक संसार रूप बंधनसे मैंछूटजाऊं सो महा-

राज मुझकूं संक्षेप करके केवल कृपा करके कहो। उत्तर। हे साधो तुमने बहुत अच्छा बूझा सावधान मति होकर सुनो तत्त्वमसि महावाक्यादि से उत्पन्न हुआ जो जीव ब्रह्म का तादात्म्य बिषय ज्ञान सो मुक्ति का कारण है। प्रश्न। महाराज कौन जीव कौन ब्रह्म है किसप्रकार करके उनकी तादात्म्यताहै और महावाक्य किसप्रकार करके उसको प्रतिपादन करते हैं उत्तर। जीव कौन है तूहीं जीवहै और जो बूझताहै कि मैंकौन हूं तूहीं बेसन्देह ब्रह्म है। प्रश्न। हे भगवन् अबतक तो मैंने भलेप्रकार पदार्थभी नहीं जाना मैं ब्रह्महूं योजो महावाक्यार्थ इसकूं कैसे प्राप्त हूं। उत्तर। सत्य कहते हो वाक्यार्थके ज्ञान में प्रथम पदार्थ का ज्ञान हेतु है इसलिये प्रथम तत्त्वम् पद का अर्थ सुनो अन्तष्करण और उसकी वृत्तियों का जो साक्षीचैतन्य घन नित्य एक रस और देहादिमें जोअहंबुद्धि इसकूं त्यागकरके आत्मारूप करके जो चिन्तवन करनेमें आताहै सो आत्मात्वम् पदका अर्थ यो शरीर रूपादिवाला होने से आत्मा नहीं जैसे पञ्च महाभूतों के बिकार घटादिहैं ऐसेही प्रत्यक्ष बिकारवाला होने से देह भी है। प्रश्न। जो देह अनात्मा है तो हे भगवन् आत्माकूं करामलकवत् साक्षात् प्रतिपादन करो। उत्तर। जैसे घटका देखने वाला घटसे पृथक् होता ऐसे देहका देखने वाला देह कैसे होगा और जैसे मकान में बैठा हुआ कोई यो कहे मैं मकान हूं तो बिचारो कैसी मूर्खता की बात है ऐसे यो चैतन्य रूप असंग निरवयव है और कहै कि मैं देह हूं अर्थात् पुरुष स्त्री ब्राह्मणादि हूं बिचारो इससे परे और क्या अज्ञान होगा देह तो उपलक्षण है प्राण इन्द्रिय मन बुद्धि आदि दृश्य होने से सब अनात्मा है सबका जो द्रष्टा सो आत्मा है देहसे परे इन्द्रिय इन्द्रियों से परे मन मनसे परे बुद्धि बुद्धि से परे जोबुद्धि का साक्षी सो आत्मा आत्मा से किंचित् नहीं और सब संघात्

भी आत्मा नहीं होसक्ता क्योंकि द्रष्टा दृश्य विलक्षण होते हैं देह इन्द्रिय की जो चेष्टा क्रिया में सदा उपचय अपचय वाली हैं कभी किसीप्रकार का शरीर कभी किसीप्रकार की इन्द्रिय मनादि की चेष्टा देखने में आतीहै कभी किसीप्रकार की जिस की संनिधिमात्र से ये सब चेष्टा करते हैं एकरस जो इनका द्रष्टासो आत्मा है जड़ पदार्थ देहादि जिसकी संनिधि से चैतन्यवत् प्रतीत होते हैं जैसे चुम्बक की संनिधिसे लोहा सो आत्मा है मेरा मन इससमय कहीं गया अब मैंने स्थिर किया इस वृत्ति कूं जो जानताहै सो आत्मा है जाग्रत् स्वप्न सुषुप्तिकाहोना न होना इसकूं निर्विकार हुआ जो जानता है सो आत्मा है जैसे घटका आभासक दीप घटसे पृथक् है ऐसे देहादिका आभासक देही पृथक् है देह स्त्री पुत्र मकानादिके नष्ट होते २ जो आपकूं परमप्रेमका आस्पद प्रतीत होता है सोई आत्मा है जैसे सूर्य पाप पुण्य का साक्षी असंग सविकार है इसीप्रकार साक्षी चैतन्यरूप निराकार आत्मा है और ये ६ विकार देहकेहैं जायते अस्ति वर्द्धते विपरिणमते अपक्षीयते विनश्यति देहइन्द्रिय प्राण मन बुद्धि अज्ञान का लक्षीत्वम् पदका वाच्यार्थ है अब तत्पद का अर्थ लिखते हैं परिपूर्ण एकरस नित्यानन्द ज्ञानस्वरूप परमात्मा सर्वज्ञ परमेश्वर संपूर्ण शक्तिवाला जिसकूं वेद ऐसा प्रतिपादन करतेहैं सो परमात्मा ब्रह्महै जो प्रपंचका कारण अन्तर्यामी कर्मों के फलका देनेवाला जगत्की सृष्टि स्थिति लय जिसके सकाश से होते हैं सोई तत्पद का वाच्यार्थ है और एक शुद्ध चैतन्य तत्त्वम् पदों का लक्ष्यार्थ है तत्त्वम् पदों की एकता दूसरे अध्याय में जैसे लिख आयेहैं वो प्रकार यहां चिंतवनकर लेना तात्पर्य जो तत्पद का लक्ष्यार्थ है सोई त्वम् पदका लक्ष्यार्थहै सो तू है ऐसा कहो वा तू सो है ऐसा कहो इसप्रकार गुरूने शिष्यकूं बोधन किया और कहा कि मैं ब्रह्महूं योवाक्यार्थ

जबतक भलेप्रकार दृढ़ न हो तब तक शम दमादि साधनोंकरके युक्त हुआ श्रवण मनन निदिध्यासनका अभ्यास नित्य प्रतिदिन करता रहे श्रवण ऐसे करे सुना जाताहै जिससमय कोई ऐसा रागगाता है मृगके मुखमें जो तृण होता है सोबाहरका बाहर और भीतर का भीतर रहजाता है दृष्टान्त में आप समझ लेना दशउपनिषद वृहदारण्यादि भाष्यसहित शारीरकभाष्य गीता-भाष्य येतीन प्रस्थान वेदान्तके कहलातेहैं उनकूंही ब्रह्मविद्या कहतेहैं आदित्यपुराण पंचदशीआदि ग्रन्थोंका उन्हींमें अन्तर्भाव है ऐसेऐसे ग्रन्थोंका ब्रह्मनिष्ठोंसे श्रवणकरना जबतक संशय बिपर्यय भलेप्रकार न जावे तबतक बारम्बार आदिसे अन्ततक इनग्रन्थों का श्रवणकरना इसीकानाम श्रवणहै मनन ऐसेकरना जैसेपटवा रेशमकूं सुलझताहै ऐसेही जो श्रवण किया उस कूं एकान्तमें बैठकर चिन्तवनकरे पूर्वपक्ष साधन फलादि कूं पृथक् करे युक्ति से सिद्धांत बस्तु को पुष्ट करे इसी का नाम मनन है निदिध्यासन ऐसे करना जैसे कोई बाजार में बैठा हुआ अपना काम कर रहा था राजा की सवारी आगे कूं चलीगई कुछ न मालूम हुआ ऐसे जो मनन करके सिद्धान्त बस्तुका निश्चय किया है कि मैं देह प्राण इन्द्रिय मन बुद्धि अज्ञान का साक्षी कूटस्थ हूं इसका सदा चिन्तवन करना इसकूं तो सजातीय प्रवाह कहते हैं और जैसे प्रथम देहमें अध्यासनथा किमैं ब्राह्मणादि हूं इसका सदा चिंतवन न करना इसकूं विजातीय तिरस्कार कहते हैं इस प्रकार सजातीय प्रवाह और विजातीय तिरस्कार सदा करते रहना इसी कूं निदिध्यासन कहतेहैं श्रवण से अज्ञान का नाश होता है मनन करनेसे संशय का नाशहोता है निदिध्यासन करने से बिपर्ययका नाश होताहै फिर महावाक्यार्थ का ज्ञान भलेप्रकार दृढ़ होजाताहै सोई मुक्तिकोहेतुहै॥

इतिश्रीआनन्दाऽमृतवर्षिण्यांसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

अथाष्टमोऽध्यायः॥

नित्य यह विचार करता रहै कि यो शरीर, इन्द्रियादि अविद्या का कार्य है बुद्बुदवत् नाशवान् है मैं तो इन से विलक्षण एकरस हूं मैं देह नहीं इसहेतु से मेरे जन्मादिनहीं मैं इन्द्रिय नहीं इस हेतु से शब्दादि विषयों करके मेरा संग नहीं मैं मन नहीं इस हेतुसे दुःख सुखादि मेरे धर्म नहीं मैंप्राण नहीं इस हेतुसे भूख प्यास मेरेधर्म नहीं मैं निर्गुणतो निष्क्रिय नित्य निर्विकल्प निरंजन निराकार निर्विकार नित्य मुक्त निर्मल आकाशवत् सारे व्यापक बाहर भीतर बेसंग अचल नित्यशुद्ध नित्य बुद्ध अखण्डआनंद अद्वय अक्षरअजर अमर हूं श्रीशंकराचार्य भगवान् कहते हैं इसप्रकार जो अभ्यास निरन्तर करता रहे कि मैं इसप्रकार ब्रह्महूं तो यो अभ्यास अविद्या कार्य के सहित हरलेता है जैसे रोगकूं औषध अभ्यास करने के साधन लिखते हैं येसाधन गीताशास्त्र में लिखे हैं शुद्ध बुद्ध करके युक्त सत्त्वगुणी धीर्यसे उसी बुद्धि कूं निश्चय करके शब्दादि विषयों कूं त्याग करके रागद्वेष कूं दूर करके विविक्त देशमें बैठकर सदा इसप्रकार भोजनका अभ्यास करना योगशास्त्र में लिखा है दो भाग तो अन्न करके पूर्णकरे और एक जल करके और एक भाग पवन के प्रचार के लिये खाली रक्खे देह वाणी मनकूं निग्रह करे अर्थात् अपनी इच्छापूर्वक अपने २ विषय में प्रवर्त न हों ध्यान योग जो निदिध्यासन इसीकूं मुख्य समझकर नित्य प्रतिदिन इस ध्यान योग का अभ्यास करते रहना वैराग्य कूं आश्रय रखना अहंकार न करना कि मैं ऐसा बिरक्तहूं काम क्रोध दुराग्रह कूं त्याग करके प्रारब्ध के बलसे जो प्राप्त होजावे उसी में सन्तोष करना जो पदार्थ पराई इच्छासे आजावे उनमें ममता छोड़ कर सदा निदिध्यासन करना योगके बलसे खोटे मार्गमें

प्रवृत्त न होना अर्थात् किसीकूं शाप देना किसीपर अनुग्रह करना यो न करना परमेश्वर कहते हैं इसप्रकार अभ्यास करने वाला जो मेरा वास्तव तत्त्वस्वरूप है उसकूं प्राप्त होजाता है समस्त दृश्यकूं आत्मामें लयकरके जैसे प्रथम अपवाद लिख आये हैं एक आत्माकूं निर्मल आकाशवत् भावना करता रहै रूप वर्णादिकूं त्याग करके परमार्थ का जाननेवाला परिपूर्ण चिदानन्द रूपकरके स्थित रहै इसप्रकार अभ्यास करते करते वृत्तिज्ञान उदय होकर अन्तष्करण के सहित समस्त अज्ञान कूं भस्मकर देता है जैसे मथन करते करते बांसमें अग्नि उत्पन्न होकर समस्त बनकूं भस्मकर देती है जैसे सूर्यके निकलनेसे प्रथम चांदना होजाता है ऐसे प्रथम मूलाज्ञान का नाश होता है फिर थोड़े दिनोंके पीछे सब कार्य उसके स्थूल देहसे लगाकर अविद्या पर्यन्त नष्ट होजाते हैं आत्मा तो सदा प्राप्त है अविद्या करके अप्राप्तवत् प्रतीत होता है जैसे अपने गलेकी माल भूल जावे फिर किसीके बतलाने से प्राप्तवत् प्रतीत होती है जैसे स्थाणु में पुरुष सुक्ति में रजत रज्जु में सर्प की भ्रान्ति ऐसे २ बहुत दृष्टान्तहैं इसीप्रकार ब्रह्म के विषयजीवता है जैसे दिक्का भ्रम सूर्य के उदय होनेसे दूरहोता है ऐसे यो वर्ण आश्रमादि की भ्रान्ति अविद्या के नष्ट होने से आत्मा के आविर्भाव होनेसे दूर होतीहै जैसे कारण से कार्य भिन्ननहीं ऐसे जगत ब्रह्मसे भिन्न नहीं कोई कीट भ्रमर का ध्यान करते करते भ्रमर होजाता है ऐसे जो जीव सच्चिदानन्द रूप ब्रह्म सच्चिदानन्द ब्रह्मका ध्यान करते करते ब्रह्म होजावे तो इसमें क्या कहना है जैसे किसी घटमें १० छिद्रहों भीतर उसके दीप होवे उसी दीपकी प्रभा दश तरफ कूं निकल कर परिच्छिन्न प्रतीत होतीहै ऐसे आत्मा दीपवत् शरीर घटवत् इन्द्रिय छिद्रवत् हैं जैसे उसदीप कूं छिद्र द्वारा पवन लग २ प्रभा उसकी

मन्द रहतीहैं ऐसे इन्द्रिय द्वारा विषयबासना रूपी पवनलग लग आत्मा का सच्चिदानन्द रूप मन्दसा प्रतीतहोता है इंद्रियों के रोकनेसे आत्मा सच्चिदानन्द साक्षात् प्रतीत होता है यावत् प्रारब्ध कर्म शेषहै तावत् विद्वान् उपाधि में स्थित हुआ प्रतीत होताहै परन्तु आकाशवत् लिपायमान नहीं होता ज्ञानवान पण्डित भी हैं परंतुमूर्खवत् जानकर रहताहै किसी जगे बायुवत् आसक्त नहीं होता जब अविद्या का नाश होजाता है तब निर्विशेष ब्रह्म में लय होजाता है इस लाभसे परे कोई और लाभ ब्रह्मलोकादिका नहीं इस सुखसे परे औरकोई सुख चक्रवर्त्ति राजा इन्द्र ब्रह्मादि का नहीं इस ज्ञानसे परे कोईओर ज्ञान भूत भविष्यत् आदिका नहीं इस प्रत्यय कूं रूप आत्मा कूं देखकर मूर्त्तिमान् परमेश्वर के देखने की इच्छा नहीं रहता यो रूप होकर फिर मनुष्य देवतादि रूप नहीं होता यो जो आनंद रूपहै इस आनंदके एक लेशमें ब्रह्माजी से लेकरचींटी पर्यन्त आनन्दीहैं जिसकी आभा करके सूर्य चन्द्रादि भासते हैं सूर्य चन्द्रादि की आभा करके जो नहीं प्रतीत होता सोई प्रत्यगात्मा ब्रह्महै यो रूप ज्ञानचक्षु करके दीखता है कर्मचक्षु करके नहीं दीखता जैसेअंधेकूं सूर्य उआ हुआ नहीं प्रतीत होता तात्पर्य यो रूप अधिकारीकूं प्रतीत होता है जैसे स्त्रीसंग का आनंद तरुण अवस्था में आठ दश वर्षकी अवस्था में लड़का लड़की जो उस आनंदकूं अनुभव कियाचाहे तो क्या होसक्ता है जिनके मैले अन्तष्करण हैं उनकूं इस रूपका साक्षात् नहीं हो सक्ता अन्तष्करण मैले होने से देवता गुरु वेदान्त शास्त्र में श्रद्धा का अभाव होता है श्रद्धाके बिना गुरुकृपानहीं करते गुरू की कृपा के बिना कभी किसीकाल में ज्ञानहुआहै न होगा श्री शंकराचार्य भगवान् कहते हैं कि हजारों श्रुति अद्वैत ब्रह्म कूं प्रतिपालन करती हैं और यो आत्मा सच्चिदानन्द रूप भले

प्रकार निरन्तर प्रकाश वालीभीहै परन्तु बिना गुरु कीकृपा मैले अन्तष्करण वाले साक्षात् करने कूं समर्थ नहीं इसलिये चाहिये प्रथम अन्तष्करण की शुद्धिका उपाय करे क्योंकि श्रीभगवान् ने भी प्रथम अर्जुनकूं ज्ञान उपदेश किया फिर कहा हे अर्जुन हमने तुमकूं ज्ञानउपदेश किया जो तुमकूं यो ज्ञान अपरोक्ष न हुआहो तो अन्तष्करणकी शुद्धिके लिये निष्काम कर्म योग सुनो जैसे सोना मैला होताहै उसकूं अग्निमें तायकर शुद्ध करलेतेहैं ऐसे अन्तष्करणकूं निष्काम कर्म योग करके शुद्ध करना चाहिये ज्ञान की इच्छावालेकूं प्रथम निष्काम कर्म मुख्य है शुद्धान्तष्करण वालेकूं समाधिसाधनमुख्यहै । प्रश्न । शुद्धांतष्करणवालेकीकया परीक्षाहै । उत्तर । जब जाने यहांके जो देखे सुने स्त्रीआदि पदार्थ हैं स्वर्गादिके अमृतादि पदार्थ जो सुनेहैं सबकूं चित्त न चाहै दुख-दाई जाने मुक्तिकी इच्छाहोतब निश्चय करे कि अन्तष्करणशुद्ध होगया फिर बिवेक बैराग्यादि साधनों करके युक्त होकर यो बिचार करे में कौनहूं यो जगत् कैसे हुआहै इसका कर्ता कौनहै उपादान कयाहै इसीका नाम बिचारहै यो देहपंचभूतोंका बिकार में नहीं इन्द्रिय मन बुद्धि आदिमें नहीं उनसे कोई बिलक्षणहूं और जो किसीने प्रथम न्यायशास्त्र पूर्व मीमांसा वा पुराणादि पढ़े सुनेहों वेदांत न शास्त्र सुनाहो इस हेतुसे उसके बहुत संशय बिपर्य्यय हो तो शारीरक भाष्य पढ़े सुने वहां भले प्रकार युक्ति पूर्वक निश्चय हो सक्ताहै भारत भागवतादिमें तो जिसजगह जो ज्ञान का प्रसंगहै तबतो योहीं प्रतीत होताहै कि ज्ञान मुख्यहै और जिसजगह कर्म उपासनादिका प्रसंगहै वहां कर्मआदिमुख्य प्रतीत होतेहैं बैष्णवादि अपने २ मतकूं मुख्य बतातेहैं औरोंकी असूयाकरतेहैं भागवतादिमें स्पष्ट योनहीं प्रतीतहोता कि समस्त वेद भारत पुराणादिका कहां समन्वय है अर्थात्मुख्य प्रयोजन किसमेंहै शारीरक भाष्यमें भले प्रकार श्रुति स्मृति युक्ति दृष्टांत

देदेकर और अनेक दोष भेदवादि आदियोंके मतोंमेंदिखाकरऔर जिसलिये कर्म उपासनादिका वेदोंमें प्रसंगहै उतनेअंशकूं अंगीकार करके यो सिद्ध कियाहै कि समस्त वेद शास्त्र पुराणादि का ब्रह्ममें समन्वयहै सब श्रुति स्मृति प्रवृत्ति निवृत्ति मार्गकी कोई साक्षात् कोई परम्परा करके ब्रह्मकूं बोधन करतीहैं और जोयो विरुद्ध प्रतीत होताहै कि कोई श्रुति कहतीहै ब्रह्म मनका बिषय नहीं कोई कहतीहै ब्रह्म सूक्ष्म मन बुद्धिकरके जानाजाताहै कहीं ऐसा सुना जाताहै जब वैराग्य होवै उसी समय संन्यास करे कहीं ऐसा सुना जाताहै माता पिता स्त्री आदिके त्यागमें दोषहै ऐसे२ विरुद्धवाक्य अनेकहैं विचारनेसे विरुद्धबास्तवनहींक्योंकि जैसा अधिकारी देखा वैसाही उपदेशकिया तात्पर्य्य सबकाअविरुद्ध भले प्रकार शारीरक भाष्यमें निश्चय होसक्ताहै और मुक्ति के साधन ऐसे ऐसे सुने जातेहैं कि अन्त मुक्तिका साधन है और तीर्थ श्री गङ्गाजी से लेकर यावत् हैं उनमें स्नान करना बद्रीनारायण जीसे आदि लेकर दर्शन पाषाणादि मूर्तियोंका पूजन करना पाठ जप करना चतुर्भुजी आदिमूर्तियोंका ध्यान करनासगुण निर्गुणब्रह्मकी उपासनासे लगाकर वेदान्त शास्त्रका श्रवण मनन निदिध्यासन तक योहीं सुना जाताहै ये सब मुक्तिके साधनहैं अर्थात् एक एकादशी के ब्रत करनेसे मुक्तहो जाता है विष्णु चरणोदक पान करने से श्री गङ्गाजी में स्नान करने से मुक्त हो जाताहै तात्पर्य्य सबके माहात्म्य में योही प्रतीत होताहै कि ये सब मुक्ति के साधन हैं अब यो बिचारना चाहिये मुख्य साधन कौनहै जिससे निश्चय मुक्तिहोजावे और जो किसीके यो बिश्वास है कि एकादशी आदि ब्रत करनेसे बद्रीनारायणादिके दर्शन करनेसे श्री गङ्गाजी में स्नान करने से निश्चय मुक्त होजाताहै फिर तृप्ति क्योंनहींहोती तात्पर्य्य मुख्यसाधन मुक्तिकावेदान्त शास्त्र का श्रवण मनन निदिध्यासनहै और सब परम्परा करके

गौण हैं इस बात कूं भी प्रमाणपूर्वक शारीरक भाष्यमें सिद्ध किया है और जोकि पूर्व मीमांसावाले स्वर्गादि की प्राप्ति कूं मुक्ति कहतेहैं और कोई एक देशी उनके कहते हैं कि नित्य सुख का प्रकट रहना मुक्ति है सांख्यशास्त्र वाले कहते हैं देह बुद्धि आदि में अहङ्कारकी निवृत्ति हुये सन्ते औदासीन्य रहना मुक्ति है पुराणवाले सालोक्य सामीप्य सारूप्य सायुज्यकूं मुक्तिकहतेहैं चारु वाकय कहते हैं किसीके आधीन न होना मुक्तिहै न्याय शास्त्र वाले कहते हैं २१ दुःखों का अत्यन्त नाश होजानामुक्तिहै २१ दुःख न्याय शास्त्रमें प्रसिद्ध है अत्यन्त नाश अत्यन्ता भाव कूं कहते हैं अभाव चार प्रकार का है प्राग भाव जो घटसे प्रथम घटका अभाव प्रध्वंसाभाव जो घटके नाश होजाने में घटका अभाव अन्योन्या भाव जैसे घटमें घटका अभाव अत्यन्ता भाव जैसे शशे के सींग का अभाव और अनेक ब्रह्मलोक गौलोकादि की प्राप्ति कूं मुक्ति कहते हैं गरुड़वाले जो कहते हैं सो तो लोकमें बहुत प्रसिद्ध है और भी अनेकमतहैं अब विचारना चाहिये मुक्तिका क्या अर्थहै इसका भी निश्चय शारीरक भाष्य में कियाहै कि अविद्योपहित जीव नामा शुद्ध चैतन्य का प्रतिबिम्ब मिथ्याभ्रांतिसे आपकूं जीव मानताहै अविद्याकी उपाधिसे समस्त संसार मुक्ति पर्य्यन्त कल्प रक्खाहै ब्रह्मज्ञानसे अविद्या का नाश हुये सन्ते जीव रूप भ्रांति का दूर होना यो मुक्तिहै सर्व अनर्थोंकी निवृत्ति परमानन्दकी प्राप्ति इसी मुक्तिका लक्षण है जैसे किसी घट गत जल में जो प्रतिबिम्ब सो जलके दूर होनेसे नाश होजाता है फिर यो नहीं कहाजाता कि प्रतिबिम्ब कहांगया और प्रतिबिम्ब के नाशहोने और न होने में सूर्य कुछ और प्रकार के नहीं होजाते दृष्टांत में समझो कि शुद्ध चैतन्य जैसा प्रथमथा वैसेही पीछे रहा जैसे स्वप्न के खुलते हुये स्वप्नमें जो पदार्थ कल्प रक्खे ये सब उसी समय नाश होजाते हैं ऐसे

पीछे बिदेह मुक्ति के समस्त संसार नाश होजाताहै कोई ऐसा न बिचार करे मैं तो मुक्त होजाऊंगा मेरे शत्रु मित्रादि औरजगत् बना रहेगा उनके पीछे के लिये यत्न करना मूर्खता है स्वप्न के दृष्टांतकूं भले प्रकार बिचारना चाहिये वेदांत शास्त्रवालों का जो कहना है वो तो अनुभवमें भी आताहै श्रुति स्मृति आदिप्रमाण करके सिद्ध होसक्ताहै और किसी शास्त्र पुराणादिका मत अनुभव में नहींआता वेदों से बिरुद्ध स्पष्ट प्रतीत होता है बिचारो जैसे जीवका देहपातहुआ वा यमपुरीकूं वा स्वर्गकूं वा पितृलोक बैकुंठादिकूं गया वा उसका जन्म उसीसमय इसलोकमें होगया वा गरुड़ वाले जो कहते हैं या उसी की ब्यवस्था हुई और जो बात कैसे अनुभवमें आवे कि सारी अवस्थामें तो मूर्खताके काम करे अन्तकाल में काश्यादि में मरनेसे नियम करके मुक्तहोजाता है जो ऐसे वाक्योंमें हठ करतेहैं तो मुक्तिके लिये ज्ञानादिमें क्यों माथा मारते हैं कहां तक लिखें हज़ारों ऐसी ब्यवस्था हैं सब मतवाले अपने २ मतकूं युक्तिदे देकर सिद्ध करतेहैं परन्तु समस्त ब्यवस्था कोई भले प्रकार नहीं कहते क्योंकि कोई स्वर्ग कूं नित्य कोई अनित्य कहते हैं कोई। काश्यांमरणान्मुक्तिः। इस श्रुतिका अर्थ औरही प्रकार कहते हैं और यों भी भले प्रकार नहीं प्रतीत होता कि स्वर्ग बैकुंठ कैलाश ब्रह्मलोक गौ लोकादि का कैसे भेदहै जैसे कि सातलोक भूर्भुवादि हैं उनमेंहीं उनका अन्तर्भाव है वा कुछ और प्रकार है अथवा जिसकूं ब्रह्मलोक कहते हैं उसीकूं बैकुण्ठ पितृलोकादि कहते हैं जैसे यो स्थिति की ब्यवस्था है इससे सिवाय सृष्टि की ब्यवस्थाहै क्योंकि जब प्रत्यक्ष की ब्यवस्था नहीं बैठ सक्ती परोक्ष की कौन बैठा सके यद्यपि यो ब्यवस्था न कहीं लिखीहो परन्तु मेरे श्रवण करनेमें नहीं आई जो किसीने सुनीहो प्रमाणपूर्व्वक अनुभवमें आवे तो हमकूंभी योहीं इष्टहै कि जैसे बने संशय दूरकरदेना चाहिये

यथामति मैं कहताहूं किसी पक्षमें मेरी हठनहीं यो जो ब्यवस्था तो मुझकूं शास्त्रमें प्रतीत होतीहै और लोकमें यमनादिवहिश्तादि कहतेहैं और इसबातमें तो किंचित्‌भी संदेह नहीं कि परमेश्वर सबकाएकहै और योभी निश्चय होताहै यमनादि भी नरकस्वर्गादिके अधिकारीहैं योनियम नहीं कि सबनरकहीकूंजावें क्योंकि श्रीभगवान् कहतेहैं सत्वगुणी ऊपरके लोकोंकूं प्राप्तहोवेगा सम दम संतोष दया कोमलता क्षमा दानादि सत्वगुण की वृत्तिहैं उनमें दीखतीहै इस हेतुसे निश्चय होताहै सत्वगुणकी तारतम्यतासे स्वर्गादिके अधिकारीहैं तात्पर्य्य इन सबके मतोंसे मेरी जानमें अविरोध ब्यवस्था नहीं बैठसक्ती परंतु वेदान्तशास्त्र के मतसे बैठसक्तीहै सो सुनो वेदान्त शास्त्रवाले ऐसा कहतेहैं कियो जगत् अज्ञान करके कल्प रक्खाहै स्वप्नवत् मिथ्याहै जैसे स्वप्न में एकस्त्रीके साथ एकसमय १० पुरुष संगकरें दशोंका सच्चाहै बिचारनेसे झूंठाहै तदुक्तम् ॥ चौपाई ॥ देखिय सुनिय गुणियमन माहीं। मोह मूल परमारथ नाहीं ॥ अर्थात् जगत्‌का कारण मूल अज्ञानहीहै परमार्थमें नहीं जैसे एकरज्जु पड़ीहै कोईउसकूं सर्प कोई मूत्रधारा कोई दण्ड कहतेहैं सबकाकहना भ्रान्तिकाल में सच्चा परमार्थ में झूंठाहै ऐसे भ्रान्तिकाल में एक ब्रह्ममें कल्पित स्वर्ग बैकुण्ठादि सब सच्चे परमार्थमें झूठेहैं इस बातकी सिद्धमें बहुत श्रुति स्मृति युक्ति दृष्टान्त इतिहासादि प्रमाण हैं वाशिष्ठादि ग्रन्थोंमें अनेक इतिहास हैं वशिष्ठजी ने श्रीरामचन्द्र जीकूं अनेक इतिहास सुनाकर इसी बातकूं सिद्धकिया है कईपुरुषोंने तप करके यो बरमांगा कि हमसब इसी कालमें ब्रह्मा होजावें वे सब ब्रह्माहोगये और ये ब्रह्माजीभी बनेरहे औरउनके ब्रह्माण्ड सबके पृथक् २ हुये और एकऋषिने तपकरके परमेश्वर से बरमांगा हे परमेश्वर आपकी मायादेखूं परमेश्वरने कहा जो दृश्य पदार्थहैं सब माया है ऋषिकूं यों निश्चय रहा कि माया

शब्दकरके कोईऔर पदार्थहै फिर परमेश्वर से प्रार्थना करी कि महाराज नहीं घटनेके योग्य यो पदार्थ उसके घटानेमें जोवस्तु वो माया देखा चाहता हूं महाराजने वरदेदिया कि देखोगे एक दिन वे ऋषिहृषीकेश स्थानमें गंगाजीमें स्नान करतेथे गंगाजीके तीर आसन पूजादि रखदिये ऋषिने जलमें जो चुबकी मारी सो वे ऋषि अपना ऋषिपना तो भूलगये किसी धीवरकी लड़की होगये काल पाकर उसलड़कीका विवाह होगया ४० वर्षकी अवस्थामें कईलड़के व लड़की उसके उत्पन्नहुये और अपनेपति के संगमें जो आनन्द और संग करके दुःख और संसारके अनेक ताप और बालकों के खिलाने देखनेमें जो आनन्द और मल मूत्र धोनेमें जो दुःख सबकूं वे ऋषि स्त्री होकर अनुभव करते भये एकदिन वो स्त्री उसी जगह जहां ऋषिने चुबकी मारीथी जल भरने के लिये गई घट कूं गंगाजी के तीरे रख-कर गंगाजी में स्नान करने लगी जब नीचे कूं चुबकी मारी जबतो वो स्त्री थी जब ऊपरको मुख उघाड़ा तब अपने शरीरकूं देखे तो ऋषिका शरीर होगया और गंगाजीके तीरे घटभीरक्खा दीखता है आसन पूजाभी रक्खी हुई दीखती है यो भी स्मरण होताहै मैं अमुक ऋषि हूं नित्ययहां स्नान करने के लिये आता हूं और योभी स्मरण होताहै मैं अमुक पुरुषकी स्त्रीहूं यहां जल भरने के लिये आई थी पहले घरकाभी व्यवहार स्मरण होताहै पिछले घरका भी व्यवहार स्मरण होताहै दोनों घरोंमें प्रीतिहै स्पष्ट यो निश्चयनहीं होसक्ता है कि मैं ऋषि वा स्त्रीहूं उसकाल में उस स्त्री का पति अपने लड़के कूं गोद लियेहुये उसी जगह आया ऋषिने देखा कि निश्चय योही मेरा पतिहै फिर भलेप्रकार निश्चय होगया कि मैं गंगाजीमें स्नान करने से ऋषि होगया उस पुरुष ने ऋषि से बूझा महाराज मेरी स्त्री यहां जल भरने आईथी घट उसका यो रक्खाहै वो कहां गई आपने भी उसकूं

देखीहै जो उसका वाक्य सुनकर और बालक लड़केकूं देखकर मोह होगया ऋषि रोने लगा उस पुरुष ने प्रार्थना करके बूझा महाराज वो स्त्री गंगाजीमें डूबगई वा किसी सिंहादिने खालिया और तुम क्यों रोतेहो ऋषि कहते हैं वोस्त्री तो मैं हूं गंगाजी में स्नान करने से ऋषि होगया इसबातकी सिद्धि के लिये समस्त व्यवस्था पिछले घरकी और लड़के लड़कियोंके नामादि कहदिये उस पुरुष कूं निश्चय होगया कि बेसंदेह यो मेरी स्त्री है ऋषि उस पुरुषसे कहतेहैं इस लड़के कूं भले प्रकार पालना योकरना वो करना उसने कहा कि तुम घरको चलो जो हुआ सो हुआ बालकों कूं खिलाते रहना और घरके काम करते रहना ऋषिजी उसके साथ हुये उसी समय वो परमेश्वर की माया दूर होगई यो व्यवस्था कोई एक पलमें बीती जितनी देर जल में चुबकी मारी जब ऋषिजीने ऊपरकूं शिर उभारा देखतेहैं वोही महीना वोही महूर्त्त न वो पुरुष न वो घट हैं ऋषिजी कूं निश्चय हुआ यो परमेश्वर की माया देखी स्कन्दपुराण में केदारखण्ड में यो कथा भलेप्रकार लिखरही है और वाशिष्ठादि ग्रन्थों में ऐसी बहुत कथा हैं और बहुत प्राणियों कूं यो बात प्रत्यक्ष है कि स्वप्न तो घड़ी वा दोघड़ी रहा और राज्यादि १०० बर्ष किये भले प्रकार बिचारो मायामें क्या नहीं बनसक्ता और यो जाग्रत् निश्चय स्वप्न की बराबर है क्योंकि जाग्रत् के पदार्थ दुःख सुख के हेतुहैं और अनित्य हैं ऐसेही स्वप्न के पदार्थ हैं और जैसे जाग्रत् में स्वप्न का निश्चयकर करते हैं ऐसे स्वप्न में भी स्वप्नका निश्चय किया करते हैं तात्पर्य्य यो जाग्रतमें जो प्रपंच दीखताहै समस्त स्वप्नकी बराबर है मायाहै इससे सिवाय और क्या माया होगी कि गर्भमें ठहरकर बीर्य्य चेष्ठा करने लगताहै और बहनेवाला जो पदार्थ बीर्य्य है उसका कार्य कैसा कठिन होजाताहै फिर उसी बीर्य में देखो कैसे हाथ पैरादि बनजाते हैं

फिर वोही ब्राह्मण साधु चोर जार कहाजाता है किसी कालमें तो वो लाड़ करने के योग्य किसी काल में भोग करने के योग्य किसी कालमें पूजन करने के योग्य होताहै किसी कालमें उसकूं देखकर प्राणी ग्लानि मानतेहैं किसीकालमें उसकेपुत्रादि चाहते हैं कि यो मरजावे तो सुन्दरहै किसी कालमें उस शरीरके स्पर्श करनेसे पातकलगताहै मकान वस्त्रादि अपवित्र होजातेहैं विचारो एक पदार्थमें कितनी कितनी अवस्था बीतती हैंजो एकरसपदार्थ नहींसबकूं एकप्रकारका न दीखे सोईमायाहै चित्ततोबहुतचाहता कि ऐसी २ कथा लिखकर इस बातकूं करामलकवत् सिद्ध करदें परन्तु ग्रंथका बिस्तार होताहै बुद्धिमान एक दृष्टान्तमें विचारले अब विचारो कि वेदांत शास्त्रका मत कैसा सुन्दरहै परमेश्वरकूंतो परिपूर्ण नित्य मुक्त नित्यानंदादि रूप सिद्धि करना भक्ति ऐसी करनी अपना आपा समस्त परमेश्वरमें झोक देना अपने अंशके नरखनेसे परमेश्वरकी पूर्णतासिद्ध होतीहै और सबके मतकूं अंगी-कार करना सच्चा बताना यद्यपि स्वप्न के पदार्थ झूठे हैं परन्तु उस समयमें तो सच्चेहैं और सब मतवाले अपनेही मतकूं हठकर के सिद्ध करतेहैं औरोंकी असूया करतेहैं पूर्व मिमांसा वाले पर-मेश्वरकूं नहीं मानते जो भेद उपासना वाले परमेश्वरकूं मानतेभी हैं तो परिच्छिन्न मानतेहैं जब जीव ब्रह्मका भेद कहा स्पष्टप्रतीत होताहै परमेश्वर परिच्छिन्नहै और जो वे ऐसा कहें कि परमेश्वर की मायामें क्या नहीं बन सक्ता तो परमेश्वर उनकूं आनन्दरक्खें क्योंकि योही हमारा सिद्धान्तहै जब भेदवादियोंका अपने मतमें ठिकाना नहींपातातबमायाकूं अंगीकार करतेहैं मायाकूं अंगीकार किया और वेदांत शास्त्र में प्रवेश हुवा क्योंकि वेदांत से सिवाय और कोई प्रमाण नहीं वेदान्तकूं त्याग करके वृथा और अनात्म शास्त्रोंमें माथा मारतेहैं १८ विद्याहैं मुक्तिके लिये मुख्यवेदान्त शास्त्र है १४ विद्यातो येहैं ऋग्,यजुर, साम,अथर्वण ये चारवेद

और ६ इनके अंगशिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त और मीमांसा शास्त्र, तर्कशास्त्र, पुराण, धर्मशास्त्र ये १४ विद्या हैं वेदान्त शास्त्र का मीमांसा में अन्तर्भाव है वैशेषिक शास्त्रका तर्कशास्त्र में और शांख्य पातांजल पशुपत वैष्णव रामायण भारतादि का धर्म शास्त्रमें अन्तर्भावहै पुराण १८ हैं ब्राह्म पद्म स्कन्द मार्कण्डेय शैव वैष्णव गणेश सौर भगवत् भविष्यत् ब्रह्म वैवर्त लिंग बामन बाराह कूर्म मत्स्य गरुड़ ब्रह्माण्ड और उप पुराण बाशिष्ठ लिंग नारसिंह नन्दीय नारदीय बामनीय हंस तत्वसार दौरवास्य शिवधर्म कापिल बामन वरुण रेणुक बायबीय कालीय महेश्वर पाराशर मारीच भार्गवादि भेद से बहुत हैं मनु याज्ञवल्क्य विष्णु यम आंगिरिस बशिष्ठ दक्ष संवर्त शाता तप पाराशर गौतम शंख लखित हरित आप स्तंबी संस कात्यायन बात्स्यायन बृहस्पति देवल वारद पैठीनसी इनके और औरों के भी किये हुये बहुत धर्मशास्त्र हैं कोई १८ विद्या कहते हैं आयुर्वेद धनुर्वेद गांधर्व वेद अर्थशास्त्र ये चार मिलकर १८ होजाती हैं कामशास्त्र का आयुर्वेद में अन्तर्भाव है नीतिशास्त्र शिल्पशास्त्र अश्वशास्त्र गजशास्त्र रूपकारशास्त्र और ६४ कलाओं का अर्थशास्त्र में अन्तर्भाव है इस प्रकार १८ विद्या हैं वेदांत शास्त्र का यो सिद्धांत है कि यो संसार स्वप्नवत्है निस्प्रपंच ब्रह्म में भ्रान्ति करके नाना प्रकारकी कल्पना कर रक्खी है जैसे कोई बागड़ भूमिमें दूरसे रेतीकूं देखकर कहै कि यो नदी है कोई कहता है इसमें गोड़े जल है कोई कमर जल कोई अगम्य जल कहता है तात्पर्य सबकी कल्पना झूठी है जो जगत् सच्चा होता तो बड़े बड़े बुद्धिमान मीमांसा सांख्य पातांजलि न्याय शास्त्रादिवालों का सबका एक मत होता सबका मत प्रथक् २ होने से स्पष्ट प्रतीत होताहै कि निष्प्रपंच ब्रह्ममें भ्रान्तिसे जगत् कल्पितहै इस बात की सिद्धि

में बहुत श्रुति स्मृत्ति आदि प्रमाण हैं और अनुभव में भी आवेहैं जैसी जैसी किसी की बुद्धिहै वैसाही वैसा जगतकूं कहते हैं और ईश्वर कू भी यथा मति अंतर्यामी से लगाकर कुलदेवता माता शीतला पीपल वृक्षादि जड़ पदार्थ तक कहते हैं सो कुछ थोड़ा थोड़ा मत उनका भी प्रसंग से सुनो पूर्व मीमांसाशास्त्र वाले तो कहते हैं कर्म करने से मुक्तिहै स्वर्गादि प्राप्ति कूं मुक्तिकहते हैं कर्मफल दाता है और कोई ईश्वर नहीं स्वर्गादि नित्य है उनकी उत्पत्ति प्रलय नहीं कोई एक देशी उनके ईश्वरकूं भी मानते हैं सांख्यशास्त्र वाले यह कहतेहैं कि जैसे दूधका दधिपरिणाम होजाताहै ऐसे प्रकृति जगत् रूप करके परिणाम होगईहै और पुरुष जलगत पद्म पत्रवत् असंगहै तात्पर्य परिणामबाद सांख्यशास्त्र वालों का है आरंभ बाद या शास्त्र वालोंका है न्यायशास्त्र वाले यो कहते हैं कि यो जगत् प्रलय के समय ईश्वर की इच्छा से परिणाम रूप होजाता है अर्थात् पृथ्वी जल तेज बायुके परिमाणु होजाते हैं और सृष्टिके समय ईश्वर की इच्छा से परिमाणु मिलकर द्वाणुक त्र्यणुक होकर फिर ऐसेही पृथ्वी आदि होजाते हैं और कहते हैं इस जगत् में सब सात पदार्थ हैं पृथ्वी जल तेज बायुआकाश काल दिक् आत्मा मन इन ९ पदार्थों कू तो एकद्रब्य बोलतेहैं और रूप रसगन्ध स्पर्श संख्या परिमाणु पृथक् संयोग बिभाग परत्व अपरत्वगुरुत्व द्रवत्व स्नेह शब्द बुद्धि सुख दुःख इच्छा द्वेष प्रयत्न धर्म अधर्म सँस्कार इन २४ पदार्थों कूं एक गुण बोलते हैं ये गुण द्रब्यों में रहते हैं इसीप्रकार कर्म सामान्य विशेष सम वाय अभाव ये पांच पदार्थ हैं और यावत् जगत् में पदार्थ हैं उनका इन्हीं सात पदार्थों में अन्तर्भाव है जीव ईश्वर का भेद कहतेहैं जीव ईश्वर दोनों ब्यापक हैं पृथिवी आदि चार द्रब्य कूं परमाणु रूप करके नित्य कहते हैं आकाशादि पांचद्रब्य कूं सदा

नित्य कहते हैं व्याकरण वाले कहते हैं शब्द ब्रह्म है सो नित्य है तात्पर्य वैयाकरण स्फोट वादी हैं पुराणवालोंका मत प्रसिद्ध है कोई बिष्णु कोई शिव शक्ति गणेश सूर्यकूं ईश्वर कहते हैं अपने अपने मतके पृथक् पृथक् शास्त्र सात्वत तंत्र नारद पंचरात्र कवलार्ण वादि बनारक्खे हैं तात्पर्य पुराणवालों का मत जैसा कि गरुड़वाले कहते हैं यो बहुत प्रसिद्ध है कहांतक लिखें बहुत मत हैं सांख्य न्यायशास्त्रादि वालोंका मत उसी जगह निश्चय होसक्ता है यहां तो एक नाममात्र उनका मत दिखा दिया है और नास्तिक बौद्ध चारु वाक्यादि के १८ मत तो मुख्य हैं और भी बहुत भेद हैं वे ईश्वर वेद कूं नहीं मानते कोई शून्य वादी कोई कालबादी कोई स्वभाव बादी कोई बिज्ञान वादी हैं कोई कपाली मतके हैं नानामत नास्तिकों के हैं और कठिन हैं पुराण वालोंके मतसे उनका बहुत बारीक मत है ऐसे ऐसे मत न्याय वेदान्त के पूर्व पक्षोंमें बहुत लिख रहे हैं क्योंकि वेदान्त नय्यायक उनके मतकूं खण्डन करसक्ते हैं पुराणवालों से उनका मत खण्डन नहीं होसक्ता उनकी युक्ति बहुत बारीक है और जो पाखण्ड अब कलियुग में प्रसिद्ध है उनका लिखना योग्य नहीं तात्पर्य चारवर्ण चार आश्रम और अनुलोमज प्रति लोमजादि जातिशास्त्र बिहित हैं उनसे पृथक् जिसका वेद स्मृतियों में पता न लगे सब पाषण्ड मनुष्यों के रचेहुये हैं बुद्धिमान् को बिचार लेना चाहिये अन्तर्यामी हिरण्यगर्भ विराटकूं वैदिक उपासनावाले ईश्वर कहते हैं शिव बिष्णु शक्ति सूर्य गणेशादि कूं पुराणवाले ईश्वर कहते हैं भूमया भौपाल भूत पिशाच योगिनी आपा पीपल कुदालादि अनेक हैं उनकूं प्राकृत जीव ईश्वर कहते हैं इसके पूजनेसे सृष्टिहोतीहै इस हेतुसे वे ईश्वर कहते हैं वेदोंमें और लोकमें अन्तर्य्यामी सूत्रात्मादि भेद करके विष्णु शिवादि भेद करके राम कृष्णादि भेद करके राधाबल्लभ

गोपालादि भेद करके हनूमान भैरवादि भेदकरके पाषाण मूर्त्ति-कादि भेद करके हजारों भेद ईश्वरके प्रतीत होते हैं अब बुद्धि-मान् बिचारै कौनसा ईश्वर सच्चाहै कौनसा मत सच्चा है हम सत्य कहते हैं योंहीं बिचारो कि यह सब माया है विवर्त्त बाद आभासबाद अजात बाद वेदांत शास्त्र वालों का है सोई सत्यहै और तत्वं पदों का जो एक लक्ष्यार्थ सच्चिदानन्द रूप है सोई परमेश्वर है इसीकूं ज्ञान कहते हैं योही ज्ञान मुक्ति का हेतु है ॥ इतिश्रीआनन्दाऽमृतबर्षिणीअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथनवमोऽध्यायः ॥

मू० १ देहादिके साथ तादात्म्य करके देहादि में जो अहंबुद्धि इसी कूं अज्ञान कहते हैं यो विचारो कि आत्मा तो शुद्ध १ परि-पूर्ण २ सत्य ३ चैतन्य ४ आनन्द ५ अखण्ड ६ अज ७ अमर ८ एकरस ९ और भी बहुत विशेषणहैं और अशुद्ध देह १ परि-छिन्न २ असत्य ३ जड़ ४ दुःखरूप ५ एक देशी ६ जन्मवाला ७ नाशवाला ८ नित्य एक रस नहीं रहता ९ आत्माकी और देह की जो एकता देखते हैं इससे परे और क्या अज्ञान होगा इस अज्ञान का कारण आसुरी सम्पत् है सोई दिखलाते हैं दम्भ दर्प अहंकार अपवित्र अभिमान् ईश्वरकूं न मानना क्रोध कठो-रता मूर्खता धर्म्मकी प्रवृति कूं न जानना अधर्म्म की निवृत्तिकूं न जानना असत्य बोलना जगत् कूं अपनीश्वर कहना बड़ीबड़ी कामना मनमें रखनी जो कभी पूर्ण नहो खोटेखोटे आग्रह करके सज्जनों से बैर करना गुणवानों में दोष निकालना बुद्धि तमोगुणी होनी अर्थात् हमने कथा कही थी उससे हमारीक्षती हुई शास्त्रवालों कूं पाषण्डी कहना चिन्ता ऐसी ऐसी करनीजि-सका प्रलय पर्यंत ठिकाना न लगे निश्चय यो रखना जो हम

खा पहर जावेंगे स्त्रियों के साथ आनन्द भोग जावेंगे यही मुख्य है देना नट बन्दरवालों कूं कभी किसी साधु ब्राह्मण कूं जो देता तो दम्भ अहंकार करके और उनका तिरस्कार करके हजारों आशा रूपी फांसियों में बँधे रहना अन्याय करके रुपयादि संचय करना यो मुझकूं प्राप्तहै जो प्राप्त करूंगा मेरीबराबर और कौन है धन हमारे बहुत कुटुम्ब हमारे बहुत ऐसे २ अवगुण आसुरी सम्पत् वालों कूं श्री भगवान् ने कहे फिर कहा ऐसे पुरुषों की मुक्ति तो दूर है मुक्ति का मार्ग भी उन कूं नहीं मिलेगा ये पुरुष जगत् के भ्रष्ट करनेवाले हैं ऐसों कूं हम पशुकी योनियों में फेंकेंगे वारम्बार सर्प बिच्छू कीट शूकर कूकरादि योनियोंमें जन्म लेते रहेंगे फिर कहा काम क्रोध लोभ ये तीन नरकके द्वारे हैं आत्माकूं मूढ़ योनियोंमें प्राप्त करनेवाले हैं उनकूं तो अवश्यही त्याग करना चाहिये प्रथम उनकूं त्याग करके जो पीछे मुक्ति में प्रयत्न करेगा तब सिद्ध होगा अर्जुन ने श्रीकृष्ण महाराज से प्रश्न किया। महाराज किस करके प्रेरा हुआ यो पुरुष पापकूं करताहै इच्छानहीं भी करता परन्तु ऐसा प्रतीत होताहै जैसा कोई बल करके पापमें जोड़ दे श्रीभगवान् ने कहा हे अर्जुन जो तुमने बूझा पाप करने में क्या हेतु है सो सुनो काम हेतुहै कामनाहोनेसे क्रोधहोताहै रजोगुणसे इसकी उत्पत्ति है रजोगुण के जय करने से इसका भी जय होजाताहै अनन्त है भोजन जिसका बड़ा पापी मोक्षमार्ग का बैरी काम कूं जानो जैसे धूप ने अग्नि कूं मलने दर्पण कूं जेरने गर्भकूं ढक रक्खा है ऐसे कामने विवेककूं ढक रक्खा है प्राकृतियों कूं तो यो काम भोग समय मित्र सा प्रतीत होताहै ज्ञानी कूं तो भोग समय भी दोषदृष्टि होने से बैरी दीखता है कितनाही भोग भोगो कभी तृप्ति न हो और दूनी अग्नि लगै इसकी जय का उपाय यो है यो काम इन्द्रिय मन बुद्धि में रहताहै क्योंकि बि-

षय कूं देखा सुना संकल्प बिकल्प क्रिया निश्चय किया फिर कामका आविर्भाव होजाता है सो काम बिवेक कूं आवर्ण करके आत्मा कूं मोहता है इसलिये यावत् इन्द्रिय का बिषयके साथ सम्बन्ध नहीं हुआ प्रथम मोह से बिषयों में दोषदृष्टि करके इन्द्रियों कूं रोकना फिर इन्द्रिय नहीं रुकसक्ती देह इन्द्रिय मन बुद्धिसे परे जो आत्मा उसकूं आश्रय करके इस पापी काम कूं मारा जैसा यो परमेश्वर ने अर्जुन कूं उपदेश किया ऐसाही किसी गुरुने शिष्यकूं उपदेशकिया कि हे शिष्य येकाम क्रोधादि प्रथम तो ज्ञानकी सिद्धिके लिये त्यागने योग्य हैं और ज्ञानहुये पीछे जीवन्मुक्ति के लिये त्यागने योग्यहैं शिष्य कहता है महाराज जीवन्मुक्ति मुझकूं मतहो देह पातके पीछेतो मैं बिदेह मुक्त होजाऊं गा गुरू कहते हैं जो तुमने यहां के तुच्छ पदार्थों के भोगनेके लिये जीवन्मुक्ति का अंगीकार नहीं किया तो निश्चय होताहै स्वर्गादि पदार्थों के भोगने के लिये बिदेह मुक्ति का भी अंगीकार नहीं करोगे इस हेतुसे प्रतीत होताहै तुम स्वर्ग मात्र से आपकूं कृतार्थ जानोगे फिर निश्चय आपका जन्म होवेगा जो कभी तुमने अपने मनमें यो मानाहो कि स्वर्ग क्षय अतिशय साहस्य पतन इन तीन दोषों करके त्यागना योग्य है ॥

टी० । दिन दिन प्रति अपना किया हुआ पुण्यकाम होता रहताहै इसकूं तो क्षय दोष कहतेहैं और जैसे इस लोकमें चक्रवर्त्ति राजासे लगाकर कंगाल पर्यन्त तारतम्यताहै ऐसे स्वर्ग में बिमान ऐश्वर्यादि की तारतम्यता है अपने से अधिक बिमान वाले कूं देखकर मनमें अतिशय रहता यो दूसरो दोष है और जब समस्त पुण्य नाश होताहै तब उसके गलेकी माला सूख जाती है वो तो अपने आप वहांसे नीचे गिरना नहीं चाहता परन्तु वही स्त्री जिनके साथ बिहार करता था टांग पकड़ कर उलटा डाल दिया करती है तीसरा यो साहस पतन दोषहै ॥

मु०। बिचारो कि इन तुच्छ पदार्थों में जो अनेक दोषकरके युक्त हैं श्रीभगवान् भी कहतेहैं ये शब्द स्त्री आदि भोग निश्चय दुःख के कारण हैं उनके नाश अप्राप्ति में जो दुःख हैं सोतो प्रसिद्धहैं परन्तु प्राप्ति काल में भी स्पर्द्धा निन्दा भयादि दोषों करके युक्त दुःख रूप हैं फिर उनमें दोषदृष्टि करके क्यों नहीं त्यागते जब ये तुच्छ पदार्थ न त्यागे गये स्वर्गादि के पदार्थोंकूं कैसे त्यागोगे और यो तुम्हारा इच्छा पूर्बक आचरण अनिष्ट है इस बातमें श्री सुरेश्वराचार्य जीके वाक्य कूं प्रमाण देते हैं जानाहै ब्रह्म तत्व जिसने उसका जो इच्छा पूर्बक आचरणहुआ तो कूकर पशु आदि और ज्ञानियों में क्या भेद हुआ जब धर्म कर्म शास्त्रकी आज्ञाकूं न मानकर इच्छा पूर्बक आचरण किया फिर अशुचि भोजन में किस प्रकार दोष प्रतीत होगा शिष्य कहताहै महाराज मुझकूं इतनेही मात्रसे अनिष्ट सूचनकिया गुरु उपहास पूर्बक कहतेहैं ज्ञानसे प्रथम तो तुमकूं मनमात्रके दोषों करके क्लेश था अब समस्त लोगों की निन्दा सहनी अंगीकार करते हो आपके बोधकी क्या स्तुति होसके आपके बोधका जो बैभव है सो आश्चर्य है ऐसा बोध तो हमकूं भी नहीं हुआ यो बात लोकमें प्रसिद्धहै जो काले कम्बल पर और भी छींटस्याही की पड़ जावे तो कुछनहीं प्रतीत होती परन्तु श्वेत चादरपर जो एक छींट भी और रंग की पड़जावे वो भी दूरसे चमकतीहै ऐसे ज्ञानीका जो किञ्चित् भी अन्यथा आचरण प्रतीत हो तोभी मूर्ख उस बातकूं बढ़ाकर कुछ कुछ बकने लगतेहैं यो तो उनकूंबिचारही नहीं कि जो बिधिनिषेध ब्यवहारहै यो गुणों का कार्यहै द्दष्टा उनका असंग है और जो स्वसंवेद लक्षण ज्ञानीके हैं उन कूं मूर्ख क्या जानेंगे केवल जड़भरतादि के दृष्टान्त देदे कर निन्दा करेंगे और जो उनकूं कहा बोधहै कि ये तीनों गुण सदा बिदेह मुक्त से प्रथम सबमें देवतासे लगाकर पशु पर्य्यन्त रहते

हैं किसीके थोड़े किसीके बहुत और यो सब देखना सोना खाना पीना आदि अन्तःकरण का धर्महै अन्तःकरण माया का कार्य होनेसे मिथ्या है कोई कोई तो ऐसा जानतेहैंकि अन्तरंग साधन मुख्यहै बहुत तो बहिरंग साधनोंकू प्रमाण देदेकर निन्दास्तुति करते हैं शिष्य कहताहै महाराज फिर क्या करना चाहिये गुरू कहते हैं करना क्या चाहिये यो करना चाहिये जो शूकर कूकर की बराबरता है इसकूं वमनवत् त्यागदो तुमतो विचारवान् हो जितने अन्तःकरण गत दोषहैं सबका संग त्याग करके देवताकी बराबरता अंगीकार करो तुम इन मनुष्यों करके देवताके सम पूजने के योग्यहो काम क्रोधादि में जोजो दोष दुःखहैं सबमोक्ष शास्त्रमें प्रसिद्धहैं वहांसे तलाश करके दोषदृष्टि कर कर कामनादि का त्यागकरके जीवन्मुक्ति सम्पादन करो शिष्य कहताहै महाराज मैंने अंगीकार किया कामादि का तो त्याग करूंगा परन्तु मनोराज्य करने में तो मेरीक्षती नहीं गुरू कहते हैं मनोराज्य कूं समस्त दोषों का बीज होने से श्रीभगवान् ने क्षती कहीहै उस अर्थकूं घटातेहैं बैठे बैठे मनोराज्य हुआ अमुक पदार्थ में अर्थात् स्त्रियादि में यो गुणहैं उस गुणको ध्यान करते करते उस पदार्थ में सूक्ष्म संयोग होगया संग होने के पीछे फिरअधिक कामना होगई कामना रूपी जो अग्नि उसकी शान्ति के लिये किसीके पासगये कहा हमकूं यो वस्तु चाहती है उन्होंने न दी तब क्रोध उत्पन्न हुआ अब अपने दोषकूं तो विचारतेनहीं कि यो मेरे मनोराज्य ने अनर्थ किया है उसमें दोष निकालतेहैं कहते हैं देखो कैसे पापी अधर्मात्मा जी हैं साधु ब्राह्मण की आज्ञा नहीं करते क्या धन छाती परधरके लेजावेंगे और अनेक कहने न कहने के योग्य शब्दों कूं कहते हैं और जो मनमें ताप होताहै उसके तो आप साक्षीहैं फिर क्रोधसे सम्मोह अर्थात् कार्य अकार्य के बिवेक का अभाव होगया फिर जो शास्त्र गुरुसे सुना

सब भूलगये फिर चेतना रूपी बुद्धि का नाश होगया अर्थात् फिर भी होशियार होजावें यो बुद्धि न रही फिर अपने पुरुषार्थ से भ्रष्ट होगये बिचारो मनोराज्य ने कैसो अनर्थ किया जोमनोराज्य होकर मनमें कामना आई थी तो उसमें प्रवर्त न होनाथा जो प्रवर्त भी हुये थे तो उनके न देने में जो अपमान हुआ था उसकूं सहजाना था उनकूं कुछ यद्वा तद्वा न कहनाथा जो उस समय इनूकार भी करदिया था अथवा दुर्वाक्य भी कहदिया था तो फिर सत्वगुणी वृत्तिमें काम आते जो कुछ वे दाता भी थे आगेकूं जो उनसे काम निकलता सो सब नष्टहोगया उनकूं तो क्रोधमें आकर यद्वा तद्वा कहबैठे फिर यो मुख न रहा कभी उनके समीपही जा बैठें और जो कभी उनके सत्वगुणी वृत्तिका बिशेष उदयहो और बहुत दानकरें तो आप कू कुछ नहीं मिलसक्ता सारी अवस्थाकूं तो उनसे मुरव्वत तोड़ बैठे और जिन्होंने सुना उन्होंने भी अपने आपसे मन फेर लिया बारम्बार बिचारो मनोराज्यबड़ा अनर्थ करताहै इसलिये मनोराज्यकाभी जयकरो मनोराज्य कामनाका जय करनेसे ज्ञानद्वारामुक्त होजाताहै ॥ इतिश्री आनन्दाऽमृतबर्षिणीनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ दशमोऽध्यायः ॥

प्रथम थोड़ेसे साधन जीवन्मुक्तिके लिये लिखभी आयेहैं अब और भी सुनो जिनके अनुष्ठान करने से कामादि का जयहोजाता है साधक कूं तो अभ्यास करनेसे सिद्ध होते हैं सिद्धमें स्वभाव से रहते हैं जीवन्मुक्ति के ५ प्रयोजन हैं प्रथम उनकूं लिखते हैं ॥ ज्ञानरक्षा १ तप २ बिस्मयादि का अभाव ३ दुःखों की निवृत्ति ४ सुखका आविर्भाव ५ अर्थ इनका योहै जीवन्मुक्ति के अभ्यास करनेसे संशय बिपर्य्यय का उदय नहीं होता शुक राघव अस्म-

दादिवत् अकृत उपासक कूं कदाचित् संशयादि के उदय होने के भयसे अवश्य जीवन्मुक्ति का अभ्यास करना योग्यहै श्रीभगवान् कहते हैं जिस के संशय है वो नाश होता है संशयादि का उदय न होना ज्ञान रक्षा १ चित्त की एकाग्रता तपहै सब धर्मों से श्रेष्ठहै ज्ञानी का तप लोक संग्रह के अर्थ है श्रीभगवान् कहते हैं श्रेष्ठ पुरुष जो जो आचरण करता है सोई सो और भी आचरण करते हैं संग्रह भले तीन प्रकार के हैं शिष्य १ भक्त २ तटस्थ ३ शिष्य तो गुरू के शास्त्र बिहित आचरण कूं देखदेख अधिक अधिक श्रद्धा होकर फिर उनके वाक्य में विश्वास करके मुक्त होता है १ और भक्त उनकी पूजादि करके वांछित फल कूं प्राप्त होता है * बिभूति की कामना वाला ज्ञानी का पूजन करे जिस जिस लोक की मनसे भावना करेगा और जो जो कामना चाहेगा उसी उस लोक और उसी उस कामना कूं प्राप्त होगा यो श्रुतिका अर्थ है स्मृति का भी अर्थ सुनो जो एक ब्रह्म का जाननेवाला भोजन करे तो समस्त जगत् तृप्त होता है इसलिये जो कुछ देवे योग्य है सो ब्रह्मवित् कूं देना चाहिये तटस्थ दो प्रकार का है सन्मार्गी १ असन्मार्गी २ सन्मार्गी तो ज्ञानी के आचरण कूं देख देख अपने आप सदाचार करके मुक्त होगा , असन्मार्गी जीवन्मुक्ति की दृष्टि करके सारे पापों से मुक्त होगा यहां स्मृति प्रमाणहै जिसकी अनुभव पर्यंत बुद्धि तत्व के बिषय प्रवर्तहै उसकी दृष्टिगोचर जो होगा अर्थात् कृपादृष्टि से जिसकूं वे देखेंगे वो सारे पापों से छूट जावेगा जो ज्ञानी कूं बाणी आदि करके दुःख देंगे मन करके द्वेष करेंगे वे ज्ञानीके पापकूं ग्रहण करेंगे यहां श्रुति प्रमाणहै सुहृदज्ञानी के पुण्य द्वेषी ज्ञानी के पापकूं ग्रहण करेंगे यो श्रुतिका अर्थ है २ जिस समय ज्ञानी की वहिर्मुख वृत्तिहो उस समय उसकूं कोई दुर्वाक्य बोले उसकूं सुनकर अथवा वृथा कोई मार भी

दे चित्त की वृत्ति में रागद्वेष उदय न होना इसका नाम बिसम्वाद का अभाव है ३ संसार के व्यवहार में धनके सञ्चयादि में अनेक प्रकार के दुःख और मुक्ति के लिये श्रवणादि में अनेक दुःख हैं जीवन्मुक्तके सब दुःख नाश होजाते हैं यदि आत्माकूं जानता है कि मैं योहूं फिर किसकी इच्छा करता हुआ और किस कामना के लिये शरीरकूं दुःख देयो श्रुति का अर्थ है ४ समाधि करके दूर कर दियेहैं चित्तके मल जिन्होंने और आत्मा में प्रवेशकिया है चित्त जिन्होंने उनकूं जो सुख होताहै उसकूं वाणी नहीं कहसक्ती अपने अनुभव करके जाना जाताहै योश्रुति का अर्थ है जैसे कोई १६ बर्षकी स्त्रीसे१०,११ बर्षकी लड़की बूझे कि तू सुसराल में गई थी तुझकूं पतिके संगमें क्या आनन्द हुआ जैसे वो उस आनन्दकूं अनुभव करती हुई उनकूं कम समझ जान कर हँसकर चुपहो जातीहै ऐसे ज्ञानी ब्रह्मानन्द कूं अनुभव करते हुये औरों को कम समझ जानकर मौन रहतेहैं यो सुखाविर्भाव पांचवां प्रयोजन जीवन्मुक्ति का कहा५ जीवन्मुक्ति के लिये जो अष्टांग योग कहते हैं उसकूं भी थोड़ासा सुनो योगके ८ अंगहैं यम,नियम,आसन,प्राणायाम,प्रत्याहार, धारणा,ध्यानसमाधि,अर्थ इनका पातांजलशास्त्र में भले प्रकार निश्चय होसक्ता है यहां इसलिये नहीं लिखा कि इस योग करने की सम्प्रदाय लोप होरही है बिना गुरु वो योग सिद्ध नहीं होसक्ता जिसकूं ये योग करनाहो और कोई गुरू मिले तो वहांसे उनका अर्थ निश्चय करे परन्तु और प्रकार भी उनकाअर्थ करतेहैं परिपक है चित्त जिनका वे इनका ऐसा अर्थ निश्चयकरें देहादिमें विरक्ति यम १स्वात्म तत्वमें अनुरक्ति नियम२ जैसे बैठे चलते लेटे सुख पूर्वक निरन्तर ब्रह्मका चिन्तवन होता रहे वही आसन है सुख पद्मादि आसन मन्दके लिये हैं ३ प्राणके चलते हुये अपने आप सदा योजतप होतारहै सोऽहम् सोऽहम् सोऽहम्

इसका जो अर्थ उसमें चित्तकूं स्थिर करना अर्थात् योही निश्चय रखना कि मैं ब्रह्महूं ४ श्रोत्रादि इन्द्रियों कूं शब्दादि विषयोंसे रोकना प्रत्याहार ५ बुद्धि कूं विषयों से बिमुख करना धारणा ६ जहां जहां दृष्टि जावे वहीं वहीं ब्रह्म देखना दृष्टि कूं ब्रह्ममयी करके सब जगत् कूं ब्रह्ममय देखना सो दृष्टि श्रेष्ठ है अथवा द्रष्टा दर्शन दृश्य इनका जहां बिराम हो वहीं दृष्टि करनी नासाग्र दृष्टि बालकों के लिये है ७ मैं असंग सच्चिदानन्दपरिपूर्ण निरवयव एक रसहूं इस प्रकार चित्तका समाधान करना समाधि सो दो प्रकार की है सविकल्प १ निर्विकल्प २ त्रिपुटी सहित सबिकल्प १ त्रिपुटी रहित निर्विकल्प २ निर्विकल्प समाधि करने के समय चार बिघ्न होते हैं लय १ निद्रा आजानी बिक्षेप २ बारम्बार बिषयों का अनुसन्धान होना कषाय ३ चित्त कारागादिसे तो हट आना परन्तु स्वरूपमें नपहुंचना बीचकी वृत्तिका नाम कषाय है इसीकूं स्तब्धी भावकहते हैं रसास्वाद ४ समाधी के आरम्भ समय सविकल्पका आनन्द होना कि मैं ऐसा आनन्दरूप परिपूर्णहूं यो चिन्तवन होना इस कूं रसास्वाद कहते हैं प्राणायाम आसन बिषयोंमें दोष दृष्ट्यादि करके लय बिक्षेपादि का जय करना चाहिये बशिष्ठ जी कहते हैं चित्तनाश करने के दो मार्ग हैं ज्ञान १ योग २ ये दोनोंमार्ग भगवान्नेभी गीताशास्त्रमें कहे हैं देहादि से परे आत्माकूं जानना अर्थात् असंग नित्य मुक्त अपने कूं निश्चय करना यो ज्ञान है और चित्तकी वृत्ति का निरोध करना इसका नाम योग है चित्त वृत्ति निरोध का प्रकार चार प्रकार से वशिष्ठ जीने कहाहै सदा वेदान्त शास्त्र कूं पढ़ना सुनना बिचारना १ जो ब्रह्म निष्ठ साधु हैं उनका संग करना २ समस्त बासना का त्याग करना ३ अष्टांग योग करना ४ प्रथम साधन उत्तम अधिकारी के लिये हैं जो वहां चित्तका निरोध न हो तो ये तीनउत्तरोत्तरहैं*और जो

चित्तके निरोध का प्रकार आत्मा संयमयोग नाम करके श्रीभगवान् ने गीता शास्त्र में कहाहै उसकाभी अर्थ संक्षेप करके लिखते हैं योगी मनकूं समाहितकरे अकेला एकान्तमें बैठकर भलेप्रकार जीतेहैं वश किये हैं मन इन्द्रियादि जिसने सो निराकांक्ष होकर शरीर यात्रा से सिवाय भोजन-वस्त्रादि सामग्री कूं त्याग करके पवित्रदेश में शुद्ध भूमि में अपना आसन बिछाकर वो आसन बहुत नीचा ऊंचा न हो नीचे कुशाका आसन जापर उसके मृग चर्मादि फिर ऊपर वस्त्र बिछाकर मनकूं एकाग्र करके वशकरीहै चित्त इन्द्रियों की क्रिया जिसनें सो उसपर बैठकर चित्तकी शांति के लिये अभ्यास करे चित्तके एकाग्र करने में देहकी धारणा भी उपयोगीहै उसका धारणा प्रकार लिखतेहैं देहका जो मध्यभाग है उसकूं शिर और ग्रीवा कूं सम निश्चय करके नासाग्र दृष्टि होकर पूर्वादिकूं नहीं देखता हुआ दूर होगया है भय जिसका सो ब्रह्मचारी व्रतमें स्थित होकर आत्मा में है चित्त जिसका आत्माही है परं पुरुषार्थ जिसके इस प्रकार युक्त होकर बैठे श्री भगवान् कहतेहैं जो इस प्रकारसदा मनकूंसमाहित करताहुआ निरोध हुआहै अन्तष्करण जिसका सो पराशान्ति कूं प्राप्तहोता है बहुत खानेवाले थोड़ेखानेवाले कूं भी बहुत सोनेवाले बहुत जागने वालेकूं भी योग सिद्ध नहीं होता तात्पर्य शास्त्र विहित सोना जागना बोलना चलना भोजनादि क्रिया जो नियम करके करेगा उसकूं दुःखोंका नाशकरनेवाला यो योग सिद्धहोता है किस कालमें योग सिद्ध होताहै इस अपेक्षा में कहतेहैं जिस कालमें वश किया हुआ चित्त आत्माही में निश्चय ठहरता है सब कामना जो इसलोक परलोक की हैं उनकी इच्छा नहीं करता उस कालमें जानो कि योग सिद्ध हुआ जैसे दीवा बन्द मकान में एक रस प्रकाशता है हलता नहीं ऐसे जीताहै चित्त जिसने उसका चित्त प्रकाशता और निष्कंपता करके ठहरता

है योग करके निरुद्ध हुआ चित्त जिस अवस्थामें संसार के बिषयों से उपराम हो और जिस अवस्था में शुद्ध मन करके आत्माही को देखै आत्माही में तोष करे उस अवस्था में निरतिशयसुखकूं अनुभव करता है फिर उस अवस्था में स्थित हुआ तत्व से नहीं चलता उस सुखकूं लाभ करके अपरजो ब्रह्म लोकादि के सुख उनकूं अधिक नहीं जानता उस अवस्थामें स्थित हुआ बड़ेभारी दुःख करके भी नहीं बिचलता दुःख का प्रथम किंचित् संयोग मात्र करके समस्त दुःख और बिषय सम्बन्धी दुःखों का बियोग है जिस में उसीकूं योग जानना सो योगआचार्य शास्त्रमें निश्चय करके अवश्य अभ्यास करना चाहिये दुःख बुद्धि करके प्रयत्न की जो शिथिलता उसकूं त्यागना चाहिये टिट्टीके पुरुषार्थ कूं स्मरण करना योग है जैसे कोई यो संकल्प रखता है कि मैं कुशाके अग्र भाग में जितना जल ठहरता है कुशासे इतनाही जलउठाकर समुद्रकूं सुखाऊंगा ऐसाही चित्तके निरोध करने का संकल्प रक्खे संकल्प से आविर्भाव है जिनका ऐसे योग की प्रतिकूल जो कामना उनकूं सबकूं त्याग करके और मन करके सब तरफ से इन्द्रिय ग्रामकूं रोककर धीर्यकरके शनैः शनैः अभ्यास क्रम करके उपराम हो सहसा एक बारहीजो पूर्वाऽवस्था में खाना सोना बोलना बैठनादि था उनका सबका त्यागन करे आत्मामें भले प्रकार मनकूं स्थित करके कुछ चिंतवन न करे पूर्वाऽभ्यास रजोगुण के बश में मन जो फिर चले तो प्रत्याहार करके अर्थात् जिस जिस बिषयमें मनजावै वहीं वहींसे रोक कर मन कूं बशकरे अर्थात् आत्मा के विषय स्थिर करे इस प्रकार अभ्यास करते करते रजोगुण का क्षय होने से योग सुख प्राप्त होजाताहै शान्त होगयाहै रजोगुण जिसका इसी हेतुसे शान्त है मन जिसका प्राप्त हुआ है ब्रह्म तत्त्व जिस कूं समाधि उसकूं जन्य सुख अपने आप प्राप्त होताहै ऐसेसदा

अभ्यास करते हुये योगी दूर होगये हैं पाप जिसके वो अना-
यास सुख पूर्वक ब्रह्म तत्वकूं प्राप्त होताहै फिर कृतार्थ होजाता
है सो योगी सब भूतों में अपने आत्माकूं और सब भूतोंकूं अपने
आत्मा के बिषय देखता है सारे सम दृष्टिहैं जिसके उनकूं श्री
भगवान कहतेहैं कि जो मुझकूं सर्वत्र देखताहै उसकूं मैं सदा
अपरोक्ष हूं वो मुझसे पृथक् नहीं जो मुझकूं इसप्रकार जान्ता
है जैसे उसकीइच्छा हो कर्म त्यागकरके तो याज्ञवल्क्यवत् कर्म
करता हुआ जनकवत् निषेधकर्म करताहुआ दत्तात्रेयवत् वर तो
निश्चय मुक्तहोगा वो सर्व प्रकार मेरे बिषय बर्तता है मुझसे
पृथक्कुछ नहीं जान्ता जैसे आपकूं दुःख सुख होते हैं दूसरे
के दुर्वाक्य बोलने में दुःख स्तुति करने में सुख ऐसेही अपनी
उपमा करके सबकूं सम देखे किसी कूं दुःख न दे ऐसा पुरुष
मुझकूं परंसम्वत् है यों योगका लक्षण श्रीभगवान् ने अर्जुन
कूं कहा अर्जुन इस योग कूं असम्भव मानते हुये बोलते भये हे
परमेश्वर समताकरके अर्थात् मनकी दो गति लय बिक्षेप उनकूं
जयकरके केवल आत्माकार अवस्थान करके जोजो योग आपने
कहा इस योग की दीर्घकाल जो स्थिति उसकूं नहीं देखता हूं
किस हेतुसे मनकूं चंचलहोनेसे हे कृष्णचन्द्र मनचंचलहै स्वभा-
वहीसे चपलहै प्रमथन शीलवाला इन्द्रियों कूं क्षोभकरनेवाला
बलवालाहै बिचारकरकेभी जीतनेकेयोग्यनहीं प्रतीतहोता बिषय
बासना करके अनादि का बिषयों के साथ बँधाहुआ है इसहेतुसे
दुर्भेदहै जैसे महाराज आकाशमें पवन चलताहै उसकूं घटादि
में रोकना कठिनहै ऐसे मनका निग्रह कठिनजानताहूं बशिष्ठजी
भी कहते हैं समुद्र का पान करजाना सुमेरुकूं उखाड़ लेना आदि
जो बहुत कठिन प्रतीत होते हैं सो होजाते हैं परन्तु मनका नि-
ग्रह कठिनहै इसबातकूं अंगीकारकरके मनके निग्रहका उपाय
दिखातेहुये श्रीभगवान् बोलतेभये हे अर्जुन जो तुमने कहा सो

सत्यहै मन ऐसाही है परन्तु मनकी दो गतिहैं लय१ बिक्षेप २ सो लयकूं तो अभ्यासकरके अर्थात् आत्माकार प्रत्यय वृत्तिकरके जबकरना और विक्षेप कूं वैराग्यकरके अर्थात् बिषयोंमें दोषदृष्टि करके जयकरना इन दो उपायसे निश्चय मनका निग्रह होजाता हैं अन्तःकरणकी वृत्तियों का सूक्ष्म होजाना इसीका नाम मनो निग्रह है जिन्होंने देहादि नहीं बश किये हैं उनकूं तो यो योग कठिनहै जिन्होंने अभ्यास बैराग्य करके मनकुं बश करलियाहै उनकूं यो योग इसी उपायकरके सहजहै अर्जुन बूझते हैं महाराज प्रथम तो कोई पुरुष इस योगमें श्रद्धा करके प्रबर्त हुआ परन्तु पीछे उसने भलेप्रकार प्रयत्न न किया शिथिला ऽभ्यास रहा योग से चित्त चलकर बिषय में प्रबर्त होगया तात्पर्य मन्द बैराग्य होगया अथवा अभ्यास करते करते देहका बीच में पात होगया वो पुरुष योगका फल जो ज्ञान उसकूं नहीं प्राप्त होकर किस गतिकूं प्राप्त होताहै क्योंकि कर्मों के फल कूं परमेश्वर में अर्पण करने से अथवा कर्मोंका अनुष्ठान न करने से स्वर्गादि की प्राप्ति जो फल सो तो उसकूंहोंगे नहीं ज्ञान के न होनेसे मुक्त न होगा दोनों तरफ से भ्रष्ट हुआ महाराज कहीं छिन्नाऽभ्रवत् यो वही में नाश होजाताहै हे परमेश्वर आप सर्बज्ञ हो इसका उत्तरदेसक्ते हो श्रीभगवान् बोलते भये हे अर्जुन इस लोकमें तो उसका जो दोनों मार्ग से भ्रष्ट होना है और परलोकमें जो नरक की प्राप्ति ये दोनों उसके नहीं क्योंकि अच्छा कर्म करनेवाला कोई भी दुर्गति कूं नहीं प्राप्ति होता और जो तो श्रद्धा करके योग में प्रवर्त होने से शुभकारी है फिर उसकी क्या गति होती है इस अपेक्षा में कहते हैं ब्रह्मलोकादि जो पुण्यकारी पुरुषों के भोग स्थान उनकूं प्राप्त होकर और बहुत दिन वहां के भले प्रकार भोग भोगकर जो इसलोक में पवित्र धनवाले पुरुष हैं उन के कुल में वो योग भ्रष्ट जन्म लेताहै योगति तो थोड़े अभ्यास

करनेवालेकी है और जिसके ज्ञान होनेमें कुछ थोड़ीसी देररही थी वह बुद्धिमान् ब्रह्मनिष्ठ योगियोंके कुलमें जन्म लेताहै इस लोकमें मुक्तिका हेतु होनेसे ऐसा जन्म होना बड़ा दुर्लभ है वो जो पूर्व देहमें ब्रह्मबिषय बुद्धि करके योग करताथा फिर वो दोनों कुल में से किसी कुलमें उसी योग कूं प्राप्त होजाता है फिर अधिक मुक्तिके लिये प्रयत्न करता है जो पराये बशभी होतो भी पूर्वाभ्यास उसकूं बिषयों से हटाकर ब्रह्मनिष्ठ करदेता है इस अर्थकूं कैमुतिकन्याय करके दृढ़ करते हैं ज्ञान कीइच्छावाला जोनरकुछ ज्ञान उसकूं प्राप्तनहींहुआथा और पापके बशसेयोग भ्रष्ठ भी हुआ परन्तु फिर काल पाकर जिसकी योगगति कि शब्द ब्रह्मकूं उल्लंघ कर पर्वताहै तात्पर्य वेदोंने प्रतिपादन किये जो स्वर्गादि फल उनका तिरस्कार करके उनसे अधिक फलजोब्रह्मानन्द उसकूं अनुभव करता हुआ अपने आपकूं कृतकृत्य जान्ता है और जिन्होंने जन्म जन्ममें अयत्न करके दूर कियेहैं पापफिर पिछले जन्म में सिद्ध होकर वे उसगति कूं अर्थात् ब्रह्मानन्द कूं प्राप्त होवें तो इसमें क्या कहना है॥ अब और प्रकारके बिषयों में दोषदृष्टि पूर्बक जीवन्मुक्ति के साधनसुनो संसारीलोक दो पदार्थोंकूं विशेष कहते हैं धन १ स्त्री २ प्रसिद्ध है किचोरी, हिंसा, झूठ, दम्भ, काम, क्रोध, गर्व, मद, भेद, बैर, अविश्वास, स्पर्द्धा असूया, निन्दा, छलादि अनेक अनर्थ करके धन सिद्ध होता है और उसके कमानेमें परदेशमें रहना नीचोंकी टहल करनी पराधीन रहनादि और रक्षा करनेमें चोर राजादि का भय और व्यय करने में उसके कम होनेका दुःख और नाशहोने में जो दुःख उसका लिखना क्या चाहिये सब जानते हैं तात्पर्य जिसके आदि मध्य अन्तमें क्लेशही क्लेश है ऐसे दुःखों के कारण धनकूं धिक्कारहै और जो प्राकृत जीव धनसे स्त्री मदिरा मांस द्यूत राग द्वेष अभिमान अहंकारादि ऐसे ऐसे यहां अनर्थ कर

कर नरकका सामान करते हैं वो ब्यवस्था कहांतक लिखें तात्पर्य जितने पाप, हैं सब धनसे होते हैं यो धन पापी बिद्वान् बिचारवान् से भी अनर्थ करादेताहै इस बातकी सिद्धिमें श्रुति स्मृति इतिहास युक्ति आदि बहुत प्रमाण हैं इसके त्यागका अधिक माहात्म्य शास्त्रमें लिखा है संसार समुद्र में कान्ता कांचन दो आवर्त हैं तीनों भवन इनमें भ्रम रहेहैं जो इन दोनोंसे बिरक्त हैं वो मनुष्यादि नहीं परमेश्वर है स्त्री की स्तुति सुनो चांडाल के घरकी बराबर स्त्री हैं चांडालके घरमें मलमूत्र मांसादि पड़े रहते हैं द्वारेमें चिन्हके लिये अस्थि लगे रहते हैं अस्थिकेखंभ चर्म्मकी रज्जु से बँधे रहते हैं मकान के ऊपर चर्म पड़े रहते हैं जो उसके मकान की यो ब्यवस्था है तो बिचारो कि उस मकान की जो मोरी जहां कूं उस मकान का मल जाताहै उसकी क्या उपमा देनी चाहिये बिचारो स्त्री में ये सब बस्तु हैं वा नहीं स्त्रीका शरीर मकान बस् भीतर उसके मल मूत्रादिका होना प्रसिद्ध है मुख द्वारेवत् दांत अस्थिवत् पैर हस्तादि में अस्थि खम्भवत् नाड़ियों से बँधे हुये हैं शरीर के ऊपर चर्म है वा कुछ और है मोरीवत् उस शरीर में मलमूत्र त्याग करने के रस्ते हैं देखो उनकूं ऊपर से देख २ योजीव बिना बिचार के कैसा आनन्द होताहै वृथा नरकवत् मोरी में डूबता है बिचारो इससे सिवाय और क्या नरकहोगा जो यो कहो कि हमकूं तो ये दोष नहीं फुरते बेशक हम भी जान्ते हैं कि ऐसेजीव जिनकूं बिष्ठामुरदे के मांसमें दोष नहीं फुरते उनके लिये अनेक प्रयत्न करते हैं प्राप्ति के समय अपने कूं कृत कृत्य मानते हैं हमारी दृष्टीमें वे भी तो जीवहैं कुछ यो न समझना ऐसे शूकर कूकरही होते हैं मनुष्य भी बहुत ऐसे होते हैं अब बिचारो मनुष्य शरीर में और पशु में क्या भेद हुआ हज़ारों जगे इन बातों का प्रसंग है इस प्रसंग कूं बहुत क्या लिखें बुद्धिमान् जीवन्मुक्ति

की इच्छावाला इसी प्रकार सब पदार्थों में दोष दृष्टि कर कर उनका संग न करें और वोही चांडाल के घरका दृष्टान्त अपने शरीर में घटावे अर्थात् चाण्डाल भी उस घरमें यो अध्यास नहीं करता मैं घरहूं यो अध्यास है कि मेरा घरहै ऐसे अध्यास करने से तो वो चाण्डाल है और जो देह कूं ऐसा कहते हैं कि हम देह हैं अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री आदि बर्ण ब्रह्मचारी आदि आश्रमी पण्डित धनवाले हैं बिचारो यो देह चाण्डाल के घर की बराबर है वा नहीं जब देह कूं यो कहा मैं देहहूं फिर वो कौन हुआ तात्पर्य ऐसे बिचार देहमें से अध्यासका त्याग करे भ्रमसे और पदार्थमें प्रतीत होना इसकूं अध्यास कहते हैं बासना दो प्रकार की है शुद्ध १ मलिनी २ मुक्ति के लिये शास्त्र बिहित अनुष्ठान करने की और श्रवणादि की बासना शुद्ध १ भोगोंकी बासनाऔरसंसारमें प्रसिद्धहोनेकी बासना मलिना२शुद्धबासना मुक्ति की हेतुहै मलिन बासना जन्मकी हेतुहै देह यात्राकेलिये भिक्षादि का जो प्रयत्न करना यो ज्ञानी का बासना बधका हेतु नहीं श्रीभगवान् कहते हैं जिसमें शरीरका निर्बाह होवे वोकर्म करताहुआ पापकूंनहीं प्राप्तहोता ज्ञानीने शरीर यात्रासे सिवाय और बासना का त्याग करना तीन बासना बहुत दुःख करके त्यागी जाती हैं देह बासना १ लोक बासना २ शास्त्र बासना३ शरीरकूं बहुत उपटने चंदनादि लगा लगाकर चिकना चांदना रखना और जो इच्छा रखनी कि यो शरीर सदा आरोग्य रहे यो देह बासना १ यो इच्छा रखनी कि सब लोग मुझकूं भला कहें यो लोक बासना २ शास्त्र बासना दो प्रकार की हैं एकतो बहुत पढ़ने सुनने की इच्छा रखनी अर्थात् जाने इस शास्त्र में क्या क्याहै दूसरी जो कर्म जपादि करना शास्त्र बिहित करना यों इच्छा रखनी यो शास्त्र बासना ३ इन करके युक्त जो पुरुष उसकूं ज्ञानी भी भले प्रकार नहीं होता तात्पर्य तीनों बासना

किसी पूर्ण हुई न होंगी युक्तिसे बिचार देखो वा गुरु शास्त्र से निश्चय करलो और येजो दो प्रकार हैं एकतो मनोनाश, नाश बासना क्षय १ और दूसरा सदा वेदान्त का श्रवणादि करना २ इनका अविरोध सुनो जिसकूं संशय बिपर्यय करके रहित भले प्रकार ज्ञान होगया है उसकूं तो मनोनाश बासना क्षय मुख्य है श्रवणादि गौण हैं और जिसकूं भले प्रकार ज्ञान नहीं हुआ संशय बिपर्यय हैं उसकूं श्रवणादि मुख्य है मनोनाश बासना क्षय गौड़ है मनोनाश बासना क्षय के साधन सुनो वाशिष्ठ में लिखा है जो जागता हुआ सुषुप्तिवत् रहै और जिसका जागना निर्वास न हो सोजीवन्मुक्तिहै श्रीभगवान् कहते हैं ज्ञानी सदा संतुष्टरहे मनादि कूं वशरक्खे मौन रहे मौनी के तात्पर्य कूं कोई नहीं पासक्ता बहुत लिखनेसे क्या प्रयोजन है मौनमें बहुत सुख और लाभ हैं और मैं असंग हूं योदृढ़ बिश्वास रक्खे आत्मा में अर्पित करी है मन बुद्धि जिसने जिससे लोग उद्वेगनकरें जो लोगोंसे उद्वेगन करें सोभक्त मुझकूं प्यारा है भक्त स्थित प्रज्ञ गुणातीत शब्द करके बहुत प्रकार श्रीभगवान् ने जीवन्मुक्त के लक्षण कहे हैं निस्पृही कोई नहीं आरम्भ जिसके किसीकूं नमस्कार न करनी न लेनी न किसी की निन्दास्तुति करनी समर्थ हुआ मिथ्या जानकर कर्मों का त्याग करदेना सर्पवत् बहुत पुरुषों से डरता रहे नरकवत् सन्मान से डरता रहे मुर्दवत् स्त्रियों से डरता रहे किसी स्त्री से बात न करे पहली देखी हुई कूं स्मरण न करे स्त्रियों की कथा न कहे न सुने काष्ठकी और लिखीहुई कूं भी न देखे उसकूं देवताब्राह्मण कहते हैं तात्पर्यजीवन्मुक्त कहते हैं ऐसेऐसे और भी वाक्य हैं हे युधिष्ठिर मुक्तिमें जाति कारण नहीं शम दमादि गुण कारण हैं ये शम दमादि गुण जो चाण्डालके भी होंगेतो देवता उसकूं ब्राह्मण कहते हैं जैसे स्वप्नमें प्रपञ्च प्रतीत होताहै

ऐसे जाग्रत प्रपञ्च का निश्चय करे जैसे बाजी गरके पदार्थों में बासना नहीं होती ऐसे इन पदार्थों कूं जानकर बासना न करे अपने कूं असंग जानने से और संसार की मिथ्या भाव निश्चय करने से सरीर कूं क्षण भंगुर जानने से बासना का उदय नहीं होता जिसका निर्वासन मन है उसकूं कर्म और कर्म के फल स्वर्गादि समाधान करना मनका जप करना आदि कुछ अपेक्षा नहीं आत्मानन्दसे पृथक् सब इन्द्रजालवत् हैं जब ऐसा निश्चय हुआ फिर मन की बासना कहां जावे जन्म जरा ब्याधि मृत्युमें दुःखही दुःख है फिर भी कुछ एक बार नहीं बारम्बार दुःख उनका अनुसंधान करते हुये बासना का उदय नहींहोता कुसंगके त्यागनेसे भी बासना का उदय नहीं होता ज्ञानीने किसीका संग न करना योही उनका मुक्तपदहै क्योंकि संगसे अशेष दोष होतेहैं योगरूढ़ भी कुसंग करनेसे प्रतीत होजाताहै थोड़ी सिद्धिवाला जो कुसंग से पतित होजावे तो इसमें क्या कहना है श्रीमद्भागवत में लिखाहै स्त्रीके संगी जो पुरुष हैं मुक्तिकी इच्छावाला उनका संग त्याग दे इन्द्रियों कूं शब्दादि बिषयों में प्रवर्त्त न करे बिचरे तो अकेला बिचरे यदि एकान्त में बैठकर चित्तकूं अनन्त भगवान् में जोड़े जो सर्वथा संग न त्यागा जावे तो साधुवोंका संगकरे समस्त बासना का त्यागकर देना चाहिये जो सब न त्यागी जावें तो मुक्तिकी बासना रक्खे स्त्रियोंका और स्त्री संगी पुरुषों का संग बिद्वान् दूर सेही त्यागदे एकान्त में बैठकर आलस्य कूं त्यागकरके स्वरूप का चिन्तवनकर स्त्रीका संग साक्षात् ऐसा अनर्थ नहीं करता जैसे स्त्रीके संगी का संग अनर्थ करता है दृष्टान्त यो है ज्येष्ठके महीनेमें दिनभर धूपमें चलाजावो वा खड़ारहो परन्तु मरतानहीं उस धूपकरके तपाहुआ जो रेत उसमें बैठे रहनेसे निश्चय होता है कि मरजावे इसीप्रकार सब पदार्थों की सन्निधि ऐसा अनर्थ

नहीं करती जैसा भोगी का संग अनर्थ करता है महज्जनों का संग मुक्तिका हेतुहै कामियों का संग नरक का हेतु है ऐसे ऐसे साधन करके युक्त जीव अपरोक्ष ज्ञानद्वारा निश्चयमुक्तहोजाताहै॥

दश आदमी नदी उतरे पार जाकर संख्या करी कि कोई हमसे डूबा तो नहीं जिसने संख्या करी उसने आपकूं न गिना फिर यो निश्चय करलिया कि हम दश थे एक डूबगया व आप को भूलकर रोनेलगा उस समय कोई और पुरुष वहां आगया उसने बूझा कि तुम क्यों रोते हो कहा कि हम दश पारसे उतरे थे अब नव हैं एक नदीमें डूबगया उसने जो अपने मनमें संख्या करी तो दश प्रत्यक्ष हैं उसने कहा तुम शोक मतकरो दशवां है यो वाक्य सुनकर उसको निश्चयहुआ कि दशवां डूबानहीं कहीं इसने देखाहै अपने आपकूं दशवां निश्चयनहीं किया इसकूं तो परोक्ष ज्ञान कहते हैं फिर उसने कहा कि तू मेरे सामने संख्या कर तबफिर उसने वैसेही आपसे पृथक् नवकूं गिना आपकूं न गिना उसनेकहा दशवां तूहै तब उसने जाना कि बेसंदेह दशवां मैं हूं इसकूं अपरोक्ष ज्ञान कहते हैं ऐसेही जिसने गुरू शास्त्रसे सुनकर यो निश्चयकर रक्खाहै कि कोईब्रह्महै आपकूं निश्चय नहीं किया कि मैं ब्रह्महूं इसकूं तो परोक्षज्ञान कहते हैं यो परोक्ष ज्ञान गूरू शास्त्र पूर्वक जिसकूं है सो ज्ञान बुद्धि पूर्व्वक उसके कियेहुये समस्त पापोंकूं अग्निवत् भस्म करदेताहै जब यो निश्चयहुआ कि मैंहीं ब्रह्महूं इसकूं अपरोक्ष ज्ञान कहते हैं यो अपरोक्ष ज्ञान गुरू शास्त्र पूर्वक जिसकूंहैसो ज्ञानमूला ज्ञान सहित समस्त संसारकूं दूरकर देताहै अर्थात् उसका जन्म नहीं होता वो निरतिशयानन्द कूं प्राप्त होताहै इस प्रकार परमात्मा का स्वरूप चिन्तवन करनेसे तृप्तितोनहीं होती परन्तु ग्रन्थकेबिस्तार के भयसे अलम् परिपूर्णम् परमेश्वरकूं बारम्बार नमस्कारहै कैसे वे परमेश्वर हैं जिन्होने गोपियों के बस्त्र हरे हैं ऐसे जो

श्रीकृष्णचन्द्र महाराज उनमें प्रथम दासोऽहम् यो मेरी बुद्धिथी सो महाराज नेअपने स्वभावके अनुसार मेराभी दाकार हरलिया अब सोऽहम् यो शेषबुद्धि होगई बारम्बार महाराजकूं इस हेतु से नमस्कार करताहूं किमुझकूं ऐसा निश्चय होताहै व्यतीत जन्मों में महाराज कूं कभी नमस्कार नहीं किया क्योंकि जो ये जन्म हुआ और इस जन्म में जो नमस्कार किया तो आगेकूं जन्म नहीं होवेगा स्थूलादि शरीरों के अभाव होने से नमस्कार कौन करेगा इसीलिये पिछले अपराध के क्षमा के लिये और आगेकूं नमस्कार न करना इस कृतघ्नता महादोष दूरहोने के लिये इसी जन्ममें बारम्बार नमस्कार करताहूं श्रीकृष्णचन्द्राय नमोनमः३ जिसकी देवता में परम भक्ति और जैसी देवता में वैसेही गुरू में है उस आत्माकूं कहे हुये ये अर्थ प्रकाश होंगे अन्यकूं नहीं होंगे यो श्रुतिका अर्थहै श्रीमत्परम हंस परिब्राज स्वामी मलूक गिरि जी महाराज उनके चरण कमलों का पूजनेवाला अनुचर शिष्य आनन्दगिरि नामने यो ग्रन्थ आनन्दामृत बर्षिणी मुन्शी बंशीधर जी जिनके किञ्चित् गुण प्रथम अध्याय मे लिखे हैं उनकूं सुख पूर्वक ब्रह्मतत्व जानने के लिये उनकी श्रद्धा भक्ति पूर्वक प्रार्थना से अति सुगम अति पवित्र अति गुप्त सब बिद्या धर्मोंमें श्रेष्ठ जो इसमें ब्रह्मतत्व सो सुख पूर्वक जानाजावे प्रत्यक्ष फलहै जिसमें सो आज द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया रबिबार सम्बत् उन्नीस सौ पन्द्रह १९१५ में विनिर्मित करके समाप्त किया पढ़ने सुननेवालोंकूं शान्तिहो शुभहो हरिः ओम् तत्सत् हरिः ओं तत्सत् हरिः ओं तत्सत् श्री कृष्ण चन्द्राय नमोनमः इतिश्रीआनन्दाऽमृत बर्षिणी दशमो ध्यायः॥ १० ॥ समाप्तम्॥

अपारसंसारसमुद्रमध्येनिमज्जतोमेशरणंकिमस्ति॥ गुरोकृपालोकृपयावदैतद्विश्वेशपादाम्बुजदीर्घनौका १ बद्धोहिकोयो

विषयानुरागः कोवाविमुक्तोविषयेविरक्तः ॥ कोवास्तिघोरोनरकः
स्वदेहस्तृष्णाक्षयःस्वर्गपदंकिमस्ति २ संसारहृत्कस्तुनिजात्म
बोधःकोमोक्षहेतुःप्रथितःसएव ॥ द्वारंकिमेकंनरकस्यनारीकास्वर्ग
दाप्राणभृतामहिंसा ३ शेतेसुखंकस्तुसमाधिनिष्ठो जागर्त्तिकोवा
सदसद्विवेकी ॥ केशत्रवःसन्तिनिजेन्द्रियाणिकान्येवमित्राणिजिता
नितानि ४ कोवादरिद्रोहिविशालतृष्णः श्रीमांश्चकोयस्यसम
स्ततोषः ॥ जीवन्मृतःकस्तुनिरुद्यमोयः कावास्मृतास्यात्सुखदा
दुराशा ५ पाशोहिकोयोममताभिधानंसंमोहयत्येवसुरेवकास्त्री ॥
कोवामहांधोमदनातुरोयोमृत्युश्चकोवापयसःस्वकीयं६ कोवागुरु
र्योहिहितोपदेष्टाशिष्यस्तुकोयोगुरुभक्तएव ॥ कोदीर्घरोगोभवएव
साधोकिमौषधंतस्यविचारएव ७ किंभूषणाद्भूषणमस्तिशीलंतीर्थंप
रंकिंस्वमनोविशुद्धं ॥ किमत्रहेयंकनकंचकान्तासेव्यंसदाकिंगुरुवे
दवाक्यं ८ केहेतवाब्रह्मगतेस्तुसन्तिसत्सङ्गतिर्दांतिविचारतोषाः ॥
केसन्तिसन्तोखिलवीतरागाअपास्तमोहाःशिवतत्वनिष्ठाः ९ को
वाज्वरःप्राणभृतांहिचिन्तामूर्खोऽस्तिकोयस्तुविवेकहीनः ॥ कार्या
प्रियाकाशिवविष्णुभक्तिःकिंजीवनंदोषविवर्जितंयत् १० विद्या
हिकाब्रह्मगतिप्रदायाबोधोऽस्तिकोयस्तुविमुक्तहेतुः ॥ कोलाभआ
त्मावगमोहियोवैजितंजगत्केनमनोहियेन ११ शूरान्महाशूरतरो-
ऽस्तिकोवामनोजबाणैर्व्यथितोनयस्तु ॥ प्राज्ञोऽस्तिधीरश्चसमोऽ
स्तिकोवाप्राप्तोनमोहंललनाकटाक्षैः १२ विषाद्विषंकिंविषयाःस
मस्ताःदुःखीसदाकोविषयानुरागी ॥ धन्योऽस्तिकोयस्तुपरोपका-
रीकःपूजनीयोननुतत्वनिष्ठः १३ सर्वास्ववस्थास्वपिकंनकार्यंकिं
वाविधेयंविदुषाप्रयत्नात् ॥ स्नेहंचपापंपठनंचधर्मःसंसारमूलंहि
किमस्यविद्या १४ विज्ञान्महाविज्ञतमोऽस्तिकोवानार्यापिश
च्यानचवंचितोयः ॥ काशृंखलाप्राणभृतांहिनारीदिव्यंव्रतंकिञ्च-
निरस्तदैन्यं १५ ज्ञातुंनशक्यंहिकिमस्तिशैवैर्योषिन्मनोयच्च
रितंतदीयं ॥ कादुस्त्यजासर्वजनैर्दुराशाविद्याविहीनःपशुरस्ति

कोवा १६ वासोनसंगःसहकैर्विधेयोमूर्खैश्चपापैश्चखलैश्चनी-
चैः ॥ मुमुक्षुणाकिंत्वरितंविधेयंसत्संगतिर्निर्ममतेशभक्तिः १७
लघुत्वमूलंचकिमर्थितैवगुरुत्ववीजंयदयाचनंकिं ॥ जातोस्तिको
यस्तुपुनर्नजन्मकोवामृतोयस्यपुनर्नमृत्युः १८ मूकस्तुकोवाव
धिरश्चकोवा युक्तंनवक्तुंसमयेसमर्थः ॥ तथ्यंसुपथ्यंनशृणोति
वाक्यंविश्वासपात्रंनकिमस्तिनारी १९ तत्त्वंकिमेकंशिवमद्वितीयं
किमुत्तमंसच्चरितंवदन्ति ॥ किंकर्मकृत्वानहिशोचनीयंकामारि
कंसारिसमर्चनाख्यं २० शत्रोर्महाशत्रुतमोऽस्तिकोवाकामःसको
पानृतलोभतृष्णाः ॥ नपूर्यतेकोविषयैःसएवकिंदुःखमूलंममताभि
धानम् २१ किंमण्डनंसाक्षरतामुखस्यसत्यंचकिंभूतहितंतदेव ॥
सत्यासुखंकिंस्त्रियमेवसम्यक्देयंपरंकिंत्वभयंसदैव २२ कस्या
स्तिनाशेमनसोहिमोक्षःक्वसर्वथानास्तिभयंविमुक्तौ ॥ शल्यंपरं
किंनिजमूर्खतैवकेकेह्युपास्यागुरवश्चवृद्धाः २३ उपस्थितेप्राण
हरेकृतांतेकिमाशुकार्यंसुधियाप्रयत्नात् ॥ वाक्कायचित्तैःसुखदंयम
घ्नंमुरारिपादाम्बुजमेवचिंत्यं २४ केदस्यवःसन्तिकुवासनाख्याः
कःशोभतेयःसदसिप्रविद्यः ॥ मातेवकायासुखदासुविद्याकिमेधते
दानवशात्सुविद्या २५ कुतोहिभीतिःसततंविधेयालोकापवादा
द्भवकाननाच्च ॥ कोवास्तिवंधुःपितरौचकोवाविपत्सहायौपरिपा
लकौयौ २६ वुद्ध्वानवोद्धुंपरिशिष्यतेकिंशिवंप्रशांतंसुखवोधरू
पं॥ ज्ञातेतुकस्मिन्विदितंजगत्स्यात्सर्वात्मकेब्रह्मणिपूर्णरूपे२७
किंदुर्लभंसद्गुरुरस्तिलोकेसत्संगतिर्ब्रह्मविचारणंच ॥ त्यागोहिसर्व
स्यशिवात्मवोधःकिंदुर्जयंसर्वजनैर्मनोजः २८ पशोःपशुःकोनकरो
तिधर्मंप्राधीतशास्त्रोपिनचात्मवोधः ॥ किंतद्विषंभातिसुधोपमंस्त्री
केशत्रवोमित्रवदात्मजाद्याः २९ विद्युच्चलंकिंधनयौवनायुर्दानंपरं
किंचसुपात्रदत्तम् ॥ कण्ठंगतैरप्यसुभिर्नकार्य्यंकिंकिंविधेयंमलि
नंशिवार्चा ३० किंकर्मयत्प्रीतिकरंमुरारेःक्वस्थानकार्य्यंसततंभ
वाब्धौ ॥ अहर्निशंकिंपरिचिंतनीयंसंसारमिथ्यात्वशिवात्मतत्त्व

म्र ३१ कंठंगतावाश्रवणांगतावाप्रश्नोत्तराख्यामणिरत्नमाला ॥
तनोतुमोदंविदुषांसुरम्यारमेशगौरीशकथेवसद्यः ३२ ॥

इत्यानन्दामृतवर्षिणीसमाप्ता ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
नाटक	जगद्विनोद	अवधयात्रा	**वैद्यक भाषा**
	शृंगारबत्तीसी	भरतरीगीत	
प्रबोधचन्द्रोदय	**किस्सा वगैरह**	दानलीला व नागली०	निघण्ट
रामाभिषेक		दोहावली व रत्नावली	अमरविनोद
आनन्दरघुनन्दन	नानार्थनौसंग्रहावली	गोकर्णमाहात्म्य	वैद्यजीवन
भ्रमजालनाटक	ब्रह्मसार	श्रीगोपालसहस्रनाम	औषधिसंग्रह कल्प-
हनूनाटक	शिवसिंहसरोज	कथासत्यनारायण स०	वल्ली
काव्य	भक्तमाल	हनुमानबाहुक	अमृतसागर बड़ा व छो०
	इंद्रसभा	जनकपच्चीसी	रसायनप्रकाश
सूरसागर	विक्रमविलास	हरिहरसगुणनिर्गुण	वैद्यमनोत्सव
कृष्णसागर	बैतालपच्चीसी	पदावली	दिल्लगन
विश्रामसागर	सिंहासनबत्तीसी	वनयात्रा	इलाजुलगुर्बा
प्रेमसागर	पद्मावतीखण्ड	कायस्थवर्णनिर्णय	**ज्योतिष भाषा**
व्रजविलास बड़ा व छोटा	शुकबहत्तरी	विहारवृन्दावन	
कृष्णक्रिया	बकावलीसुमन	समरविहारवृन्दावन	जातकचन्द्रिका
विजयमुक्तावली	चहारदरवेश	कल्पभाष्य	जातकालंकार
अनेकार्थ	किस्साहातमताई	लक्ष्मीसरस्वतीसंवाद	दैवज्ञाभरण
छन्दार्णवपिंगल	अपूर्वकथा	**दरसी**	ज्ञानस्वरोदय
रसराज	किस्सागुलसनोवर		रमलसार
सतसई मूल व सटीक	सहस्ररजनीचरित्र	अक्षरावली	रमलनौरत्न
सभाविलास	राबिन्सनका इतिहास	स्वयंबोध	इन्द्रजाल
युगुलविलास	सीताहरण	ज्ञानचालीसी	**संस्कृत की पुस्तकें**
तुलसी शब्दार्थप्रकाश	सती बिलास	दोहावली	
भजनावली	किस्सा मर्दऔरत	बालाबोध	लघुकौमुदी
प्रेमरत्न	संगीतप्रह्लाद	विद्यार्थीकीप्रथमपुस्त०	सिद्धान्तचन्द्रिका
चित्रचन्द्रिका	**मुतफ़र्कात**	किताबजंत्री	भाषातत्त्वप्रकाश
बारहमासा बलदेव प्र०		गणितकामधेनु	पंचमहायज्ञ
मनोहरलहरी	शनिश्चरकीकथा	लीलावती	निर्णयसिन्धु
गंगालहरी	ज्ञानमाला	पटवारियोंकीपुस्तक	कर्म्मविपाक
यमुनालहरी	गोपीचंदभरतरी	४ भाग	संग्रहशिरोमणि
पीयूषलहरी	कथाश्रीगंगाजी	धर्म्मपत्र	भगवद्गीतापंचरत्न

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
दुर्गापाठ मूल व सटीक	भगवद्गीता टीका ह०	धर्म्मसिंह का वृत्तान्त	अंकप्रकाश
विष्णु भागवत	भगवद्गीता टी० ब्रा०	शिक्षावली	गणित प्रकाश १ भाग
अपराधभंजनस्तोत्र	गीतगोविंद	शिशुबोध	तथा २ भाग व ३ व ४ भा-
कायस्थकुलभास्कर	कथा सत्यनारायण	पत्रहितैषिणी	गणित क्रिया
कायस्थ धर्म्मनिरूपण	परमार्थसार	पत्रदीपिका	क्षेत्रप्रकाश
तथा छोटा	शार्ङ्गधर संहिता	विद्याचक्र	क्षेत्र चन्द्रिका २ भाग
मथुरासभा	पाराशरी सटीक	विद्यांकुर	सकील दायरा
ज्योतिष	शीघ्रबोध सटीक	पदार्थविद्यासार	रेखागणित १ व २ भा-
	लघुजातक	पदार्थज्ञानविटप	बीजगणित १ व २ भाग
मुहूर्त्तगणपति	षट्पञ्चाशिका	भोजप्रबन्धसार	रामायण तुलसीकृत
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	सामुद्रिक	राजनीति	सातों काण्ड
मुहूर्त्तचिंतामणि सटी०	गरुड़ पुराण	भाषा लघुव्याकरण १ भा	१-बालकाण्ड
मुहूर्त्तदीपक	रामविवाहोत्सव	तथा २ भाग	२-अयोध्याकाण्ड
बृहज्जातक स०	**सरिश्ते तालीम की**	भाषा तत्वदीपिका	३-आरण्यकाण्ड
जातकालंकार	**पुस्तकें**	भाषा चन्द्रोदय	४-किष्किन्धाकाण्ड
जातकाभरण	**संस्कृत**	भूगोल तत्व	५-सुन्दरकाण्ड
मुहूर्त्तमार्तण्ड	ऋजुपाठ १ भाग	भूगोल दर्पण	६-लंकाकाण्ड
होरामकरंद	तथा २ भाग	इतिहासतिमिरनाशक	७-उत्तरकाण्ड
संस्कृत उर्दू टीका	तथा ३ भाग	१ भाग	अरिथमेटिक १ व २ व ३
	भास्वर्णव	तथा २ भाग	भाग
मनुस्मृति	**नागरी कैथी**	तथा ३ भाग	गुटका १ व २ व ३ भाग
विष्णुहारीत		अवधदेशीय भूगोल	हिदायतनामा मुदर्रि-
महिम्नस्तोत्र	वर्णमाला १ व २ भाग	इंग्लिस्तान का इतिहास	सान्
व्रतार्क		भारतवर्षीय इतिहास	पशुचिकित्सा
याज्ञवल्क्य स्मृति	**तथा कैथी फ़ारसी**	हितोपत्रिका	पट्टा बरवत कैथी
	नागरी	बालाभूषण	तथा क़बूलियत
संस्कृत भाषा टी०	हुरूफ़ मुफ़रदात	पद्यसंग्रह	रजिस्टर दाखिल खारि-
अमरकोष तीनों काण्ड	अक्षरारम्भ	भाषा काव्यसंग्रह	ज तुल्बा मदर्सा
याज्ञवल्क्य स्मृति	वर्णप्रकाश का १ भाग	कवित्तरत्नाकर १ भाग	रजिस्टर हाज़िरी पाठ-
सन्ध्यापद्धति	तथा २ भाग	तथा २ भाग	शाला
व्रतार्क	सूरजपुर की कहानी	मंगलकोश	